



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I
PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 27]

नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 9, 2013/माघ 20, 1934

No. 27]

NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 9, 2013/MAGHA 20, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 फरवरी, 2013

अंतिम जांच परिणाम

विषय : तुर्की और रूस के मूल के अथवा वहां से निर्यातित डाइ-सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी शुल्क जांच के अंतिम जांच-परिणाम से संबंधित ।

सं. 14/3/2011-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसके अंतर्गत बने सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए ;

क. मामले की पृष्ठभूमि :

1. यतः, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) को घरेलू उद्योग, नामतः, मै. निरमा लिमिटेड, भावनगर, गुजरात; मै. सौराष्ट्र कैमिकल्स लिमिटेड पोरबंदर, गुजरात; मै. गुजरात हैवी कैमिकल्स लिमिटेड, नोएडा और मै. डी. सी. डब्ल्यू लिमिटेड, मुम्बई की ओर से अल्कलाय मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एएमएआई) से तुर्की और रूस (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सोडा ऐश (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के कथित पाटन के संबंध में, समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और उसके अंतर्गत बने, समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिन्हें एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है ।

2. यतः, प्राधिकारी ने, घरेलू उद्योग की ओर से, आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर सम्बद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के आयात के संबंध में तथा कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और उसके प्रभाव का निर्धारण करने और पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने पर विचार करने के लिए नियमावली के उपनियम 6(1) के अनुसार पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया था जिसे दिनांक 10 फरवरी, 2012 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।

ख. प्रक्रिया

3. उक्त जांच में अधोलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया था:

- i. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार जांच प्रारंभ करने से पहले, आवेदन प्राप्त होने की सूचना सम्बद्ध देशों के भारत स्थित राजदूतावासों को अधिसूचित कर दी थी।
- ii. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी जांच प्रारंभ करते हुए दिनांक 10 फरवरी, 2012 का एक सार्वजनिक नोटिस, जिसे भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित किया गया था, जारी किया।
- iii. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध कराया गया था) तथा उद्योग एसोसिएशनों को भेजी और उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार अपने विचार लिखित में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया।
- iv. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं (जिनका विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को अग्रेषित की और उन्हें सुझाव दिया कि वे इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करें।
- v. प्राधिकरण ने आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देशों के भारत स्थित राजदूतावासों को उपलब्ध कराई। आवेदन की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, जहां इसके लिए अनुरोध किया गया, भी प्रदान कराई गई।
- vi. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना उपलब्ध कराने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावलियां भेजी:

- क. ए.एस किम्या सनायी वी टिकारेट लिमि. एस टी आई
- ख. बीका यापी मुहेण्डिस्तिक
- ग. ब्राक डिस टिकारेट लिमिटेड एस टी आई
- घ. एच आर टी कम्पनी
- ड. जीयिन कैम
- च. कोरुमा
- छ. कजारिवतलात इहराकैट सैन टिक लिमिटेड एस टी आई
- ज. एएस किम्या सनायी वी टिकारेट लिमिटेड एस टी आई
- झ. आर एच डब्ल्यू एल किम्या सैन टिक लिमिटेड एस टी आई
- ञ. माया पेट्रोल
- ट. कनास कैमिकल इंडस्ट्री एंड ट्रेड इंक
- ठ. लान्जेरकेम
- ड. माइरा इंटरनेशनल ट्रेड
- ढ. बेन्टोनाइट ट्रेड कम्पनी
- ण. सिस्कैम
- त. इ टी आई माइन वर्क्स जनरल मैनेजमेंट

vii. जांच शुरुआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में, संबद्ध देशों के निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्धारित प्रपत्र में निर्यातकों की प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया।

- क. इस्तानबुल किमयेवी मैडडेलेर वी मामुल्लेरी इहराकाटसिलारी बिलिंगी, तुर्की
- ख. सोडा सनायी ए.एस तुर्की
- ग. ई टी आई सोडा तुर्की
- घ. मै. विन्काम कमोडिटीज लिमिटेड यू.के.

viii. संबद्ध वस्तु के भारत में निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने की मांग करते हुए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अंतर्गत आयातक प्रश्नावली भेजी:

- क. गुजरात गार्डियन लिमि.
- ख. एडवान्स सरफैक्टैण्ट्स इंडिया लिमिटेड
- ग. फ्लोट ग्लास इंडिया लिमिटेड
- घ. ए आर स्टैनकैम प्रा. लिमिटेड
- ड. एलेम्बिक ग्लास इंडस्ट्रीज लिमिटेड

- च. हिन्द सिलिकेट्स प्रा. लिमिटेड
 छ. दीपक नाइट्राइट लिमिटेड
 ज. टौरस कैमिकल्स (प्रा.) लिमिटेड
 झ. हिन्दुस्तान नेशनल ग्लास एंड इंडस्ट्री लिमिटेड
 ञ. किशोरसन्स डिटरजेन्ट्स प्रा. लिमिटेड
 ट. हिन्दुस्तान यूनीलीवर लिमिटेड
 ठ. जे.जे.पटेल इंडस्ट्रीज
 ड. प्राक्टर एंड गैम्बल हायजीन एंड हेल्थ केअर
 ढ. श्री राम भारत कैमिकल्स एंड डिटरजेन्ट्स (प्रा.) लिमिटेड
 ण. अलब्राइट मोरारजी एंड पंडित लिमिटेड
 त. माडर्न ग्लास इंडस्ट्रीज
 थ. एडवाटेक इंडस्ट्रीज प्रा. लिमिटेड
 द. आदर्श कांच उद्योग (प्रा.) लिमिटेड
 ध. सेण्ट गोबेन ग्लास लिमिटेड
 न. एडवान्स लैम्प कम्पोनेन्ट एंड टेबी वेअर्स प्रा. लिमिटेड
 प. यू.पी.ग्लास मैन्यूफैक्चर सिण्डीकेट
 फ. प्रगति ग्लास प्रा. लिमिटेड
 व. असाही इंडिया ग्लास लिमिटेड
 भ. गोरामल हरी राम लिमिटेड
 म. फेना (प्रा.) लिमिटेड
 य. रोहित सरफैक्टैन्स (प्रा.) लिमिटेड
 कक. श्री यूनीकान आर्गेनिक्स प्रा. लिमिटेड
 खख. अस्ट्राल ग्लास प्रा. लिमिटेड
 गग. पोलाची चैम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री
 घघ. बी डी जे ग्लास इंडस्ट्रीज प्रा. लिमिटेड
 ड.ड. वसुन्धरा रसायन लिमिटेड
 च.च. पावर सोप लिमिटेड
 छ.छ. श्री हरि इंडस्ट्रीज
 ज.ज. शांति नाथ डिटर्जेन्ट्स (प्रा.) लिमिटेड
 झ.झ. हिन्दुस्तान नेशनल ग्लास एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 ञ.ञ. एडवान्स होम एंड पर्सनल केअर लिमिटेड
 ट.ट. जगतजीत इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 ठ.ठ. एस कुमार डिटर्जेन्ट्स प्रा. लिमिटेड
 डड. एडवान्स सरफैक्टैन्ट्स इंडिया लिमिटेड

ix. भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं से निर्धारित प्रपत्र में आयातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ:

- क. दि आल इंडिया ग्लास मैन्यूफैक्चरर्स फेडरेशन
- ख. हिन्दुस्तान नेशनल ग्लास एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड
- ग. एचएनजी फ्लोट ग्लास लिमिटेड
- घ. पीरामल ग्लास लिमिटेड
- ड. एजी आई ग्लासपैक
- च. हिन्दुस्तान यूनीलीवर लिमिटेड
- छ. डिटर्जेंट मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन आफ इंडिया
- ज. गुजरात गार्डियन लिमिटेड

x. प्राधिकारी द्वारा विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा गया।

xi. आवेदक द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर संबद्ध वस्तु की लागत का निर्धारण किया गया ताकि यह आकलन किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

xii. यह जांच 1 जुलाई, 2010 से 30 सितम्बर, 2011 जांचावधि (पीओआई) की अवधि के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2008 से मार्च, 2009, अप्रैल, 2009- मार्च, 2010, अप्रैल, 2010 से मार्च, 2011 की अवधि और जांच की अवधि को शामिल किया गया।

xiii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए दिनांक 03.01.2013 को मौखिक सुनवाई का आयोजन किया। सुनवाई के समय उपस्थित हितबद्ध पक्षकारों को यह सुझाव दिया गया कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित में भी फाइल करें और उन्हें अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अभिव्यक्त विचारों के प्रति प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया गया। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित प्रस्तुतिकरणों और प्रति-प्रत्युत्तरों पर संगत समझी गई सीमा तक विचार किया गया।

xiv. उन अनिवार्य तथ्यों से युक्त, जो अंतिम निष्कर्ष के लिए आधार बनेंगे, एक प्रकटन विवरण दिनांक 06.02.2013 को जारी किया गया।

xv. सार्वजनिक सुनवाई के बाद और प्रकटन विवरण के उपरांत हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों, जिन्हें प्राधिकारी ने संगत समझा, का इस अंतिम जांच निष्कर्ष अधिसूचना में निराकरण कर दिया गया है।

xvi. ***इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई जानकारी का प्रतिनिधित्व भी है और इसलिए उस पर प्राधिकारी ने नियमों के अंतर्गत विचार किया है।

xvii. जांच अवधि के लिए अपनाई गई विनिमय दर 1 अमरीकी डालर= 45.87 रुपया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

4. जांच की कार्यवाही के दौरान विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) और समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए:

i. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद डाइसोडियम कार्बोनेट है जिसे सामान्यतः सोडा ऐश के रूप में जाना जाता है। सोडा ऐश का उत्पादन सिन्थेटिक रूट और प्राकृतिक रूट दोनों तरह से किया जा सकता है। वर्तमान याचिका में सोडा ऐश के सभी प्रकारों एवं किस्मों को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त यह दो रूप विधानों अर्थात् सोडा ऐश लाइट और सोडा ऐश सघन में उत्पादित किया जाता है।

ii. सोडा ऐश के ये दोनों रूप, समान मर्दे हैं। इस मुद्दे की प्राधिकारी द्वारा चीन के विरुद्ध एक जांच में दिए गए निष्कर्ष में भी जांच की गई थी। प्राधिकारी ने दोनों ग्रेडों को एकल उत्पाद के रूप में माना था। लाइट और सघन सोडा ऐश स्पष्टतः एक ही उत्पाद बनते हैं। प्राधिकारी ने सम्बद्ध वस्तु के संबंध में विगत जांच में भी समान विचार धारित किए थे।

उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

5. जांच की कार्यवाही के दौरान विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के संबंध में उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए:

i. सघन सोडा ऐश और लाइट सोडा ऐश समान वस्तुएं नहीं हैं क्योंकि इनके घनत्व में भारी अंतर है।

ii. उनकी उत्पादन प्रक्रिया, भंडारण, प्रयोग तथा कार्य अलग-अलग हैं। इन उत्पादों का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता है।

iii. उनके तकनीकी विनिर्देशन और प्रशुल्क वर्गीकरण भी अलग-अलग हैं।

iv. आयात सांख्यिकी में सोडियम बायोकारबोनेट तथा बेकिंग सोडा से संबंधित लेनदेन भी शामिल है। यदि बेकिंग सोडा को विचाराधीन उत्पाद का एक भाग माना जाता है तो वर्तमान

जांच प्रारंभ करना कानूनन अवैध होगा क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका अधूरी एवं गलत है। दूसरी ओर, यदि बेकिंग सोडा को विचाराधीन उत्पाद का एक भाग नहीं माना जाता है तो घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराई गई आयात सांख्यिकी तथा परिणामी क्षति विश्लेषण का भी कोई मूल्य नहीं रह जाता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

6. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पादन डाइसोडियम कारबोनेट है, जिसे सोडा ऐश के रूप में जाना जाता है, उसका रासायनिक फारमूला एन ए2 सी ओ3 है। सोडा ऐश का उत्पादन दो रूपों में होता है- लाइट सोडा ऐश और सघन सोडा ऐश। दोनों प्रकार के सोडा ऐश में अंतर इनके घनत्व में होता है। इसके अतिरिक्त, इसे सिन्थेटिक रूट और प्राकृतिक रूट, जिसे विलयन प्रक्रिया कहते हैं, द्वारा उत्पादित किया जा सकता है। वर्तमान जांच में सोडा ऐश के सभी प्रकारों का शामिल किया गया है।

7. सोडा ऐश डिटर्जेंट्स, सोप्स, सफाई के संघटक, सोडियम आधारित रसायन, फ्लोट ग्लास, कंटेनर, स्पेशियलिटी ग्लासेस, सिलिकेट्स तथा अन्य औद्योगिक रसायनों का विनिर्माण करने के लिए एक अनिवार्य संघटक है। इसका टैक्सटाइल्स, कागज, मेटलर्जिकल इंडस्ट्रीज और गैर-लवणीकरण संयंत्रों में भी व्यापक प्रयोग किया जाता है। सोडा ऐश को सीमा शुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 28 के अंतर्गत उप शीर्षक सं. 2836.20 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। तथापि, सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतक है और यह वर्तमान जांच के दायरे में किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

8. हितबद्ध पक्षकारों ने यह प्रस्तुतिकरण किया है कि लाइट एवं सघन सोडा ऐश बल्क घनत्व की भिन्नता के कारण भिन्न उत्पाद हैं और ग्राहकों द्वारा इनका प्रयोग एक एक दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि दोनों ग्रेडों की लागत और कीमत भी अलग-अलग हैं। प्राधिकारी ने केन्या, यू एस ए आदि से सम्बद्ध वस्तु के आयातों के सम्बंध में की गई पाटनरोधी जांच में यह पाया कि लाइट एवं सघन सोडा ऐश के बीच लागत एवं कीमत का अंतर नगण्य ही है और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी यह दर्शाती है कि लाइट सोडा ऐश का प्रयोग डिटरजेंट सेक्टर में इसके सामान्य उपयोग के अलावा सोडियम लवणों, ग्लास, सोडियम सिलिकेट्स, बाई-क्रोमेट, बाई-कारबोनेट्स आदि के विनिर्माण में किया जा सकता है। इसी तरह, हालांकि सघनीकृत सोडा ऐश का उपयोग मुख्यतः ग्लास विनिर्माण के लिए किया जाता है, तथापि इसका प्रयोग डिटर्जेंट्स, सिलिकेट्स, अल्ट्रामेरीन, बाइक्रोमेट आदि का विनिर्माण करने के लिए भी किया जा सकता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि सोडा ऐश के दोनों ग्रेड, जिनके कई समान उपयोग हैं,

तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं तथा इस कारण वे विचाराधीन उत्पाद का एक भाग बनते हैं। प्राधिकारी पुनः यह नोट करते हैं कि लाइट एवं सघनीकृत सोडा ऐश में अंतर, केवल इनके घनत्व में भारी अंतर के कारण है परन्तु लाइट एवं सघनीकृत सोडा ऐश दोनों के उत्पाद के गुणधर्म, उत्पादन प्रक्रिया, विनिर्माण टेक्नालोजी, कच्चा माल, मानव शक्ति, कार्य एवं उपयोग, सीमा शुल्क वर्गीकरण और कीमत निर्धारण एक समान हैं, यद्यपि सघनीकृत सोडा ऐश का विनिर्माण करने के लिए अतिरिक्त उपकरणों का प्रतिष्ठापन करना अपेक्षित होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि कुछ अंतिम अनुप्रयोगों को विशेष रूप से लाइट या सघनीकृत सोडा ऐश की जरूरत होती है फिर भी भारी घनत्व अथवा कुछ उपभोक्ताओं द्वारा लाइट एवं सघनीकृत सोडा ऐश का एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग करने में अक्षमता से यह सिद्ध नहीं हो जाता है कि दोनों असमान मर्दे हैं। यह दोनों एक समान उत्पाद के दो रूप हैं।

9. पाटनरोधी नियमावली का नियम 2(घ) समान वस्तु को निम्नवत परिभाषित करता है।

“समान वस्तु” का आशय उस वस्तु से जो भारत में पाटित की जा रही जांचाधीन वस्तु के सभी तरह से समान या समरूप हो या ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य वस्तु जो यद्यपि सभी तरह से समान न हो फिर भी उसके गुणधर्म जांचाधीन वस्तु के निकटतम समान हों।

10. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध देशों से आयातित वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु और सम्बद्ध देशों से आयातित सम्बद्ध वस्तु अपने गुण धर्मों जैसे भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया एवं तकनीक, कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के रूप में तुलनीय हैं।

11. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध देशों से निर्यातित वस्तु में कोई अंतर नहीं है। यद्यपि उत्पादन का उत्पाद तुर्की में अलग ढंग से किया जाता है फिर भी भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध देशों से आयातित सम्बद्ध वस्तु तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इन वस्तुओं का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं। अतः, प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि याचिकाकर्ता कम्पनियों द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु और सम्बद्ध देशों से आयातित सम्बद्ध वस्तु दोनों को, पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, समान वस्तु माना जाए।

12. प्राकृतिक और सिन्थेटिक सोडा ऐश के सम्बन्ध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्राकृतिक एवं सिन्थेटिक सोडा ऐश में इसके उत्पाद गुणधर्मों, कार्यों एवं प्रयोग, सीमा शुल्क वर्गीकरण तथा कीमत निर्धारण आदि के रूप में कोई अंतर नहीं है। केवल अंतर, विनिर्माण की प्रक्रिया में है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन की प्रक्रिया में अंतर से सोडा ऐश के दोनों घेड़ों को असमान वस्तु नहीं माना जा सकता है खासकर तब जब दोनों परिणामी उत्पादों को एक दूसरे के स्थान पर अंतर्बदल करके प्रयोग किया जा सकता है।

13. इस तर्क के संबंध में कि सोडियम बाइ-कारबोनेट (बेकिंग सोडा) को विचाराधीन उत्पाद में गलती से शामिल किया गया है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह विश्लेषण, सोडियम बाइ-कारबोनेट को छोड़कर, डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त आंकड़ों पर विचार करते हुए किया गया है।

घ घरेलू उद्योग एवं आधार

14. घरेलू उद्योग ने जांच की कार्यवाही के दौरान घरेलू उद्योग एवं आधार के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण दिया है:

i. वर्तमान मामले में कथित पाटन उक्त सम्बद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद ही हो सकता है। शब्द "कथित" का प्रयोग करने से "सम्बद्ध देशों" का आशय स्पष्ट हो जाता है। उन "सम्बद्ध देशों" से आयात, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है "पाटित वस्तुएं" हैं, और न कि "कथित पाटित मद"।

ii. उन घरेलू उत्पादकों की पात्रता, जो तीसरे देशों से सोडा ऐश के निर्यातकों से सम्बंधित हैं और जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है, के संबंध में नियम 2(ख) के अनुरूप उनके अपवर्जन के मुद्दे पर विचार किए जाने की जरूरत नहीं है।

iii. धारा 9(ख) में "सम्पूर्ण" स्थापित उद्योग के लिए प्रावधान न होने के बजाय केवल "कोई" स्थापित उद्योग के लिए प्रावधान है। "कोई" स्थापित उद्योग "सम्पूर्ण" स्थापित उद्योग का उप-सेट है। नियमों में "घरेलू उद्योग" पर विचार किए जाने का प्रावधान है, न कि "सम्पूर्ण घरेलू उत्पादकों" पर।

iv. याधिकाकर्ता टाटा कैमिकल्स इन्फर्मेशन का संसर्गी नहीं है और इस कारण सूचना को दबाए रखने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह कल्पना कर ली कि टाटा कैमिकल्स ए एम ए आई के निदेशन एवं नियंत्रण के अधीन है। टाटा कैमिकल्स ए एम ए आई का एक सदस्य है, परन्तु यह ए एम ए आई के नियंत्रणाधीन नहीं है।

15. जांच की कार्यवाही के दौरान उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग तथा आधार के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया है:-

- i. नियम 2(ख) में 'कथित पाटित मद' के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा आयात तथा निर्यातक के साथ उसके सम्बंध की जांच अपेक्षित होती है, न कि सम्बद्ध देशों की जांच। अतः, वर्तमान मामले में प्राधिकारी को घरेलू उद्योग द्वारा आयातों तथा सभी नौ देशों जहां से कथित मद का पाटन किया जा रहा है, के निर्यातकों के साथ घरेलू उद्योग के सम्बंधों की जांच करना अपेक्षित है।
- ii. क्षति विश्लेषण के उद्देश्यों के लिए टाटा कैमिकल्स का अपवर्जन कर दिया गया है। विगत जांच में इसका अपवर्जन कर दिया गया था क्योंकि इसने ऐसे सम्बद्ध देश से वस्तु का आयात किया था जो वर्तमान में मामला नहीं है। यह कुल उत्पादन के 30 प्रतिशत का उत्पादन करता है। टाटा कैमिकल्स को शामिल करके क्षति विश्लेषण के अधिक स्पष्ट आंकड़े प्राप्त होंगे।
- iii. धारा 9(ख) और अनुलग्नक-II का पैरा (i) यह अधिदेशित करता है कि घरेलू बाजार तथा घरेलू उत्पादकों की समग्र रूप में जांच की जानी चाहिए और न कि केवल घरेलू उद्योग की।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. यह याचिका सम्बद्ध वस्तु के उत्पादकों के एसोसिएशन अर्थात् अल्कलाय मैन्यूफैचरर्स एसोसिएशन आफ इंडिया द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ता कम्पनियों द्वारा किया गया उत्पादन भारतीय उत्पादन का प्रमुख हिस्सा बनता है।

17. इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए आयातों तथा 'कथित पाटित वस्तु' के संबंध में निर्यातकों के साथ सम्बंध की जांच किया जाना अपेक्षित है, और न कि सम्बद्ध देशों की जांच, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि शब्द 'कथित' में स्वतः यह आशयित है कि नियम 2(ख) के अंतर्गत निर्यातकों के साथ सम्बंध की जांच कथित अर्थात् जांच के अधीन सम्बद्ध देशों के मूल के सम्बद्ध आयातों के बारे में है। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रदान कराई गई सूचना दर्शाती है कि याचिकाकर्ता घरेलू उत्पादकों से संबंधित पक्षकारों द्वारा अन्य उन देशों से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया गया है जिन पर इस समय पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित है। विशेष रूप से, यह पाया गया कि:

क. डी सी डब्ल्यू का भारत के बाहर कोई संबंधित उत्पादक नहीं है। कम्पनी ने जांच की अवधि के दौरान उत्पाद का आयात नहीं किया है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग के रूप में डी सी डब्ल्यू की पात्रता के संबंध में भी कोई विवाद नहीं है।

ख. निरमा का भारत के बाहर सम्बंधित उत्पादक है। तथापि, वर्तमान जांच की अवधि के दौरान इसके भारत के बाहर स्थित किसी भी संबंधित उत्पादक द्वारा कोई आयात नहीं किया गया है, इसलिए यह कम्पनी, नियम 2(ख) के अंतर्गत, पात्र घरेलू उद्योग है। अन्यथा भी, जांच की अवधि से पहले की अवधि के दौरान निर्यात की मात्रा न्यून थी और प्राधिकारी ने सोडा ऐश से संबंधित पिछली जांच में निरमा को पात्र घरेलू उद्योग के रूप में धारित किया है।

ग. सौकेम निरमा से संबंधित है। तथापि, सौकेम भी उन्हीं कारणों से पात्र घरेलू उद्योग बनता है। जिनकी बजह से निरमा एक पात्र घरेलू उद्योग है।

घ. जी एच सी एल का भारत के बाहर एक संबंधित उत्पादक है। तथापि, कम्पनी ने वर्तमान जांचावधि के दौरान सोडा ऐश का निर्यात नहीं किया है। चूंकि संबंधित उत्पादक से जांच की अवधि के दौरान कोई आयात नहीं किया गया है इसलिए जी एच सी एल नियम 2(ख) के अंतर्गत पात्र घरेलू उद्योग है। अन्यथा भी, जांच की अवधि से पूर्व की अवधि में निर्यातों की मात्रा न्यून थी तथा प्राधिकारी ने सोडा ऐश से संबंधित पिछली जांच में जी एच सी एल को पात्र घरेलू उद्योग के रूप में धारित किया है।

ड. टाटा कैमिकल्स लिमिटेड याचिकाकर्ता कम्पनियों का एक भाग नहीं है। टी सी एल का भारत से बाहर (केन्या में) एक संबंधित उत्पादक है। तथापि, चूंकि, कम्पनी को क्षति विश्लेषण में शामिल नहीं किया गया है इसलिए प्राधिकारी घरेलू उद्योग के रूप में टी सी एल की पात्रता निर्धारित करना अनावश्यक नहीं समझते हैं।

18. इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि धारा 9(ख) तथा अनुबंध-II यह अधिदेशित करता है कि घरेलू बाजार तथा घरेलू उत्पादकों की समग्र रूप से जांच की जानी चाहिए न कि केवल घरेलू उद्योग की, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सीमा शुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 9(ख) में विशेष रूप से 'कोई सुस्थापित उद्योग' वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। जिसका आशय घरेलू उत्पादकों की सम्पूर्णता से नहीं है,

19. हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि क्षति निर्धारण के उद्देश्यों के लिए मौजूदा मामले में टाटा कैमिकल्स (टी सी एल) से प्राप्त जानकारी/ आंकड़ों को शामिल किया जाना चाहिए। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों को ध्यान में रखते हुए, टी सी एल को निदेश दिया गया कि वह निर्धारित प्रपत्र एवं तरीके से संगत जानकारी उपलब्ध कराएं। तथापि, कम्पनी ने कोई जानकारी उपलब्ध नहीं की है तथापि, प्राधिकारी ने उक्त जानकारी कारपोरेट कार्य मंत्रालय से प्राप्त कर ली है जो यह दर्शाती है कि वर्ष 2008-09 में लगायी गई पूंजी पर अर्जन अबतक 100 (सूचीबद्ध आंकड़े) से घटकर वर्ष 2009-10 में 66 (सूचकांकित आंकड़े) रह गया और इसमें वर्ष 2010-11 में पुन गिरावट आई तथा यह 36 (सूचकांकित आंकड़े) रह गया। पुनश्च, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादक अभिव्यक्त रूप से उस आवेदन का समर्थन कर रहे हैं जो घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के

50 प्रतिशत उत्पादन से अधिक के उत्पादन के लिए उत्तरदायी हो। अतः, प्राधिकारी यह धारित किया जाता है कि घरेलू उत्पादक अभिव्यक्त रूप से उस आवेदन का समर्थन कर रहे हैं जो घरेलू उद्योग द्वारा समान वस्तु के कुल उत्पादन के पच्चीस प्रतिशत से अधिक उत्पादन के लिए उत्तरदायी हों, और इस याचिका का उन घरेलू उत्पादकों द्वारा समर्थन किया गया है जिनका सामूहिक आउटपुट समान वस्तु के घरेलू उद्योग के उस पोर्शन जो अभिव्यक्त रूप से आवेदन का समर्थन करती हो या उसका विरोध करती हो, जैसा भी मामला हो, द्वारा उत्पादित कुल उत्पादन का पचास प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनता है। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ता कम्पनियों का भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन के अधिकांश भाग पर नियंत्रण है और इस जांच के उद्देश्यों के लिए याचिकाकर्ता कम्पनियां नियम 2(ख) में दी गई शर्तों के अनुरूप, घरेलू उद्योग बनती हैं।

ड. गोपनीयता

20. जांच की कार्यवाही के दौरान गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए:

- i. केवल इस कारण कि यह आंकड़े तीन कम्पनियों के लिए समेकित किए गए हैं, का आशय यह नहीं है कि वह गोपनीय नहीं है। लाभ की परिशुद्ध राशि, आर ओ आई, नकदी, प्रवाह, अत्यधिक व्यवसाय संवेदनशील जानकारी है, जिसका प्रकटन कर देना से घरेलू उद्योग के व्यवसाय हितों के लिए गंभीर रूप से प्रतिकूल होगा।
- ii. निर्यातकों की प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में सोडा सनायी द्वारा प्रदत्त सूचकांकन की श्रृंखला कोई सार्थक जानकारी देने में असफल रही है। कई सूचनाओं के सूचकांकित आंकड़े प्रदान नहीं किए गए हैं।
- iii. ई टी आई सोडा, जिसने घरेलू उद्योग को अपने हितों की रक्षा करने से बंचित कर दिया है, द्वारा पिछले वर्ष की सूचना को ब्लाक कर दिया गया है।
- iv. अनुक्रमांकन का प्रयोग करने के बजाय निर्यातक ने रैंज प्रदान कराई है। जब अनुक्रमांकित जानकारी स्वयं गोपनीयता का पालन करती है तो अनुक्रमांकित आंकड़ों की रैंज नहीं दी जानी चाहिए।

21. जांच की कार्यवाही के दौरान गोपनीयता के संबंध में उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया गया है:-

- i. याचिका के खंड-VI के लिए केवल एक लाइन की एक अभिव्यक्ति दी गई है कि यह जानकारी बिजनेस स्वाम्य से संबंधित है जिसका सार प्रस्तुत किये जाने की जावब दे ही

नहीं है। इस तथ्य का कोई कारण नहीं दिया गया है कि विभिन्न लागत प्रपत्रों में दिए गए विवरणात्मक उत्तर एवं अंकीय आंकड़े सार प्रस्तुत किए जाने के लिए परीक्षणीय क्यों नहीं हैं।

ii. घरेलू उद्योग गोपनीयता का दावा नहीं कर सकता है क्योंकि यह आंकड़ा इन कम्पनियों का औसत आंकड़ा है और अतः, ऐसी कोई बिजनेस सेंसिटिव जानकारी नहीं होगी जिसको व्यक्त किया जा सके।

प्राधिकारी द्वारा जांच

22. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता संबंधी दावों की जांच की है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का अगोपनीय पाठ सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया है।

23. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में निम्नलिखित प्रावधान है:-

(1) नियम 6 के उपनियम (2), (3) और (7), नियम 12 के उप-नियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में किसी बात का उल्लेख होते हुए भी नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों की प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा जांच के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी को गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई कोई अन्य जानकारी को यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट हो जाते हैं तो निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उन्हें गोपनीय के रूप में माना जाएगा और ऐसी सूचना का प्रकटन किसी अन्य पक्षकार को, उक्त जानकारी प्रदान कराने के लिए पक्षकार द्वारा विशिष्ट प्राधिकृतीकरण के बिना, नहीं किया जाएगा। (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे उनका अगोपनीय सार प्रस्तुत करें और ऐसी जानकारी देने वाले पक्षकार के विचार से यदि इस जानकारी का सार प्रस्तुत नहीं किया जा सकता तो उक्त पक्षकार उसके कारणों का विवरण निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत करेगा कि उक्त जानकारी का सार प्रस्तुत करना संभव क्यों नहीं है। (3) उपनियम (2) में उल्लिखित किसी बात के होते हुए भी यदि प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हैं कि गोपनीयता का अनुरोध आवश्यक नहीं है या सूचना प्रदाता अपनी जानकारी सार्वजनिक करने या इसका सामान्यीकृत या सार रूप में प्रकटन प्राधिकृत करने का अनिच्छुक है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसी जानकारी की अवहेलना कर सकते हैं।

24. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई जानकारी की गोपनीयता दावों की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने यथापेक्षित गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया है और उक्त जानकारी को गोपनीय के रूप में माना गया है तथा उसका किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार को प्रकटन नहीं किया गया है। जहां कहीं संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई जानकारी का पर्याप्त अगोपनीय पाठ भी प्रदान कराएं।

25. इस विशिष्ट प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि घरेलू उद्योग की समेकित जानकारी को गोपनीय बनाए रखने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि समेकित आंकड़ों का प्रकटन कर दिए जाने से घरेलू उद्योग के व्यावसायिक हितों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है इसलिए वास्तविक आधार पर उसका प्रकटन नहीं किया जा सकता है।

च. विविध प्रस्तुतिकरण

26. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए विविध प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं-

- i. ऐसी कोई विधिक अपेक्षा नहीं है कि यह याचिका उस जांचावधि के लिए हो जिसके लिए प्राधिकारी का जांच प्रारंभ करने का इरादा हो। जैसा कि पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका है यह जरूरी नहीं है कि याचिका में जांच की अवधि तथा जांच के लिए जांचावधि दोनों एक हों।
- ii. नियमों में प्रावधान है कि याचिका में पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध का पर्याप्त साक्ष्य होना चाहिए। इसका निश्चित रूप से यह आशय नहीं हो सकता है कि स्वयं याचिका में जांच की अवधि का निर्धारण किया जाना चाहिए और उसमें जांच की अवधि के संबंध में जानकारी का उल्लेख किया गया और इस कारण प्राधिकारी को उसी जांच की अवधि की जांच करनी चाहिए।
- iii. पाटनरोधी प्रक्रियाओं संबंधी समिति ने कही भी यह निर्धारित नहीं किया है कि जांचकर्ता प्राधिकारी याचिकाकर्ताओं से यह अपेक्षा करें कि वे जांच की अवधि के संबंध में भी याचिका दें और फिर प्राधिकारी उस पर विचार करें।
- iv. हितबद्ध पक्षकारों को अद्यतन जानकारी 15.04.2012 को प्राप्त हुई और तब से लेकर अब तक लगभग आठ माह का समय गुजर गया है। निश्चित रूप से, हितबद्ध पक्षकारों को अपने हितों की रक्षा करने के लिए पर्याप्त समय मिला है। यह वह स्थिति नहीं है जिसमें प्राधिकारी ने किसी हितबद्ध पक्षकार को इस समय सीमा के पश्चात प्रस्तुतिकरण करने से रोका हो।

- v. जांच की अवधि के लिए आंकड़ों तथा जांच की अवधि के लिए वार्षिकीकृत आंकड़ों की प्रवृत्तियां अलग-अलग हैं।
- vi. पाटनरोधी जांच के लिए अपेक्षित आंकड़े, विचाराधीन उत्पाद, जांच की अवधि तथा विचारित क्षति अवधि के संबंध में तथा केवल घरेलू प्रचालनों के बारे में होने चाहिए।
- vii. टाटा कैमिकल्स की वार्षिक रिपोर्ट से संग्रहित आंकड़े यह दर्शाते हैं कि यह जानकारी वर्तमान जांच के लिए कतई पर्याप्त/ उपयोगी नहीं हैं।
- viii. प्राधिकारी को केवल उन्हीं हितबद्ध पक्षकारों को प्रस्तुतिकरण करने की अनुमति देनी चाहिए जिन्होंने प्राधिकारी द्वारा अधिरोपित समय सीमा के अंतर्गत अपनी जानकारी दी हो और जिन्होंने प्राधिकारी द्वारा जांच प्रारंभ किए जाने के नोटिस में निर्धारित समय-सीमा के अंतर्गत प्रस्तुतिकरण और जानकारी फाइल कर दी हो।
- ix. घरेलू उद्योग ने पर्याप्त से अधिक जानकारी उपलब्ध कराई है और वह जांच समाप्त करने के लिए आधार नहीं बन सकती है। न ही घरेलू उद्योग ने कोई जानकारी तोड़-मोड़ कर प्रस्तुत की है।
- x. भारत में आयातों की मात्रा ने वास्तव में ऐतिहासिक रूप से उच्च स्तर को पार कर लिया है और अब पाटित आयातों का बाजार हिस्सा ऐतिहासिक रूप से सर्वाधिक है। निर्यातकों द्वारा पाटनरोधी शुल्क का वास्तव में अवशोषण किया गया है जैसा कि कीमतों की चालू प्रवृत्तियों से देखा जा सकता है।
- xi. घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी द्वारा चयनित जांचवधि के संबंध में ही जानकारी दी है। गुजरात गार्जियन तथा सेण्ट गोबैन असहयोगकर्ता आयातक/ उपभोक्ता है। उन्होंने जांच शुरुआत के पश्चात पहली बार अपना प्रस्तुतिकरण दिया है और उन्हें घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराई जानकारी का प्रत्युत्तर देने के लिए लगभग नौ माह का समय मिला है। अतः इन परिस्थितियों में किसी पूर्वाग्रह का दावा नहीं किया जा सकता है।

27. उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विविध प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं:-

- i. प्राधिकारी नियम 5(3) (ख) का अनुसरण करने में असफल रहे हैं और उन्होंने प्रदान कराई गई जानकारी की पर्याप्तता एवं उपयुक्तता का कोई सुनिश्चियन नहीं किया है क्योंकि प्राधिकारी के पास विस्तारित 3 माह की अवधि के लिए कोई जानकारी नहीं है।
- ii. प्राधिकारी ने जांच की अवधि में जून 11 से 11 सितम्बर को शामिल करने के लिए जांच की अवधि का एक तिमाही के लिए विस्तार कर दिया, जबकि याचिका में केवल जून, 2011 तक आंकड़े उल्लिखित हैं। अतः, जांच शुरुआत जांच की उस अवधि के लिए की गई है जिसके लिए पर्याप्त एवं यथार्थ जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई है।

- iii. जांच की शुरुआत एवं उसकी निरन्तरता अवधि और कानून के किसी भी प्राधिकार के बिना है क्योंकि वह जानकारी जो जांच शुरुआत का एक भाग है, हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध ही नहीं है। विस्तारित समय के लिए आंकड़ों, जो जांच की अवधि का एक भाग है, को गोपनीय नहीं रखा जा सकता है और इस कारण पाटन एवं क्षति दोनों के विश्लेषण त्रुटिपूर्ण है। प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों से उस जांच की अवधि के लिए आंकड़े फाइल करने का अनुरोध नहीं कर सकते हैं जिसके लिए प्राधिकारी ने स्वयं वह आंकड़े प्रदान नहीं कराए हैं और जिन्हें नवीन जांच अवधि में उपयुक्त एवं पर्याप्त माना गया है।
- iv. शिकायतकर्ताओं ने सोडा ऐश के आयातों को आकामक रूप से लक्ष्य बनाकर और अपनी कीमतें बढ़ाकर पाटनरोधी नियमावली में दिए गए उपबंधों का दुरुपयोग किया है। भारत को पूरे विश्व से होने वाले सोडा ऐश के आयातों का लगभग 97 प्रतिशत आयात या तो पाटन रोधी उपायों के अध्यधीन है या उसके संबंध में जांच चल रही है।
- v. जब प्राधिकारी ने यह निर्धारण कर लिया है कि आंकड़े जांच शुरुआत करने के लिए अपर्याप्त हैं तो उसे जांच शुरू करने से पहले आवेदकों को अतिरिक्त जानकारी प्रदान करानी चाहिए थी और फिर प्राधिकारी से यह अपेक्षित था कि वह सभी हितबद्ध पक्षकारों को सभी संगत साक्ष्य प्रदान कराते हुए उपयुक्त रूप से संशोधित लिखित आवेदन पत्र प्रदान कराते।
- vi. जांच शुरुआत अधिसूचना के अनुरूप जानकारी आज तक प्राप्त नहीं हुई जिससे सीमित प्रति-प्रत्युत्तर प्रस्तुतिकरण हुए हैं।
- vii. क्षति आंकड़े प्रस्तुत करते समय घरेलू उद्योग ने कई स्थलों पर अत्यधिक सुविधापूर्वक कुछ निश्चित पैरामीटर ही प्रदान किए हैं और फिर उन्हीं पैरामीटरों को कई अन्य स्थानों पर दबा रखा है जैसे निवल अचल परिसम्पत्तियां, कार्यशील पूंजी, लगाई गई पूंजी, और प्रति कर्मचारी प्रति दिन उत्पादकता और प्रति यूनिट पी बी आई टी।
- viii. वार्षिकीकृत अवधि के लिए प्रदान कराए गए आंकड़ों की प्रवृत्ति तथा 15 माह की अवधि के लिए प्रदान कराए गए आंकड़ों की प्रवृत्ति लगभग एक जैसी ही हैं। यह अविवादित तथ्य है कि वार्षिकीकृत आंकड़े और 15 माह के लिए आंकड़े एक समान नहीं हो सकते हैं।
- ix. क्षति विश्लेषण में टाटा कैमिकल्स को भी शामिल किया जाना चाहिए। हालांकि टाटा कैमिकल्स ने डीजीएडी को कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं फिर भी इसने भारत के घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति का निर्धारण करने में वार्षिक रिपोर्ट और तिमाही रिपोर्ट जैसी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी का प्रयोग किया है।
- x. चूंकि प्राधिकारी ने जांच की अवधि के विस्तारित 3 माह की अवधि के लिए कोई जानकारी प्राप्त किए बिना उसे 3 माह की अवधि के लिए बढ़ा दिया इसलिए प्राधिकारी आयातों या घरेलू उद्योग का निर्यातकों के साथ संबंध का सत्यापन किए जाने की स्थिति में नहीं है जो नियम 5(3) (क) का उल्लंघन है।
- xi. जांच शुरुआत अधिसूचना में प्राधिकारी ने क्षति पैराग्राफ में केवल घरेलू उद्योग को हुई क्षति को नोट किया है। तथापि, जांच की अवधि के लिए पैराग्राफ में उल्लेख है कि

वास्तविक क्षति की चुनौती की जांच, उस अवधि के लिए की जाएगी जो जांच की अवधि से परे है, जो अधिनियम एवं नियमों की मूल भावनाओं के विपरीत है।

xii. धारा 9(ख) तथा नियम 11(1) में क्षति और वास्तविक क्षति की चुनौती के बीच 'अथवा' शब्द का प्रयोग किया गया है न कि 'और' शब्द का जो विधायन की मंशा को स्पष्टतः दर्शाता है और इस कारण इसकी व्याख्या धारा 9ख और नियम 11 के आशय के विपरीत नहीं की जा सकती है।

xiii. घरेलू उद्योग को संशोधित याचिका दायर करने के लिए, बिना किसी पर्याप्त कारण के, 69 दिनों का समय दिया गया है।

xiv. व्यापार नोटिस 2/2004 के विपरीत घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि 2008-09 होते हुए भी आंकड़े 2007-08 से दर्शाए हैं। इसके अतिरिक्त, मौखिक सुनवाई के दौरान प्रदान कराए गए आंकड़ों को तोड़-मरोड़ कर प्रदान किया गया जो जांच शुरुआत अधिसूचना के अनुरूप नहीं थे इसलिए कार्यवाही समाप्त कर दी जानी चाहिए।

xv. घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराए गए संशोधित आंकड़ों में 3 माह का अंतराल है जो जानकारी को दबाने के लिए किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

28. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विविध प्रस्तुतिकरणों की निम्नवत जांच की गई:

i. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है कि नियम 5(3) (ख) के अंतर्गत यथार्थता एवं पर्याप्तता का पालन नहीं किया गया है क्योंकि जांच शुरुआत करते समय विस्तारित तीन माह की अवधि के लिए जानकारी उपलब्ध नहीं थी, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऐसा कोई विधिक अधिदेश नहीं है कि विस्तृत जांच किए जाने के लिए प्राधिकारी द्वारा विचारित जांच की अवधि वही होनी चाहिए जिस अवधि के लिए याचिका दायर की गई है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान मामले में जांच की अवधि का चयन, मामले के तथ्यों एवं परिस्थितियों पर विचार करते हुए किया गया है और उसका चयन इस विषय पर उपलब्ध अद्यतन आंकड़ों को शामिल करने के लिए ठीक ही किया गया है। जांच की अवधि में परिवर्तन निदेशालय की संगत नीति को देखते हुए की गई है कि जांच के उद्देश्य के लिए अद्यतन समय पर विचार किया जाना चाहिए। प्राधिकारी ने, जांच शुरुआत में भारी संख्या में जांचों में, याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तावित जांच अवधि से भिन्न जांच अवधि पर विचार किया है।

ii. जांच शुरुआत किए जाने के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि यह जांच शुरुआत वैध नहीं है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आवेदन में वर्तमान जांच प्रारंभ करने को न्यायोचित ठहराने के लिए पर्याप्त साक्ष्य निहित हैं। यह भी नोट किया

जाता है कि प्राधिकारी ने, जांच शुरुआत के पश्चात, घरेलू उद्योग से जांच की परिवर्तित अवधि के लिए जानकारी मांगी, जिसे, प्राप्त होने के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों के लिए अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सार्वजनिक फाइल में रखा। घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराई गई जानकारी का प्रत्युत्तर देने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान कराया गया।

iii. हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि शिकायतकर्ताओं ने सोडा ऐश के आयातों को आक्रमक रूप से लक्ष्य बनाकर पाटनरोधी प्रावधानों का दुरुपयोग किया है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी जांच संबद्ध वस्तु के आयात पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाती है। यह पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रिया का उपशमन करने और घरेलू उद्योग को समान अवसर प्रदान किए जाने के लिए है। प्राधिकारी पुनः यह नोट करते हैं कि जब पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति कारित होने लगती है तभी पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित किया जाता है। प्राधिकारी, रिकार्ड में उपलब्ध जानकारी से यह भी नोट करते हैं कि अभी हाल ही की अवधि में आयातों की मात्रा में वास्तव में वृद्धि हुई है।

iv. हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि घरेलू उद्योग ने, क्षति अवधि 2008-09 होने के बावजूद आंकड़े 2007-08 के प्रदान किए हैं, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में क्षति विश्लेषण में वर्ष 2008-09 तथा उसके बाद के आंकड़ों पर विचार किया गया है। घरेलू उद्योग ने अपेक्षित अवधि से अधिक अवधि के आंकड़े उपलब्ध कराए हैं।

v. हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि टाटा कैमिकल्स (टी सी एल) की जानकारी, जो सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है, को शामिल किया जाना चाहिए, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि टी सी एल के संबंध में कारपोरेट कार्य मंत्रालय से प्राप्त किए गए आंकड़े दर्शाते हैं कि उनके द्वारा लगाई गई पूंजी पर अर्जन वर्ष 2008-09 के दौरान 100 (सूचीबद्ध आंकड़े) था जो वर्ष 2009-10 में घटकर 66 (सूचीबद्ध आंकड़े) हो गया तथा वर्ष 2010-11 में और अधिक घटकर 36 (सूचीबद्ध आंकड़े) हो गया।

पाटन का आकलन- कार्यपद्धति और पैरामीटर

छ पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए कार्यपद्धति

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

29. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए:

i. सामान्य मूल्य का निर्धारण समान वस्तु के संबंध में किया जाना अपेक्षित है। समान वस्तु की परिभाषा नियम 2(घ) में की गई है और उसमें समान वस्तु से आशय एक समरूप वस्तु, या उसके अभाव में आयातित वस्तु के पूर्णतया अनुरूप कोई अन्य वस्तु होता

है। अतः सामान्य मूल्य का निर्धारण यूरॉपियन यूनियन में प्रचलित सिन्थेटिक सोडा ऐश की कीमत के आधार पर किया जाना उपयुक्त होगा।

ii. रुस में प्रचलित कीमतों का साक्ष्य याचिकाकर्ता द्वारा हरिमान कैमिसल्ट द्वारा प्रकाशित जरनाल क्लोर अल्कलाई से प्राप्त किए जा सकते हैं जो सोडा ऐश की कीमतों का नियमित रूप से प्रकाशन करता है।

iii. तुर्की के संबंध में, क्लोर अल्कलाई, तुर्की में प्रचलित कीमतों का प्रकाशन नहीं करता है। तथापि, यह यूरोप में प्रचलित सोडा ऐश की कीमतों का प्रकाशन करता है जो तुर्की के घरेलू बाजार में व्याप्त कीमतों का अच्छा संकेतक है।

iv. चूंकि यह जरनल उच्च और न्यून कीमतों का उल्लेख करता है, इसलिए याचिकाकर्ता ने भारित औसत कीमतों को अपनाया है और सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

30. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं:-

i. तुर्की के सोडा ऐश की घरेलू बाजार के लिए ई यू समुचित बेंचमार्क नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय जरनाल क्लोर अल्कलाई में बुल्गारिया जैसे अन्य अधिक उपयुक्त विकल्प हैं। तुर्की के दो उत्पादकों में से एक उत्पादक संबंध वस्तु का प्राकृतिक संसाधनों से विनिर्माण करता है और अतः याचिकाकर्ता को ऐसी बाजार का चयन करना चाहिए जिसमें सोडा ऐश का उत्पादन प्राकृतिक संसाधनों से किया जाता है जैसे बुल्गारिया और यू ए एस ए। वह तुर्की के बाजार का अधिक प्रतिनिधिक होता।

ii. प्रयुक्त कीमतों का मुद्रा परिवर्तन तथ्य तथा अन्य विवरण कि अन्ततः इन कीमतों का निर्धारण कैसे किया गया, अस्पष्ट है।

iii. क्लोर अल्कलाई जरनाल में प्रकाशित कीमतों के आधार पर विचारित सामान्य मूल्य नियमों द्वारा निर्धारित अनुमत तरीके के अनुरूप नहीं है।

iv. पाटन और उस पर आबंटित मार्जिन के संबंध में भरोसेमंद एवं यथार्थ निष्कर्ष पर पहुंचने के उद्देश्य से सहयोगकर्ता निर्यातकों अर्थात् ई टी आई सोडा तथा सोडा सनायी द्वारा फाइल किए गए आंकड़ों पर भरोसा किया जाना चाहिए।

v. सिन्थेटिक प्रक्रिया से तैयार किया गया सोडा ऐश तुर्की में यथा उत्पादित, प्राकृतिक सोडा ऐश की तुलना में अधिक महंगा है। अतः तुर्की के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण ई यू में घरेलू कीमतों पर विचार करके, जहां भिन्न उत्पादन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है, नहीं किया जा सकता है। यह सोडा ऐश के संबंध में की गयी पिछली जांच से भी स्पष्ट है जिसमें डीजीएडी ने प्राकृतिक प्रक्रिया को अपनाने वाले देश यूएसए तथा सिन्थेटिक प्रक्रिया को अपनाने वाले देशों (ईयू) के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

vi. निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए आंशिक रूप से डीजीसीआई एंड एस तथा आंशिक रूप से आई बी आई एस आंकड़ों का प्रयोग करने से असंगतता होगी और अतः, केवल एक स्रोत के आंकड़ों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

सामान्य मूल्य

रुस के मामले में सामान्य मूल्य

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रुस से किसी निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। अतः प्राधिकारी ने रुस के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए नियमावली के नियम 6(8) में दी गई शर्तों के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी पर भरोसा किया है। तदनुसार प्राधिकारी रुस के बारे में सामान्य मूल्य का निर्धारण क्लोर अल्कलाइ में आवधिक रूप से प्रकाशित कीमतों के आधार पर फैक्टरी बाह्य स्तर पर करते हैं जो सोडा ऐश की रुस में प्रचलित कीमतों का अवधिक रूप से *** प्रति मी. टन अमरीकी डालर के रूप में प्रकाशित करता है।

तुर्की के संबंध में सामान्य मूल्य

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि तुर्की के दो निर्यातकों नामतः, सोडा सनायी ए एस और ई टी आई सोडा ने निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया है जिसमें उन्होंने जांच की अवधि के दौरान संबंध वस्तु की घरेलू बिक्री का विवरण प्रस्तुत किया है।

सोडा सनायी ए.एस. तुर्की

33. सोडा सनायी ए.एस ने प्रत्युत्तर दिया है और जानकारी प्रदान की है। प्राधिकारी ने तुर्की में निर्यातक सत्यापन किया है। प्रतिवादी की उत्पादन लागत की तुलना लेनदेन वार घरेलू बिक्री (व्यापारिक बिक्री को छोड़कर) से की गई और यह पाया गया कि 80 प्रतिशत से अधिक बिक्री लाभप्रदायक है। प्राधिकारी प्राप्त ग्राहक यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने अपने संबद्ध ग्राहक को बिक्री की है और यह बिक्री असंबद्ध ग्राहकों को की गई बिक्री कीमत से बहुत कम कीमत पर की गई है। अतः, प्राधिकारी सामान्य मूल्य का निर्धारण व्यापारिक बिक्री का अपवर्जन करके असंबद्ध घरेलू बिक्री के आधार पर करते हैं। अंतरदेशीय भाड़ा, बीमा, हित के आधार पर समायोजन किए जाने की अनुमति दी जा रही है। डीजीएडी में अपनाई गई परम्परा के अनुसार मालसूची कैरीइंग लागत की अनुमति नहीं दी गई है। अतः सामान्य मूल्य का निर्धारण*** अमरीकी डालर प्रति मी.टन किया गया है।

ई टी आई सोडा, तुर्की

34. ई टी आई सोडा, तुर्की ने प्रत्युत्तर दिया है और जानकारी प्रदान की है। प्राधिकारी ने तुर्की में निर्यातक सत्यापन किया है। प्रतिवादी की उत्पादन लागत की तुलना लेन-देन बार घरेलू बिक्री से की गई तथा यह पाया गया कि 80 प्रतिशत से अधिक बिक्री लाभप्रदायक है। अतः प्राधिकारी सामान्य मूल्य का निर्धारण संपूर्ण घरेलू बिक्री के आधार पर करते हैं। अंतरदेशीय भाड़ा, बीमा हित आदि के आधार पर समायोजन किए जाने की अनुमति दी गई है। अतः सामान्य मूल्य का निर्धारण*** अमरीकी डालर प्रति मी.टन किया गया है।

निर्यात कीमत

रूस के मामले में निर्यात कीमत

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रूस से संबद्ध वस्तु के किसी भी निर्यातक/ उत्पादक ने निर्धारित स्वरूप और ढंग में प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं दिया है। रूस से उत्पादकों/ निर्यातकों से प्राप्त प्रत्युत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने इन देशों के बारे में निर्यात कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में दी गई शर्तों के अनुरूप रिकार्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम जानकारी के आधार पर किया है। प्राधिकारी ने उक्त देशों से जांच की अवधि के दौरान आयातों के भारित औसत सी आई एफ मूल्य पर पहुंचने के उद्देश्य के लिए डीजीसी आई एंड एस आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है। रूस से निवल निर्यात कीमत पर पहुंचने के लिए समुद्री भाड़ा, बीमा, कमीशन, पत्तन व्यय, अंतरदेशीय भाड़ा और बैंक प्रभारों, जिनका याचिकाकर्ता ने दावा किया है, के समायोजन को ध्यान में रखा गया है। तदनुसार, रूस से निर्यातकों के लिए फैक्टरी बाह्य स्तर की निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर प्रति मी. टन निर्धारित की गई है।

तुर्की के बारे में निर्यात कीमत

सोडा सनायी ए.एस. तुर्की

36. सोडा सनायी ए.एस ने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात प्रत्यक्षतः एवं एक असंबद्ध निर्यातक में, विन्काम कमोडिटीज लिमिटेड यू के के माध्यम से भी किया है। भारत को निर्यात (प्रत्यक्ष निर्यात) कीमत (सी आई एफ) का निर्धारण निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-2 और 3(क) में प्रदान कराए गए आंकड़ों के अनुरूप *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन किया गया है। बीमा, रख-रखाव, पत्तन प्रभार, ब्याज एवं समुद्रपारीय भाड़ा के संबंध में कीमत समायोजन का दावा किया गया है। प्राधिकारी ने तुर्की में निर्यातक का सत्यापन किए जाने के पश्चात इन समायोजनों को स्वीकार कर लिया है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन निर्धारित की गई है।

37. मै. विन्काम कमोडिटीज लिमिटेड, यू.के. के माध्यम से सोडा सनायी ए.एस द्वारा किए गए निर्यातों के संबंध में निवल निर्यात कीमत का निर्धारण भारत को निम्नलिखित सरणियों से की गई निर्यात बिक्री के आधार पर किया गया है।

सोडा सनायी ए.एस, तुर्की (उत्पादक)>>>> मै. विन्काम कमोडिटीज लिमिटेड, यू के (व्यापारी) >>>> भारतीय ग्राहक।

38. भारत को भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन के रूप में किया गया है। बीमा रख-रखाव, पत्तन प्रभार, ब्याज एवं समुद्रपारीय भाड़ा के संबंध में कीमत समायोजन का दावा किया गया है। प्राधिकारी द्वारा तुर्की में निर्यातक सत्यापन किए जाने के पश्चात प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा किए गए समायोजन दावे को स्वीकार कर लिया है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर प्रति मी. टन निर्धारित की गई है।

ई टी आई सोडा, तुर्की

39. ईटीआई ने भारत को सम्बद्ध वस्तु का निर्यात सीधे और विनकाम कमोडिटीज लिमिटेड यू.के के माध्यम से किया है। भारत को भारत औसत निर्यात कीमत (सीआईएफ) (प्रत्यक्ष निर्यात) का निर्धारण निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में प्रदान कराए गए आंकड़ों के अनुसार *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन निर्धारित की है। अंतरदेशीय भाड़ा हैण्डलिंग और सामुद्रपारीय भाड़ा के संबंध में कीमत समायोजन का दावा किया गया है। प्राधिकारी ने तुर्की में निर्यातक का सत्यापन किए जाने के पश्चात इन समायोजनों को स्वीकार कर लिया है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत ***अमरीकी डालर प्रति मी. टन निर्धारित की गई है।

40. मै. विनकाम कमोडिटीज लिमिटेड यू.के. माध्यम से ई टी आई सोडा द्वारा किए गए निर्यातों के संबंध में निवल निर्यात कीमत का निर्धारण भारत को निम्नलिखित सरणियों से की गई निर्यात बिक्री के आधार पर किया गया है:

ई टी आई सोडा, तुर्की (उत्पादक)>>>>मै. विनकाम कमोडिटीज लिमिटेड यू के (व्यापारी) >>>> भारतीय ग्राहक

41. भारत को भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन के रूप में किया गया है। अंतरदेशीय भाड़ा, रख-रखाव, और समुद्रपारीय भाड़ा के संबंध में कीमत समायोजन का दावा किया गया है। प्राधिकारी द्वारा तुर्की में निर्यातक सत्यापन किए जाने के पश्चात निर्यातक द्वारा किए गए समायोजन के दावे को स्वीकार कर

लिया है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर प्रति मी. टन निधारित की गई है।

असहयोगकर्ता निर्यातक

42. तुर्की के किसी अन्य निर्यातक और उत्पादक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर नहीं दिया है। प्राधिकारी उनके सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत का निर्धारण रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर करते हैं।

पाटन मार्जिन

43. उपर्युक्त सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नवत किया गया है:-

क्र.सं.	निर्यात की सरणी	उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य	निवल निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन		
				(अमरीकी डालर/मी.टन)	(अमरीकी डालर/मी.टन)	(अमरीकी डालर/मी.टन)	%	रैंज
1 क	तुर्की-भारत	सोडा सनायी ए. एस	सोडा सनायी ए. एस	***	***	***	***	05-15
1ख	तुर्की-यूके-भारत	सोडा सनायी ए. एस	विनकाम कमोडिटीज लिमि. यू के	***	***	***	***	10-20
1ग	भारित औसत सोडा सनायी ए.एस				***	***	***	05-15
2क	तुर्की-भारत	ईटीआई सोडा	ईटीआई सोडा	***	***	***	***	05-15
2ख	तुर्की-यूके-भारत	ईटीआई सोडा	विनकाम कमोडिटीज लिमि.	***	***	***	***	30-40
2ग	भारित औसत ईटीआई सोडा				***	***	***	10-20

2D	तुर्की-भारत	ऊपर उल्लिखित तीन कम्पनियों के अलावा अन्य सभी निर्यातक/ और उत्पादक	***	***	***	***	55- 65
3	रूस-भारत	सभी निर्यातक और उत्पादक	***	***	***	***	65- 75

क्षति का आकलन और कारणात्मक संबंध की जांच

ज. क्षति निर्धारण

घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रस्तुतीकरण

44. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया गया है:

- आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।
- घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से तुलना करने पर आयात सस्ते हैं। परिणामतः, आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का बाजार में अधोरदन कर रहे हैं।
- संबद्ध देशों से आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग अपनी कीमतों में बढ़ोत्तरी उस अनुपात में करने में समर्थ नहीं है जिस अनुपात में लागत में वृद्धि हुई है। आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का पहले बाजार में अवनमन कर रहे थे और अब निग्रहण कर रहे हैं।
- घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में अत्यधिक कमी आई है। घरेलू उद्योग की आर ओ आई (पीबीआईटी) में क्षति अवधि के दौरान भारी गिरावट आई है। यही स्थिति नकद लाभ के संबंध में भी है।
- घरेलू उद्योग की मालसूची में भारी वृद्धि हुई है।
- मात्रा पैरामीटरों के अनुरूप भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में बढ़ोत्तरी से प्रत्याशित वृद्धि बहुत कम है। भारतीय उत्पादकों ने देश में उपभोक्ताओं की वर्तमान एवं संभावित मांग में वृद्धि को देखते हुए अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर ली है।
- संबद्ध देशों से आयात घरेलू उद्योग को और अधिक वास्तविक क्षति की चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं क्योंकि संबद्ध निर्यातकों के पास मुक्त रूप से निस्तारण योग्य पर्याप्त क्षमता है जिससे भारतीय बाजार में उत्तरोत्तर संवर्धित पाटित निर्यातों की संभावना का संकेत मिलता है; भारत में आयात कीमतें, बिक्री कीमत की तुलना में बहुत कम हैं और कीमतों में पर्याप्त भिन्नता तथा उसके परिणामस्वरूप आयातों में संभावित वृद्धि का घरेलू कीमतों में मंदी होने पर भारी प्रभाव पड़ा है।

उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

45. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

- i. घरेलू उत्पादन में वृद्धि की तुलना में संबद्ध आयातों में वृद्धि नगण्य है।
- ii. वित्तीय संकट के प्रभावों का विश्लेषण नहीं किया गया है। केवल इसका प्रभाव ही मांग पर नहीं होगा, बल्कि कम होती ऋण परिस्थितियों का भी घरेलू उद्योग पर प्रभाव पड़ा होगा।
- iii. क्षति विश्लेषण के उद्देश्यों के लिए टाटा कैमिकल्स का अपवर्जन कर दिया गया है। पिछली जांच में इसका अपवर्जन कर दिया गया था क्योंकि इसने उस संबद्ध देश से वस्तु का आयात किया था जिसका वर्तमान मामले में उल्लेख नहीं है। यह कुल उत्पादन के 30 प्रतिशत का उत्पादन करता है। टाटा कैमिकल्स को शामिल करने पर क्षति विश्लेषण अधिक यथार्थ होगा। पीवीसी सस्पेन्सन ग्रेड मामले में रिलायन्स को शामिल किया गया था ताकि 100 प्रतिशत घरेलू उत्पादकों को शामिल किया जा सके।
- iv. याचिकाकर्ताओं ने भूलबश कीमत अधोरदन विश्लेषण में परिवहन लागत को शामिल किया है और वह यह भूल गए कि आयातकों को भी पत्तन से ग्राहकों के अंतिम गंतव्य तक परिवहन लागत वहन करनी पड़ती है क्योंकि वास्तविक अंतिम प्रयोक्ता पत्तन पर तो अवस्थित नहीं है।
- v. आयातों की कीमत का प्रभाव स्थापित करने के लिए यह दर्शाया जाना चाहिए कि घरेलू कीमतें आयात कीमतों की प्रत्यक्षतः आनुपातिक हैं। वर्ष 2008-09 को आधार वर्ष के रूप में लेने से घरेलू उद्योग की लागत-एवं कीमत में कोई विस्मयकारी अंतर नजर नहीं आता है।
- vi. घरेलू उद्योग की कीमतों में परिवर्तन संबद्ध आयातों की कीमतों में परिवर्तन के बिना भी संभव है। घरेलू उद्योग की कीमतें बिक्री लागत से अधिक तुलनीय है।
- vii. तुर्की से आयातों से कोई कीमत मंदी नहीं हुई है क्योंकि जब भी तुर्की से कीमतों में कमी आई, घरेलू उद्योग की कीमतें बढ़ गयी तथा इसके विपर्यय हुआ।
- viii. रूस से आयातों की कीमतों में पर्याप्त वृद्धि हुई है और अब वे कम होकर वर्ष 2007-08 से कुछ उच्चतर स्तर पर हैं। घरेलू उद्योग की कीमतों में उतना परिवर्तन नहीं आया जितना रूस की कीमतों में आया।
- ix. घरेलू उद्योग के उत्पादन में 20 प्रतिशत वृद्धि के अनुरूप घरेलू उद्योग की बिक्री में 18 प्रतिशत तक वृद्धि हुई। सर्वाधिक वृद्धि निर्यात बिक्री में हुई है। घरेलू उद्योग की क्षमता, मांग की तुलना में कम है, तद्वारा, घरेलू उद्योग को जरूरत पड़ने पर वह समस्त बिक्री घरेलू बाजार में कर सकती थी।

- x. लाभ में कमी आई है परन्तु जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई है। ब्याज में 60 प्रतिशत तक वृद्धि हुई, पी बी आई टी ने आधार वर्ष की तुलना में केवल अल्प कमी दर्शायी है; तथापि, जांच की अवधि में विगत वर्ष की तुलना में सुधार दर्शाया गया है।
- xi. कीमत अधोरदन एवं कम कीमत पर बिक्री की तुलना करते समय घरेलू उद्योग द्वारा भाड़े को बिक्री कीमत तथा गैर क्षतिकारी कीमत के रूप में शामिल किए जाने की पहुंच गलत है। विधि में इस तरह के समावेशन का उपबंध नहीं है।
- xii. निर्दिष्ट प्राधिकारी को जांच करनी चाहिए कि शिकायतकर्ता वर्ष 2009 और 2010 में अधिक कर्मचारी लगाने में किस तरह समर्थ रहे और जब उन्हें क्षति हो रही थी तो वह वेतन बढ़ाने में किस तरह सक्षम रहे।
- xiii. घरेलू उद्योग की उच्च परिवहन लागत क्षति का प्रमुख कारण है। घरेलू उद्योग पश्चिमी तट पर सकेन्द्रित है और इसको भारत के अन्य भागों में परिवहन करने पर भारी लागत वहन करनी पड़ती है।
- xiv. शिकायतकर्ताओं ने कच्चे माल की लागत में उतार-चढ़ाव की जांच नहीं की है। भारतीय रुपया कमजोर होने के कारण कोक के आयात का भारतीय उत्पादकों पर नकारात्मक प्रभाव हुआ है। भारत को आने वाले 78 प्रतिशत आयात पाटनरोधी शुल्क के अध्यधीन हैं। संबद्ध देश कुल मांग का केवल 3.5 प्रतिशत कांस्टीट्यूट करते हैं। इसके अतिरिक्त जांच की अवधि के दौरान घरेलू उत्पादकों के हिस्से में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अतः केवल एकमात्र इरादा यह है सोडा ऐश की सम्पूर्ण बाजार पर कब्जा कर लिया जाए।
- xv. याचिका में दिए गए आंकड़े प्राधिकारी द्वारा विभिन्न देशों से संबंधित पिछली जांच में दिए गए अंतिम निष्कर्ष के साथ मेल नहीं खाते हैं।
- xvi. उत्पादन और बिक्री में गिरावट अल्प अवधि के लिए हुई और एक घरेलू उत्पादक द्वारा संयंत्र बंद कर दिए जाने के कारण यह एक अस्थायी घटना थी।
- xvii. आवेदक द्वारा दायर क्षति आंकड़े वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 और जांच अवधि के लिए हैं और इसमें आई वीए प्रपत्र में 2007-08 को शामिल करके परिकल्पित क्षति को बढ़ा चढ़ाकर दिखाने का स्पष्ट प्रयास किया गया है।
- xviii. दिनांक 2 जनवरी, 2013 को परिचालित वर्ष 2008-09 के क्षति आंकड़ों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि मांग में पहले वृद्धि हुई और फिर क्षति अवधि में इसमें कमी आई। तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री में कुल मांग की तुलना में उच्चतर दर पर वृद्धि हुई।
- xix. आवेदकों की क्षमता क्षति अवधि के दौरान स्थिर बनी रही। तथापि, क्षमता उपयोग में 15 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई।
- xx. सम्पूर्ण जांच अवधि में बिक्री की तुलना में उत्पादन अनुपात अत्यधिक उच्च बना रहा और इसने जांच की अवधि में भी मामूली सी वृद्धि प्रदर्शित की है। बिक्री में कोई परिकल्पित गिरावट ग्राही खपत के कारण हुई होगी।

- xxi. क्षति अवधि के दौरान क्षमता स्थिर बने रहने के कारण निवल अचल परिसंपत्तियों में लगभग 20 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है। निवल अचल परिसम्पत्तियों में इतनी अधिक वृद्धि उत्पादन क्षमता में हल्की सी वृद्धि से व्यवहार्य प्रतीत नहीं होती है।
- xxii. सभी भविष्यवाणियां भारतीय सोडा ऐश बाजार में महत्वपूर्ण वृद्धि इंगित करती हैं। निर्यातकों का अभिकथन यह स्पष्ट करता है कि किस तरह तुर्की से निर्यातों के बढ़ने की संभावना नहीं हैं।
- xxiii. संबद्ध आयातों का आयातों में 3 से 21 प्रतिशत हिस्सा है और घरेलू बिक्री मूल्य 93 से बढ़कर 115 हो गयी (अभिसूची)। बिक्री कीमत में वृद्धि होकर 89 से 95 हो गयी (अभिसूची)। लाभ में वृद्धि होकर 84 से 88 हो गयी (अभिसूची)। पारिश्रमिक 100 से बढ़कर 116 हो गया।
- xxiv. उसी अवधि में उन देशों का बाजार हिस्सा जहां शुल्क अधिरोपित था 96 प्रतिशत से कम होकर 77 प्रतिशत हो गया। यह तर्क देना निरर्थक है कि कथित क्षति तुर्की और रूस से हुए आयातों के कारण हुई।
- xxv. वर्ष 2009-10 में जब घरेलू उद्योग को बाजार हिस्से में 5 प्रतिशत की क्षति हुई तो अन्य पाटन देशों ने घरेलू उद्योग द्वारा गंवाया हुआ लगभग उतना ही बाजार हिस्सा प्राप्त कर लिया। इसके अतिरिक्त वर्ष 2010-11 में जब घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 6 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई तब, यह देखा जा सकता है कि, उन देशों ने, जिन पर पहले से शुल्क अधिरोपित था, अपना बाजार हिस्सा खो दिया।
- xxvi. जांच की अवधि के दौरान कुल मांग घरेलू उद्योग की कुल क्षमता से लगभग 21 प्रतिशत अधिक है। साथ ही कुल आयात, कुल मांग का केवल 16 प्रतिशत है। अतः आयात अपरिहार्य है।
- xxvii. घरेलू उद्योग पर सम्पूर्ण जांच अवधि के दौरान असामान्य लागत दबाव रहा जैसे कच्चे माल तक पहुंच, अन्य सेक्टरों में खासकर सीमेंट उत्पादन, बढ़ती मांग के कारण लाइमस्टोन की उपलब्धता, लवण की कीमते।
- xxviii. सौराष्ट्र कैमिकल्स का बी आई एफ आर के अंतर्गत वित्तीय पुनर्गठन का मामला चल रहा है। इस क्षति के लिए पाटन को न तो उत्तरदायी ठहराया जा सकता है और न ही उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिए।
- xix. आयात, जो कुल बाजार हिस्से का केवल 3 प्रतिशत है, से घरेलू उद्योग को इतनी अधिक वास्तविक क्षति नहीं हो सकती है जैसा कि दावा किया गया है।
- xxx. घरेलू उद्योग कथित पाटित वस्तुओं के अलावा अन्य तथ्यों से कारित क्षति को पृथक करने में असफल रहा है। इन 'अन्य तथ्यों' में शामिल हैं चीन जन गण, ईरान ई यू, केन्या, पाकिस्तान, उक्रेन और यू एस ए से आयात जिन पर पाटनरोधी शुल्क पहले ही अधिरोपित किया जा चुका है।

xxxi. जांच की अवधि के दौरान 2,944,503 मी.टन कुल घरेलू मांग की तुलना में घरेलू उद्योग की उत्पादन क्षमता 1,961,000 मी.टन थी। अतः, घरेलू उद्योग द्वारा अधिकतम क्षमता उपयोग प्राप्त कर लिए जाने पर भी 983,503 मी.टन का घाटा होता। अतः अंतिम प्रयोक्ताओं को संबद्ध वस्तु का आयात किए जाने के अलावा कोई अन्य विकल्प ही नहीं बचा था।

xxxii. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में सतत वृद्धि हुई है जुलाई, 2011 और सितम्बर, 2011 के बीच जांच की अवधि के दौरान कुछ कमी को छोड़कर, जिसे घरेलू उद्योग द्वारा की गई सुनियोजित बंदी के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।

xxxiii. घरेलू उद्योग की बिक्री में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि हुई है।

xxxiv. लाभप्रदायकता में दावा किए गए गिरावट का मुख्य कारण इस तथ्य में निहित है कि आधार वर्ष 2007-08 और 2008-09 घरेलू उद्योग के लिए सर्वोत्तम वर्ष रहे हैं, जब इसे भारी लाभ हुआ। सी एच सी एल ने अपनी वर्ष 2010-11 की वार्षिक रिपोर्ट में वर्ष के दौरान निष्पादन में सुधार का दावा किया है।

xxxv. संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता निरंतर बढ़ती रही।

xxxvi. टाटा कैमिकल्स की वर्ष 2010-11 की वार्षिक रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि कीमत दबाव के बावजूद टाटा कैमिकल्स ने उच्चतर घरेलू बिक्री प्रापण दर्ज किया है और वर्ष 2009-10 की तुलना में वर्ष 2010-11 में अधिक उत्पादन हुआ है।

xxxvii. जी एच सी एल की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार भारत में घरेलू सोडा ऐश उत्पादकों की मुख्य चिंता दोहरी है- कच्चेमाल एवं ऊर्जा की बढ़ती लागत तथा भौगोलिक अवस्थापन का नुकसान

xxxviii. निरमा की वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक घरेलू उद्योग के समक्ष उपस्थित समस्या निजी प्रवृत्ति की है। घरेलू उद्योग को इसकी एकता पर ध्यान देने तथा संभारतंत्रीय लागत एवं ऊर्जा समस्या को दूर करने के लिए जागरूक व्यवसाय प्रक्रियायें क्रियान्वित करने की जरूरत है।

xxxix. संबद्ध देशों से आयात तथा घरेलू उद्योग कथित क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध मौजूद नहीं है क्योंकि संबद्ध देशों का कुल बाजार हिस्सा केवल तीन प्रतिशत है और अन्य सात देशों से पाटन पहले से ही मौजूद है। मूल्यहास और ब्याज लागत में वृद्धि घरेलू उद्योग को क्षति का कारण हो सकती है।

xi. निरमा ने ऐसा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है कि ग्राही उद्देश्यों के लिए आयातों का प्रयोग क्यों किया जा रहा है।

xii. याचिका में यह कहा गया है कि याचिकाकर्ताओं ने आई बी आई एस और डी जी सी आई एंड एस दोनों के आंकड़ों का प्रयोग किया है, परंतु निर्यात कीमत का परिकलन करने के लिए केवल डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों का ही प्रयोग किया गया और इस कार्य के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

xlili घरेलू उद्योग को क्षति के लिए अन्य तथ्य उत्तरदायी है और वे अन्य तथ्य हैं उन देशों से आयात जिनपर पहले से ही शुल्क लगा हुआ है, सौराष्ट्र केमिकल्स का मामला बी आई एफ आर के पास विचाराधीन है और याचिकाकर्त्ता कंपनियों के लिए अंतरदेशीय परिवहन लागत हैं।

xlili वर्तमान मामलों के तथ्यों की जांच करते समय, उसी संबंध वस्तु के बारे में एक अन्य जांच को अंतिम रूप दिया जाना प्रक्रियाधीन था, इसलिए अनुबंध-II (iii) दो के अनुसार प्राधिकारी को क्षति का संचयी आकलन करना चाहिए।

xliv इस जांच की शुरुआत क्षति की चुनौती की जांच करने के लिए नहीं की गई थी। क्षति की चुनौती की जांच करने का निर्णय अलग से उसके समर्थन में दर्ज किये गए कारणों सहित करना अपेक्षित था जैसाकि नियम-6 (iv) में अधिदेशित है।

xlv कीमत अधोरदन के बावजूद घरेलू उत्पादक का एक संघटक अपनी कीमत बढ़ा सकता है इससे आयात कीमतों और घरेलू उत्पादक की घरेलू बिक्री और उत्पादन के बीच कारणात्मक संबंध की कमी प्रदर्शित होती है।

xlvi घरेलू उद्योग में अब डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों का प्रयोग किया है जबकि इसने अपने आवेदन और अद्यतन सूचना में डी जी सी आई एंड एस तथा आई बी आई एस से आंकड़ों की संयुक्त जानकारी ली है। पूर्व निर्धारित परिणामों पर पहुंचने के लिए कार्यनीतिक स्रोतों का प्रयोग किया गया है।

xlvii घरेलू उद्योग ने सुनवाई के दौरान यह स्वीकार किया है कि उसकी क्षमता मांग की तुलना में अधिक है। विगत में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस आधार पर कई मामले समाप्त किये हैं कि संयंत्रों का कम उपयोग किये जाने से क्षति हुई है अथवा उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है।

xlviii घरेलू उद्योग के एन एस आर की तुलना एन आई पी के साथ भी की जानी चाहिए।

xlix घरेलू उद्योग ने एक स्थान पर स्वीकार किया है कि उसे भौगोलिक नुकसान हुआ है और यह की परिवहन लागत उत्पादन लागत का एक बड़ा हिस्सा बनता है तथा कुछ मामलों में इसने इस तथ्य से मना किया और यह दावा किया है कि घरेलू उद्योग के लिए यह लाभदायक स्थिति है।

i वास्तविक क्षति के दावा का कोई साक्ष्य मौजूद नहीं है। इसके अतिरिक्त देशी क्षमता का दावा यह सुझाव देने के लिए अपर्याप्त है कि वास्तविक क्षति की चुनौती मौजूद है।

ii पाटित आयातित से हुई क्षति की मात्रा का आकलन आवश्यक किया जाना चाहिए और इसे अन्य तथ्यों से होने वाली क्षति से पृथक किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

46. प्राधिकारी द्वारा किया गया क्षति विश्लेषण विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गए प्रस्तुतिकरणों का निम्नवत निराकरण करता है:-

i. इस तर्क के संबंध में कि यह दावा गलत है कि नये निवेश की योजना बनाना कठिन है क्योंकि वार्षिक रिपोर्टें नये निवेशों से भरी पड़ी हैं, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वार्षिक रिपोर्टों में तैयार की गई और रिपोर्ट की गई निवेश योजनाएं उत्पाद के विगत निष्पादन पर आधारित हैं और उत्पाद तथा कंपनी के अच्छे निष्पादन पर निर्भर हैं और इसलिए इसे विरोधाभासी विवरण नहीं कहा जा सकता है।

ii. इस तथ्य के संबंध में कि कुछ शिकायतकर्ताओं की वार्षिक रिपोर्टों में कंपनियों ने कंपनी को होने वाले लाभ की बात कही है जबकि याचिका में लाभ प्रदायकता में गिरावट का दावा किया गया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति पैरामीटरों का विस्तृत विश्लेषण यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को लाभ, निवेश पर आय, नकदी प्रवाह आदि के संबंध में मौजूदा क्षति अवधि के दौरान क्षति हुई है।

iii. इस तर्क के संबंध में कि याचिका कर्ता ने प्राधिकारी को कोई ऐसा विश्लेषण प्रदान नहीं किया है जो संबद्ध आयातों के प्रभाव को उन देशों से किये गये आयातों के प्रभाव से पृथक दिखाने में प्राधिकारी की मदद करता जहां से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम में घरेलू उद्योग द्वारा पाटित आयातों के अलावा अन्य स्रोतों से होने वाली क्षति को पृथक करने की जरूरत नहीं है। अन्य देशों से होने वाले पाटन न होने वाले आयातों के कारण हुई क्षति को विधि के अंतर्गत पृथक करने की जरूरत है।

iv. इस तर्क के संबंध में कि टाटा केमिकल्स में क्षति विश्लेषण को शामिल किया जाना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि टाटा केमिकल्स ने जांच शुरुआत अधिसूचना का जवाब नहीं दिया है और इस कारण प्राधिकारी ने रिकार्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम जानकारी के आधार पर अपनी कार्रवाई की है।

v. इस तर्क के संबंध में कि याचिकाकर्ताओं ने कीमत अधोरदन विश्लेषण में परिवहन लागत को शामिल करके गलती की है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा कीमत अधोरदन का विश्लेषण करते समय घरेलू कीमतों के संबंध में परिवहन लागत को जोड़ा नहीं गया है।

vi. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिये गये इस तर्क के संबंध में कि कारित क्षति परिवहन लागत के कारण हुई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ में कमी आयी है। लाभ में यह कमी तैयार उत्पाद की परिवहन लागत के कारण नहीं आयी है क्योंकि तैयार उत्पाद में परिवहन लागत को न तो लागत में और न ही कीमत में शामिल किया जाता है। अतः, घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह में आयी गिरावट परिवहन लागत के कारण नहीं हुई है।

vii. इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग द्वारा कीमत अधोरदन और कम बिक्री की तुलना करते समय भाड़े को बिक्री कीमत तथा एन आई पी में शामिल किया जाना एक बड़ी भूल थी, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उन्होंने एन आई पी का निर्धारण करने को शासित

करने वाले पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-3 में निर्धारित उपबंधों का अनुकरण किया है और यह डीजीएडी की प्रक्रिया के अनुरूप है। तदुसार, घरेलू उद्योग द्वारा व्यय किये गये भाड़े को उनकी एन आई पी में शामिल नहीं किया गया है।

viii. इस तर्क के संबंध में कि क्षति और क्षति की चुनौती दोनों का निर्धारण एक ही जांच में नहीं किया जा सकता है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस तर्क में कोई दम नहीं है। नियमों में क्षति के सभी तीनों रूपों अर्थात् वास्तविक क्षति, वास्तविक क्षति की चुनौती और उद्योग के अवस्थापन में वास्तविक मंदन की जांच करने की अनुमति प्रदान करते हैं।

ix. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग द्वारा अलग-अलग स्तरों पर विभिन्न आंकड़ों का प्रयोग किया है और क्षति आंकड़ों को सुनवाई से ठीक एक दिन पहले तथ्य पत्र के जरिये अद्यतन किया है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्त्ताओं ने सुनवाई के दौरान अपनी क्षति के दावे के अनुपूरक के रूप में 2007-08 के लिए (आधार वर्ष से एक वर्ष पूर्व) और सितम्बर, 2012 (जांच की अवधि के पश्चात की अवधि के लिए) के लिए जानकारी को शामिल करके अतिरिक्त जानकारी प्रदान की है। पक्षकारों के लिए यह सामान्य बात है कि वे उनके द्वारा संगत समझी जाने वाली अतिरिक्त जानकारी प्रदान करें। तथापि प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के लिए केवल संगत अवधि से संबंधित जानकारी पर ही विचार किया है।

x. ईस्तानबुल केमिकल्स एसोसिएशन जो 63 देशों को निर्यात करता है के इस दावे के संबंध में कि क्या कोई ए डी डी/सी वी डी जांच शुरू की गई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उपलब्ध जानकारी के अनुसार अब तक सोडा ऐश के संबंध में कोई मामला शुरू नहीं किया गया है।

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II पैरा(iii) में उपबंध है कि यदि विचाराधीन उत्पाद का एक से अधिक देशों द्वारा आयात के मामले को पाटनरोधी जांच के अधीन एक साथ लाया गया है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी इन आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन कर सकते हैं, इस मामले में यह निर्धारण किया जाता है कि :-

i. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन का मार्जिन दो प्रतिशत से अधिक है जैसा कि निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान मद के आयात का तीन प्रतिशत है या जहां पृथक पृथक देशों का निर्यात 3 प्रतिशत से कम है तो सामूहिक रूप से यह आयात समान वस्तु के आयातों का सात प्रतिशत से अधिक बनता है।

ii. आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन, आयातित वस्तु और उसके समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के मद्देनजर उपर्युक्त है।

48. इस संबंध में प्राधिकारी ने यह पाया है कि :

- i. प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमा से अधिक है;
- ii. प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा ऊपर निर्धारित सीमा से अधिक है;
- iii. आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन उपयुक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से किया गया निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तु के साथ प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा करता है। यह निम्नलिखित से स्पष्ट है:

क. संबद्ध देशों से उत्पादकों द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु एक जैसी हैं और उनकी तुलना घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद से की जा सकती है। दूसरे शब्दों में, विभिन्न संबद्ध देशों से आयात की जा रही संबद्ध वस्तुएं और घरेलू उद्योग द्वारा आपूरित वस्तु परस्पर समान वस्तु हैं।

ख. कुछ ऐसे सामान्य पक्षकार हैं जो विभिन्न स्रोतों से आयातित माल और घरेलू सामग्री दोनों का समान रूप से प्रयोग करते हैं। अतः आयातित और घरेलू सामग्री का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा है।

ग. संबद्ध देशों से निर्यातकों और घरेलू उद्योग ने समान उत्पाद की समान अवधि में समान ग्राहकों को बिक्री की है। बिक्री सरणियां परस्पर तुलनीय हैं।

घ. प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा काफी अधिक है।

ड. उपभोक्ता क्रय निर्णय विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत कीमतों के आधार पर करते हैं।

49. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी तुर्की और रूस से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव का संचयी आकलन करना आयातित उत्पाद और उसके समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में उपयुक्त समझते हैं।

50. पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-11 में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) और इन वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव दोनों की वास्तविक जांच करने का प्रावधान है। पाटित आयातों के प्रभाव की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह परीक्षण करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन अथवा खपत से संगत रूप से पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटित आयातों का कीमत पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह परीक्षण करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत अधोरदन किया गया है,

अथवा इन आयातों के प्रभाव से कीमतों का अन्यथा भारी मात्रा में निग्रहण हो रहा है, अथवा वे कीमतों को बढ़ने से रोक रही हैं, जो अन्यथा पर्याप्त मात्रा में हुई होती।

51. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) निम्नलिखित उल्लेख है:-

“संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों तथा उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले अन्य सभी कारकों जिसमें बिक्री, लाभ, आउट-पुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता के उपयोग में प्राकृतिक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले तथ्यों, पाटन के मार्जिन की वास्तविक मात्रा तथा नकदी प्रभाव पर संभावित नकारात्मक प्रभाव, माल सूची, रोजगार, वेतनवृद्धि, पूंजीनिवेश उगाहने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाना शामिल होगा।”

52. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने अनुबंध-II (iv) तथा उसके अधीन बने नियमों के अनुसार ऐसे अन्य तथ्यों पर भी विचार किया है जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री प्रमात्रा, भंडार, लाभ प्रदायकता, निवल बिक्री प्रापण, पाटन की मात्रा और उसका मार्जिन आदि।

मांग तथा बाजार हिस्सा

53. संबद्ध वस्तु की घरेलू खपत/ मांग का आकलन करने के उद्देश्य के लिए भारत में कुल आयातों ने घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को शामिल किया गया है तथा उसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

क्र. सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि जुलाई, 2010- सितम्बर, 2011	जांच की अवधि- वार्षिकीकृत
1	रूस	मी.टन	1,456	1,008	7,307	36,027	28,822
2	तुर्की	मी.टन	3,504	16,580	48,627	70,262	56,209
3	अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है	मी.टन	351,475	531,119	368,335	525,452	420,362
4	अन्य देश	मी.टन	2,120	7,249	9,416	27,559	22,047

5	घरेलू उद्योग की बिक्री गाही सहित	मी.टन	1,184,655	1,203,057	1,414,416	1,736,174	1,388,939
6	अन्य भारतीय उत्पादक	मी.टन	615,044	675,481	691,884	864,855	691,884
7	गाही सहित आकलित मांग	मी.टन	2,158,254	2,434,494	2,539,985	3,260,330	2,608,264

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मांग में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

झ. पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव
आयात की मात्रा और बाजार हिस्सा

55. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या उत्पादन के संगत रूप से या भारत में खपत के रूप में भारी वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के उद्देश्य के लिए प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस से प्राप्त आयात आकड़ों पर भरोसा किया है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा का विश्लेषण निम्नलिखित है:-

क्र. सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि- वार्षिकीकृत
1	कुल आयात	मी.टन	358,555	555,956	433,685	659,300	527,440
2	रूस से	मी.टन	1,456	1,008	7,307	36,027	28,822
3	तुर्की से	मी.टन	3,504	16,580	48,627	70,262	56,209
3	कुल संबद्ध देश	मी.टन	4,960	17,588	55,934	106,289	85,031
4	संबद्ध आयातों की प्रवृत्ति						
5	रूस	सूची	100	69	502	1,980	1,980
6	तुर्की		100	473	1,388	1,604	1,604
7	संबद्ध देश		100	355	1,128	1,714	1,714
8	अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है	मी.टन	351,475	531,119	368,335	525,452	420,362
9	अन्य देश	मी.टन	2,120	7,249	9,416	27,559	22,047

	मांग में बाजार हिस्सा						
10	आकलित मांग	मी.टन	2,138,254	2,434,494	2,539,985	3,260,330	2,608,264
11	आकलित मांग	%	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
12	रूस	%	0.07	0.04	0.29	1.11	1.11
13	तुर्की	%	0.16	0.68	1.91	2.16	2.16
14	संबद्ध देश	%	0.23	0.72	2.20	3.26	3.26
15	अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है	%	16.29	21.82	14.50	16.12	16.12
16	अन्य देश	%	0.10	0.30	0.37	0.85	0.85
17	घरेलू उद्योग	%	54.89	49.42	55.69	53.25	53.25
18	अन्य भारतीय उत्पादक	%	28.50	27.75	27.24	26.53	26.53

56. प्राधिकारी नोट करते हैं संबद्ध देशों से आयात विपरीत मात्रा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं जो निम्नलिखित विश्लेषण से स्पष्ट है:

- आयातों में आधार वर्ष से..... तक में 4960 मी.टन की तुलना में समग्र रूप से जांच की अवधि में 85031 मी.टन की वृद्धि (वार्षिकीकृत आधार पर)। यह वृद्धि वास्तविक और महत्वपूर्ण है।
- हालांकि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में सोडा ऐश की मांग में लगभग 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, परंतु समसामयिक अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में लगभग 1714 गुणा वृद्धि हुई है।
- संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात में भारत में संबद्ध वस्तु की मांग की तुलना में काफी वृद्धि हुई है।
- संबद्ध देशों का भारत में उत्पाद की मांग में बाजार हिस्सा बढ़ा है।

ज. आयातों का कीमत प्रभाव

57. पाटित आयातों का कीमतों पर प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को इस तथ्य पर विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा पर्याप्त मात्रा में कीमत अधोरदन किया गया है अथवा क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का पर्याप्त मात्रा में निग्रहण किये जाने पर पड़ेगा अथवा क्या इससे कीमतों में वृद्धि रुकेगी, जो अन्यथा काफी मात्रा में हुई होती। पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव का परीक्षण कीमत अधोरदन, कीमत निग्रहण और कीमत मंदन, यदि कोई, के संदर्भ में किया गया है।

कीमत अधोरदन

58. इस तथ्य का निर्धारण करने के लिए क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन हो रहा है प्राधिकारी ने आयातों की उतराई कीमत की घरेलू उद्योग के सकल बिक्री प्रापण से तुलना की है। प्राधिकारी ने निवल बिक्री प्रापण का निर्धारण बिक्री कीमत पर विचार, कर एवं शुल्क, छूट, डिस्काउंट और कमीशन का अपवर्जन करते हुए किया है। इस परिकलन में घरेलू उद्योग की समस्त बिक्री मात्रा को शामिल किया गया है। आयातों की उतराई कीमत का निर्धारण भारित औसत सी आई एफ आयात कीमत, एक प्रतिशत उतराई प्रभार और लागू आधारभूत सीमा शुल्क पर विचार करते हुए किया है। निवल बिक्री प्रापण और आयातों की उतराई कीमत के बीच तुलना की गई थी। प्राधिकारी ने भारित औसत कीमत अधोरदन का निर्धारण पाटित आयातों द्वारा किया है।

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत अधिक कम है जो यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन किया जा रहा है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

क्र.सं.	देश/निर्यात	उतराई कीमत	निवल बिक्री कीमत	कीमत अधोरदन		रेंज
		रु./मी.टन	रु./मी.टन	रु./मी.टन	%	%
1	तुर्की	10,550	***	***	***	15-25
2	रूस	12,276	***	***	***	05-15

60. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के आयातों की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है इसके परिणाम स्वरूप कीमत अधोरदन हुआ है।

कम कीमत पर बिक्री

61. निम्नलिखित तालिका से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

क्र.सं.	देश/निर्यात	उतराई कीमत	निवल बिक्री कीमत	कीमत अधोरदन		रेंज
		रु./मी.टन	रु./मी.टन	रु./मी.टन	%	%
1	तुर्की	10,550	***	***	***	20-30
2	रूस	12,276	***	***	***	10-20

कीमत निग्रहण/अवनमन

62. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटित आयात घरेलू कीमतों का निग्रहण/अवनमन कर रहे हैं, प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया कि क्या इन आयातों के प्रभाव से कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण हो रहा है अथवा ये कीमतों को बढ़ने से रोक रही है जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता।

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
1	बिक्री लागत	रुपये/मी.टन	***	***	***	***
2	बिक्री कीमत	रुपये/मी.टन	***	***	***	***
	प्रवृत्ति					
3	बिक्री लागत	इंडेक्स	100	92	100	105
4	बिक्री कीमत	इंडेक्स	100	89	91	95

63. उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में बिक्री लागत में वृद्धि हुई है परन्तु आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत में कमी आयी है। इससे कीमत निग्रहण का संकेत मिलता है जिसके कारण घरेलू उद्योग बिक्री की लागत में वृद्धि होने के साथ-साथ बिक्री कीमत में वृद्धि करने में सक्षम नहीं हो सका।

64. यह देखा गया है कि अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराई गई जानकारी यह दर्शाती है कि वास्तव में उक्त अवधि के दौरान बिक्री की लागत में वैश्विक रूप से वृद्धि हुई है। व्यापार पत्रिकाओं में उल्लिखित जानकारी यह दर्शाती है कि इस अवधि के दौरान लागत में वृद्धि को देखते हुए उत्पाद की कीमत में वैश्विक रूप से वृद्धि हुई है।

ट. घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर

65. पाटन रोधी नियमावली का अनुबंध-II यह अपेक्षा करता है कि क्षति का निर्धारण करने में इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का उद्देश्यपरक परीक्षण अंतर्गस्त होगा। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में यह प्रावधान किया गया है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों और उन कारकों का उद्देश्य परक और पक्षपातरहित मूल्यांकन शामिल होगा जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, इसमें बिक्री, लाभ, आउट-पुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश से अर्जन अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट, घरेलू कीमतों के प्रभावित करने वाले तथ्य,

पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी झवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, माल-सूची, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूंजीगत निवेश उगाहने की क्षमता शामिल है।

66. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति पैरामीटरों की निम्नलिखित जांच की गई:-

i. घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग

क्र. सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
1	सकल क्षमता	मी.टन	1,961,000	1,961,000	1,961,000	2,451,250	1,961,000
2	समायोजित क्षमता	मी.टन	1,954,973	1,866,000	1,961,000	2,451,250	1,961,000
3	उत्पादन	मी.टन	1,286,473	1,349,724	1,562,627	1,940,884	1,552,707
4	उत्पादन घाटा	मी.टन	6,027	53,544	-	-	-
5	सकल उत्पादन	मी.टन	1,292,500	1,403,268	1,562,627	1,940,884	1,552,707
6	क्षमता उपयोग-वास्तविक	%	65.60%	68.83%	79.69%	79.18%	79.18%
7	समायोजित क्षमता उपयोग	%	65.91%	71.56%	79.69%	79.18%	79.18%

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान समान क्षमता अनुरक्षित की है। इसके अतिरिक्त, इस उत्पाद के बाजार पर वर्ष 2008-09 के दौरान मंदी का भी थोड़ा प्रभाव पड़ा और इस अवधि के दौरान इसकी मांग स्थिर हो गई। चूंकि, घरेलू उद्योग को उत्पादन की क्षति अन्य तथ्यों के कारण हुई है और प्राधिकारी को घरेलू उद्योग द्वारा अन्य तथ्यों के कारण हुई क्षति को पृथक करना अपेक्षित है इसलिए प्राधिकारी ने अन्य तथ्यों के कारण उत्पादन की क्षति के लिए उसका समायोजन करने के पश्चात उत्पादन तथा क्षमता उपयोग की जांच की है। उत्पादन को होने वाले नुकसान का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा क्षतिग्रस्त हुए उत्पादन के दिनों की संख्या और उस अवधि के लिए क्षमता उपयोग जब घरेलू उद्योग उक्त वर्ष के दौरान प्रचालन में था, पर विचार करते हुए किया गया है।

68. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के वास्तविक क्षमता उपयोग में सुधार प्रदर्शित हुआ है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है।

69. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा वर्तमान अवधि में क्षमता में कोई वृद्धि नहीं की गई है। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने स्वयं क्षमता उपयोग में वृद्धि को स्वीकार किया है और इस कारण उसने क्षति का कोई दावा नहीं किया है और न ही क्षमता उपयोग में वृद्धि का यह आशय है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

ii. घरेलू उद्योग की बिक्री

विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि- वार्षिकीकृत
घरेलू बिक्री	मी.टन	1,038,138	1,092,500	1,270,710	1,559,278	1,247,423

70. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री में संपूर्ण क्षति अवधि और जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि संबद्ध वस्तु की भारत में मांग में पर्याप्त और सकारात्मक वृद्धि होने और घरेलू उद्योग के साथ पर्याप्त क्षमता उपलब्ध होने के बावजूद पाटित आयातों का उच्च विचार हिस्सा लगातार बना रहा। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री पर विचार ग्राही खपत का अपवर्जन करने के पश्चात् किया है।

iii. बाजार हिस्सा

71. पाटित आयातों का घरेलू बिक्री और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर प्रभाव की निम्नलिखित रूप से जांच की गई है और यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वर्ष 2009-10 में गिरावट आयी और तदोपरांत उसमें सुधार हुआ। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि उनका बाजार हिस्सा घरेलू उद्योग द्वारा पहले प्राप्त किये गये बाजार हिस्से के स्तर से अब भी न्यूनतर था जैसाकि विगत जांच के अंतिम निष्कर्ष से स्पष्ट होता है।

क्र. सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
1	आकलित मांग		2,158,254	2,434,494	2,539,985	3,260,330
2	संबद्ध देश	%	0.23	0.72	2.20	3.26
3	अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है	%	16.29	21.82	14.50	16.12
4	अन्य देश	%	0.10	0.30	0.37	0.85
5	घरेलू उद्योग	%	54.89	49.42	55.69	53.25
6	अन्य भारतीय उत्पादक	%	28.50	27.75	27.24	26.53

iv. लाभ, निवेश पर अर्जन और नकदी प्रभाव

72. घरेलू उद्योग की वर्ष 2008-09 से जांच की अवधि के लिए संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री के बारे में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत, बिक्री कीमत और लाभ/ हानि की जांच की गई। तथ्य परक स्थिति निम्नलिखित तालिका में दी गई है।

(आंकड़े सूचीबद्ध हैं)

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
1	बिक्री कीमत	रुपये/मी.टन	100	89	91	95	95
2	बिक्री लागत	रुपये/मी.टन	100	92	100	105	105
3	लाभ/हानि	रुपये/मी.टन	100	75	49	53	53
4	घरेलू बिक्री पर लाभ	लाख रुपये	100	79	61	63	63
5	कर पूर्व लाभ	लाख रुपये	100	83	78	83	83
6	कर पूर्व लाभ प्रति यूनिट	रुपये/मी.टन	100	79	64	69	69
7	नकद लाभ	लाख रुपये	100	84	86	88	88
8	नकद लाभ प्रति यूनिट	रुपये/मी.टन	100	80	70	73	73
9	निवेश पर अर्जन	%	100	91	71	75	75

73. प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

- घरेलू बाजार में उत्पादन और बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग के प्रति इकाई लाभ में क्षति अवधि के दौरान भारी गिरावट आयी है।
- घरेलू उद्योग के घरेलू बिक्री प्रापण में उस गति से वृद्धि नहीं हुई है जिस गति से लागत में वृद्धि हुई है।
- घरेलू उद्योग के लाभ में क्षति जांच अवधि के दौरान गिरावट आयी है, जिसके परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू बिक्री से अर्जित लाभ में जांच की अवधि के दौरान कमी हुई है।
- जबकि, क्षति अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में लगभग 20 प्रतिशत वृद्धि हुई है परन्तु घरेलू बिक्री से होने वाले लाभ में 36 प्रतिशत से अधिक नुकसान हुआ है।
- लाभ में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में लगी पूंजी पर निवेश में उक्त अवधि के दौरान कमी हुई है।
- घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित नकद लाभ में अवधि के दौरान कमी आयी है। नकद लाभ में यह कमी नकद लाभ प्रति यूनिट और घरेलू बिक्री पर नकद लाभ दोनों रूपों में आयी है।
- हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की ब्याज लागत में बढ़ोतरी हुई है। तथापि, यह नोट किया गया है कि क्षति अवधि के दौरान ब्याज पूर्व लाभ में भी काफी गिरावट प्रदर्शित हुई है। अतः, यह देखा जा सकता है कि लाभ में कमी ब्याज लागत में बढ़ोतरी के कारण नहीं हुई है।

viii. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि में नवीन निवेश किया है। तथापि, इस निवेश निवेश के बावजूद इस अवधि के दौरान कर-पूर्व लाभ में 36 प्रतिशत तक गिरावट आयी है।

ix. जैसाकि नीचे नोट किया गया है, उत्पादकता में उक्त अवधि में सुधार प्रदर्शित हुआ है और इस कारण निवेश पर अर्जन में कमी उत्पादकता में संभावित कमी के कारण नहीं आयी है। उत्पादकता में सुधार से सामान्यतः निवेश पर अर्जन में सुधार होता है जबकि यहां उसमें गिरावट आयी है।

v. घरेलू कीमतों के प्रभावित करने वाले तथ्य

74. संबद्ध देशों से और अन्य देशों से आयात कीमत, लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य तथ्य जिनका घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव पड़ने की संभावना हो पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध देशों से आयातित सामग्री की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमत अधोरदन हुआ है। अन्य देशों से आयात अत्यधिक उच्चतर कीमतों पर किये गये हैं। इस उत्पाद का कोई व्यवहार्य स्थानापन्न नहीं है। इस उत्पाद की मांग में भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई थी और इस लिए वह घरेलू उद्योग द्वारा सामना किये गए कीमत अधोरदन के लिए उत्तरदायी तथ्य नहीं है। घरेलू उद्योग की कीमतों के लिए एक प्रमुख उत्तरदायी तथ्य संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की आयात कीमत और घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत है। जैसा कि सूचना से स्पष्ट होता है कि, घरेलू उद्योग को वह कीमत से प्रभारित करने से रोका गया जिससे तर्क संगत लाभ प्राप्त होता।

vi. माल सूची

75. संबद्ध वस्तु की माल सूची से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये हैं:-

क्र. सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
1	अथ भंडार	मी.टन	34,385	56,394	28,423	26,647
2	इति भंडार	मी.टन	56,394	28,423	58,454	60,394
3	औसत भंडार	मी.टन	45,390	42,409	43,438	43,520
4	भंडार प्रति दिन बिक्री	दिन	16	8	14	14
5	माल सूची मूल्य	लाख रुपये	***	***	***	***

76. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की माल सूची वर्ष 2008-09 में काफी अधिक थी और इसमें वर्ष 2009-10 में गिरावट आयी। तथापि अन्य देशों से उत्पादों, जिन

पर इस समय पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित है, के पाटन से माल सूची में वृद्धि हुई। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग उच्च स्तर की माल सूची धारित करता रहा।

vii. रोजगार एवं वेतन

77. रोजगार और वेतन से संबंधित स्थिति निम्नलिखित है:-

(आंकड़े सूचीबद्ध हैं)

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
1	कर्मचारियों की संख्या	संख्या	100	102	95	96	96
2	वेतन	लाख रुपये	100	101	148	146	146

78. घरेलू उद्योग द्वारा सेवा में लिए गए कर्मचारियों की संख्या में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में कमी आयी है। इस प्रकार यह देखा जाता है कि उक्त अवधि में प्रति यूनिट रोजगार की क्षमता में गिरावट आयी है, इसके बावजूद घरेलू उद्योग की लाभ प्रदायकता में हास हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा भुगतान किये गये वेतन में वृद्धि हुई है।

viii. उत्पादकता

79. उत्पादकता से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित हैं:-

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
1	उत्पादन प्रति दिन	मी.टन	3,525	3,698	4,281	4,254	4,254
2	उत्पादन प्रति कर्मचारी (सूचीबद्ध)	मी.टन	100	103	128	126	126

80. यह नोट किया जाता है कि जांच की अवधि में आधार वर्ष की तुलना में प्रतिदिन उत्पादन और प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

ix. पाटन की मात्रा

81. एक संकेतक के रूप में कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को कितनी अधिक क्षति कारित की जा सकती है, पाटन की मात्रा यह दर्शाती है कि संबद्ध देशों की तुलना में निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक और महत्वपूर्ण है।

x. वृद्धि

82. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की आयात मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। बिक्री और उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग का विकास सकारात्मक था। तथापि, बिक्री कीमत में नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

xi. निधि उगाहने की क्षमता

83. घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद पर भारी राशि का निवेश किया है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि निवेश संबंधी निर्णय उद्योग के दीर्घावधि व्यवसाय निर्णय को दर्शाता है और न कि यह पाटित आयातों के विपरीत प्रभावों को।

ठ. वास्तविक क्षति संबंधी निष्कर्ष

84. उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों में भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन और खपत के संबंध में तथा समग्र रूप से पर्याप्त वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी अधोरदन किया जा रहा है। आयात भारी मात्रा में कीमत निग्रहण कर रहे हैं। घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, नकद लाभ में यथा परिलक्षित नकद प्रवाह, निवेश पर अर्जन और माल सूची, जोकि महत्वपूर्ण एवं वास्तविक हैं, के रूप में गिरावट आयी है। हालांकि उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्री के रूप में निष्पादन में सुधार हुआ है तथापि, लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन के कारण निष्पादन में गिरावट से उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्री में सकारात्मक विकास को कम कर दिया है। अतः, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ड. अन्य ज्ञात तथ्य तथा कारणात्मक संबंध

85. आर्थिक क्षति, पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर मात्रा एवं कीमत प्रभाव की मौजूदगी का कम कीमत पर इसकी बिक्री और कीमत निग्रहण तथा अवनमन, प्रभावों, भारतीय नियमावली तथा पाटनरोधी संबंधी करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य संकेतक पैरामीटरों की मौजूदगी की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने यह देखने के लिए निम्नवत जांच की कि क्या पाटित आयातों के अलावा कोई अन्य ऐसे तथ्य हैं जिसने घरेलू उद्योग की क्षति में अपना योगदान दिया हो।

(क) तृतीय देशों से आयातों की मात्रा और कीमत

86. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों के अलावा अन्य देशों और उनदेशों से सम्बद्ध वस्तु के आयातों, जिनके आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगा है, का आयातों की मात्रा पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। अतः, यह नहीं विचारा जा सकता है कि अन्य देशों के आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई होगी। पुनः यह नोट किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि अन्य पाटित आयातों से घरेलू उद्योग

को होने वाली क्षति को पृथक किया जाना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमों में यह अपेक्षा की जाती है कि प्राधिकारी पाटित आयातों के अलावा अन्य जात तथ्यों के क्षतिकारी प्रभावों को पृथक करें। उन देशों से आयात जिन पर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित है, भी पाटित आयात है और इस कारण अन्य पृथक्करण किया जाना अपेक्षित नहीं है।

(ख) मांग का संकुचन तथा खपत की प्रणाली में परिवर्तन

87. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान लगभग 26 प्रतिशत की वृद्धि प्रदर्शित हुई है। खपत पद्धति में किसी तरह के परिवर्तन का भी कोई संकेत नहीं है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति बेशी क्षमता के कारण हुई। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग उपलब्ध मांग की सीमा तक अपनी क्षमता का उपयोग पाटित आयातों के कारण करने में अक्षम रहा है।

(ग) प्रायोगिकी विकास

88. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रायोगिकी में ऐसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों का कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सके।

(घ) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा तथा व्यापार प्रतिबंधक प्रक्रियायें

89. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुएं मुक्त रूप से आयात योग्य हैं। आवेदक संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादक हैं और वे महत्वपूर्ण घरेलू उत्पादन तथा बिक्री के लिए उत्तरदायी हैं। इसके अतिरिक्त, घरेलू उत्पादकों के बीच, बाजार अर्थव्यवस्था के बजाय कोई अन्य बोधगम्य प्रतिस्पर्धा भी नहीं है।

3. घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

90. निम्नलिखित तालिका में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निर्यात निष्पादन को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
1	निर्यात बिक्री	मी.टन	79,776	174,424	117,830	191,991	153,593

91. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यात बिक्रियों में आधार वर्ष से वृद्धि हुई है और इसलिए, निर्यात में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग के लिए क्षति का युक्ति युक्त तथ्य नहीं हो सकता है। जहां तक निर्यात लाभप्रदायकता का संबंध है वर्तमान प्रयोजन के लिए घरेलू उद्योग की लाभप्रदायक के लिए केवल घरेलू प्रचालनों पर विचार किया गया है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि देश में पाटन कीमतों पर उत्पाद के बढ़ते आयात को देखते हुए इसे मजबूरन निर्यात करना पड़ा।

(च) घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता

92. यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान उत्पादन प्रति दिन और उत्पादन प्रति कर्मचारी के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है। अतः उत्पादकता में संभावित गिरावट को घरेलू उद्योग को क्षति करने वाला तथ्य नहीं माना जा सकता है।

93. अतः, यह नोट किया जाता है कि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात तथ्यों से घरेलू उद्योग को क्षति प्रदर्शित नहीं होती है। प्राधिकारी ने जांच की है कि क्या उत्पादन के पाटन से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। निम्नलिखित पैरामीटर यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति हुई है:

(क) संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई जिसके कारण भारत में उक्त उत्पाद की मांग में पाटित आयातों का हिस्सा बढ़ गया। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को अपनी बाजार हिस्से की पहले वाली स्थिति प्राप्त करने से वंचित किया गया।

(ख) आयात से घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी अधोरदन हो रहा था। इसके परिणामस्वरूप आयातों के कारण घरेलू उद्योग के समक्ष कीमत निग्रहण की समस्या उत्पन्न हो रही थी।

(ग) इस कीमत निग्रहण का परिणाम यह हुआ कि लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश से अर्जन के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में कमी आने लगी। अतः उत्पादन के पाटन से घरेलू उद्योग को लाभ नकदी प्रवाह और निवेश से अर्जन के रूप में उसके निष्पादन में कमी आई।

(घ) घरेलू उद्योग को मालसूची में भारी वृद्धि का सामना करना पड़ रहा है।

94. अतः, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति उठानी पड़ी।

आर्थिक क्षति की चुनौती

95. आर्थिक क्षति के अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति की चुनौती उत्पन्न हो रही है। अतः, घरेलू उद्योग को क्षति की चुनौती के संबंध में उनके दावे की विधिक उपबंधों के आलोक में जांच की गई। इस संबंध में निम्नलिखित को संगत पाया गया है:

- i. संबद्ध देशों से पाटित आयातों में वृद्धि की दर बहुत अधिक है।
- ii. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि तुर्की और रूस के उत्पादकों की क्षमता बहुत ज्यादा है। प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली प्रत्युत्तरों की विसृत जांच की गई। यह नोट किया गया कि एक निर्यातक का बहुत उच्च क्षमता उपयोग है और उसकी उपयोग न की गई क्षमताएं बहुत कम हैं।
- iii. आयात कीमतें भारत में बिक्री कीमतों की तुलना में बहुत कम हैं। अतः, कीमत में इस अंतर से आयातों की मांग में संभावित वृद्धि हुई।
- iv. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि संबद्ध निर्यातकों के पास मुक्त रूप से भारी प्रयोज्य उत्पादन क्षमताएं हैं जिनसे यह संकेत मिलता है कि अन्य अतिरिक्त निर्यातों को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को देखते हुए उनसे भारतीय बाजारों में पर्याप्त रूप से संवर्धित पाटित निर्यात हुए।

96. अतः, यह देखा जा सकता है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति की चुनौती उत्पन्न हुई है।

द. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

97. प्राधिकारी ने यह पाया कि पाटन रोधी शुल्क का अधिरोपण करने से भारत में उत्पादन के कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से भारतीय बाजारों में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से पाटन प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ दूर होगा, यह घरेलू उद्योग को होने वाले पतन से बचायेगा तथा उपभोक्ताओं को सम्बद्ध वस्तु की व्यापक च्वाइस की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता करेगा। पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य, सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का उन्मूलन करना होता है जिससे कि भारतीय बाजार में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित हो सके जो देश के आम हित में है। इसलिए, पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से संबद्ध देशों से

आयातों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं होगा और अतः, इससे उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता, अब भी, आपूर्ति के दो या उससे अधिक स्रोत बनाए रख सकते हैं।

ण. क्षति और क्षति मार्जिन की मात्रा
क्षति मार्जिन

98. जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबंध वस्तु की प्राधिकारी द्वारा निर्धारित गैर-क्षतिकारी कीमत की तुलना सम्बद्ध देशों से निर्यातों की उतराई कीमत से की गई। निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नलिखित है:-

विवरण	यूनिट	तुर्की							रूस
		ईटीआई सोडा	ईटीआई से विनकाम विनकाम से भारत	भारित औसत	सोडा सनायी	सोडा सनायी से विनकाम, विनकाम से भारत	भारित औसत	असहयोग कर्ता	
आयातों की उतराई कीमत	अमेरिकी डालर/मी.टन	***	***	***	***	***	***	***	***
एनआईपी	अमेरिकी डालर/मी.टन	***	***	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	अमेरिकी डालर/मी.टन	***	***	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	%	***	***	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन % रेंज		20-30	30-40	20-30	15-25	5-15	10-15	40-50	5-15

त. प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण

घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण

99. प्रकटन विवरण जारी किए जाने के पश्चात घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया गया:-

- प्रत्युत्तरदाता निर्यातक द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली प्रत्युत्तर उन्हें व्यक्तिगत पाटन मार्जिन के लिए हकदार बनाने हेतु पूरी तरह से अपर्याप्त रहे।
- शुरुआती प्रश्नावली प्रत्युत्तरों के पश्चात निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना नियम 7 और व्यापार नोटिस का उल्लंघन करते हुए स्पष्टतः केवल गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई है।
- प्रत्युत्तरदाता निर्यातक के बारे में सामान्य मूल्य सकल रूप से न्यून है।

- iv. उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा की गई व्यापारिक बिक्री पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए विचार नहीं किया जा सकता है।
- v. संबद्ध पक्षकारों को जिन कीमतों पर बिक्री की गई वह असम्बद्ध पक्षकारों को की गई बिक्री कीमत से बिल्कुल भिन्न है। अतः, यह बिक्रियां व्यापार के सामान्य अनुक्रम में नहीं हैं और इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने से इनका अपवर्जन कर दिया जाना अपेक्षित है।
- vi. प्रत्येक प्रत्युत्तरदाता उत्पादक के लिए बिक्री की दो सरणियां हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी को दो उत्पादकों के लिए भारित औसत पाटन मार्जिन तथा भारित औसत पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करनी चाहिए।
- vii. घरेलू बिक्रियों में मालसूची में उल्लिखित लागत में ईटीआई का कीमत समायोजन दावा स्वीकार करने योग्य नहीं है। इसके विपरीत, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि निर्यात अधिकांशतः निर्यातोन्मुखी हैं, इसलिए यह कीमत समायोजन निर्यात कीमत से किया जाना चाहिए।
- viii. यह स्पष्ट नहीं है कि क्या निर्यात कीमत का दावा भारतीय सीमा शुल्क आंकड़ों में रिपोर्ट की गई आयात कीमत की अच्छी तरह से संपुष्टि करती है या नहीं। भारतीय सीमा शुल्क आंकड़ों में रिपोर्ट की गई इन कीमतों पर विचार करते हुए यह स्पष्ट है कि पाटन का मार्जिन, निर्धारित पाटन मार्जिन से कहीं अधिक है।
- ix. याचिकाकर्ताओं को प्रकटन विवरण के माध्यम से दावा किए गये कीमत समायोजन की प्रकृति के बारे में पहली बार जानकारी मिली है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत को निर्यात के साथ सामान्यतः जुड़े कई व्ययों के कारण कोई कीमत समायोजन नहीं किया गया है।
- x. निर्धारित की गई गैर क्षतिकारी कीमत बहुत कम है। कच्चे माल एवं उपयोगी वस्तुओं की लागत पर विचार विगत में सर्वोत्तम प्राप्त स्तरों पर नहीं किया जाना चाहिए। ग्राही इनपुट पर विचार उसके सामान्य मूल्य पर किया जाना चाहिए। वास्तविक कच्चे माल और उपयोग खपत पर विचार किए जाने की जरूरत है। वास्तविक उत्पादन लागत का निर्धारण किए जाने की जरूरत है। लगाई गई पूंजी का निर्धारण अचल परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य पर या अचल परिसम्पत्तियों के कम से कम सकल मूल्य पर किय जाना चाहिए।
- xi. आयातों की उतराई कीमत के साथ तुलना करने से पहले भाड़े का एन आई पी में जोड़ा जाना चाहिए।
- xii. पाटनरोधी शुल्क निर्धारित प्रमात्रा में तथा अमरीकी डालर में अभिव्यक्त होना चाहिए।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात विवरण

100. प्रकटन विवरण जारी कर दिए जाने के पश्चात उत्पादकों/ निर्यातकों/आयातकों/ और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया है:

- i. डी जी ए डी के निर्णयों की पूर्णतया जांच करने और उन पर अपनी टिप्पणियां देने के लिए तुर्किस पक्ष के लिए दो दिन पर्याप्त नहीं हैं।
- ii. टिप्पणियों की समीक्षा करने और अंतिम जांच परिणाम जारी करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी हेतु केवल एक कार्य दिवस का समय छोड़ना न्यायिक कल्प अधिनिर्णय प्रक्रिया का उपहास किए जाने के बराबर है।
- iii. टाटा कैमिकल्स से संबंधित जानकारी, जिस पर भरोसा किया गया, प्रदान नहीं की गई। यदि टाटा कैमिकल्स के लिए सार्वजनिक अधिकार क्षेत्र के मामले उपलब्ध हैं तो प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वह ऐसी जानकारी को "सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी" के रूप में रिकार्ड पर लें।
- iv. किसी अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पहले प्राधिकारी को टी सी एल के लाभ, उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता आंकड़ों की पूरी तरह से जांच करनी चाहिए तथा यह प्रदर्शित करना चाहिए कि उन्होंने टाटा कैमिकल्स के संबंध में कौन से आंकड़े प्राप्त किए हैं।
- v. प्राधिकारी को एसोसिएशन को पूरे-पूरे आंकड़े प्राप्त कराने के लिए खासकर इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मजबूर कर देना चाहिए कि आवेदकगण एसोसिएशन के सदस्य नहीं हैं बल्कि स्वयं एसोसिएशन हैं।
- vi. प्राधिकारी ने गोपनीयता के संबंध में उठाए गए सभी संगत मुद्दों की, उनको उत्तर दिए बिना, पूरी तरह से अनदेखी कर दी है।
- vii. जांच शुरुआत अनुचित और बिना किसी पुष्ट प्रमाण के है और यह जांच की अधूरी अवधि पर आधारित है।
- viii. यदि 80 प्रतिशत से अधिक बिक्रियां लाभप्रदायक हैं तो सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए सभी घरेलू बिक्रियों पर विचार किया जाना चाहिए। सामान्य मूल्य का परिकलन ई टी आई सोडा, तुर्की की सभी घरेलू बिक्रियों का प्रयोग करते हुए करना चाहिए।
- ix. भारी भारवाही ट्रकों पर मूल्य ह्रास विशेष रूप से घरेलू ग्राहकों की सेवा के लिए निर्दिष्ट किया जाता है जिसे घरेलू बिक्रियों के लिए आबंटित किए जाने की जरूरत है।
- x. लागत जांच से नीचे की बिक्रियों का परिकलन या तो निर्यातक के लिए परिशिष्ट-8 में प्रत्यक्ष बिक्री व्यय समायोजन पर विचार करते हुए करना चाहिए या लागत जांच निष्पादित करते समय फैक्टरी-बाह्य कीमतों के बजाय सीधे-सीधे सकल कीमतों का प्रयोग करते हुए करना चाहिए।
- xi. सहयोग न करने वाले असम्बद्ध उत्पादकों और निर्यातकों के लिए भारित औसत शुल्क की सिफारिश अभूतपूर्व यादृच्छिक और विधि के बिना किसी प्राधिकार के है।
- xii. सघन एवं लाइट सोडा ऐश को एक दूसरे के समान वस्तु के रूप में नहीं माना जा सकता है।

- xiii. गैर आरोपण का सिद्धांत, प्राधिकारी को कथित पाटन के लिए जांच किए जा रहे स्रोतों से आयात तथा उन स्रोतों से आयात जिन पर पहले से ही पाटन रोधी शुल्क लगा है, समान समझने की अनुमति प्रदान नहीं करता है।
- xiv. तुर्की से कोई पाटन नहीं है, हालांकि, रिकार्ड में उपलब्ध आंकड़े दर्शाते हैं कि रूस से पर्याप्त मात्रा में पाटन हुआ है। अतः, रूस और तुर्की के लिए प्रतिस्पर्धा की स्थितियां अलग-अलग हैं और इस कारण इन देशों से आयातों को संचयी रूप से आकलन करना अनुचित है।
- xv. लाभ में कमी नवीन निवेश होने से लागत में बढ़ोत्तरी के कारण हो सकती है। निवेश से जुड़ी लागत/ व्यय के क्षतिकारी प्रभाव को कथित पाठित आयातों से की गई क्षति से पृथक किया जाना चाहिए।
- xvi. घरेलू उत्पादक अपनी कीमतें कैसे बढ़ा सकते थे जब उनकी लागत में अत्यधिक कमी आ रही थी यद्यपि तुर्की से कोई कीमत अधोरदन या कीमत निग्रहणकारी प्रभाव नहीं हुआ है।
- xvii. रूस के लिए सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत निर्धारण का खुलासा नहीं किया गया है। तुर्की के सहयोग न करने वाले निर्यातकों के लिए भी पाटन मार्जिन का खुलासा नहीं किया गया है।
- xviii. लगाई गई पूंजी पर 22 प्रतिशत अर्जन की अनुमति दिए जाने के कारणों का खुलासा नहीं किया गया है।
- xix. डीजीएडी द्वारा एक ही जांच में क्षति और क्षति की चुनौती दोनों का निर्धारण नहीं किया जा सकता है।
- xx. बाजार हिस्सा, बिक्री और क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है। लाभप्रदायकता में गिरावट दर्शाने वाली प्रवृत्ति इस तथ्य के कारण है कि आधार वर्ष 2008-09 घरेलू उद्योग के लिए आपवादिक रूप से बहुत अच्छा वर्ष था, जब इसने रिकार्ड लाभ का अर्जन किया था।
- xxi. यह स्पष्टीकरण गलत है कि वाक्यांश "कथित" से स्वयं यह आशय निकलता है कि नियम 2(ख) के अंतर्गत निर्यातकों के साथ संबंधों की जांच कथित अर्थात् जांचके अधीन सम्बद्ध देशों के मूल के संबद्ध आयातों के बारे में है।
- xxii. आवेदक द्वारा संशोधित अद्यतन जानकारी प्रदान कराने में 69 दिनों की देरी को जांच के लिए घातक के रूप में माना जाना चाहिए।
- xxiii. सेण्ट गोबैन ग्लास इंडिया लिमिटेड ने तर्क दिया है कि प्राधिकृतीकरण टीपीएम, सालिसिटर्स एंड कन्सल्टेन्ट्स की ओर से दायर किया गया था, जबकि अद्यतन याचिका टीपीएम कन्सल्टेन्ट्स द्वारा दायर की गई थी।
- xxiv. प्राधिकारी यह निर्धारण करने के लिए समुचित विश्लेषण प्रस्तुत करने में असफल रहे कि क्या सम्बद्ध ग्राहकों को बिक्रियां व्यापार के सामान्य अनुक्रम के दौरान की गई हैं या नहीं प्राधिकारी को चाहिए कि वह सम्बद्ध पक्षकारों को की गई बिक्री शामिल करते समय कीमत तुलनात्मकता में अंतर पर उचित ध्यान दें। सम्बद्ध पक्षकारों को की गई बिक्री का अपवर्जन करने का अर्थ यह होगा कि तुर्की में सोडा ऐश के सबसे बड़े ग्राहक को इस जांच

से विलग कर दिया गया है। प्राधिकारी को कीमत के साथ-साथ सम्बद्ध कम्पनियों को की गई बिक्री की मात्रा तथा अन्य संगत तथ्यों पर विचार करना चाहिए।

xxv. सामान्य मूल्य का परिकलन करते समय माल सूची में उल्लिखित लागत पर विचार करना चाहिए। निवल वित्तीय अस्य का समायोजन यूनिट लागत के साथ किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

101. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है। प्राधिकारी ने पाया है कि प्रस्तुतिकरणों को बार-बार दोहराया गया है। प्राधिकारी ने उन पर इस अधिसूचना के संगत शीर्षकों के अंतर्गत समुचित रूप से विचार किया गया है। फिर भी प्राधिकारी ने प्रस्तुतिकरणों की वर्तमान जांच से संगत पाई गई सीमा तक जांच की है जो निम्न लिखित है :-

- i. इस तर्क के संबंध में कि प्रकटन विवरण का प्रत्युत्तर दिए जाने के लिए दिया गया समय अपर्याप्त है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्रकटन विवरण में प्रकटन विवरण जारी किए जाने तक अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों के आधार पर अनिवार्य तथ्यों का उल्लेख है। इसमें किसी नए तथ्य को प्रस्तुत नहीं किया गया है। चूंकि प्रकटन टिप्पणी के अनुसरण में दिए गए अधिकांश उन प्रस्तुतिकरणों को प्राथमिकतः दोहराया गया है जिन पर प्रकटन विवरण में पहले ही विचार किया जा चुका है, इसलिए दिया गया समय पर्याप्त है। तथापि, प्राधिकारी ने इन सभी प्रस्तुतिकरणों की अंतिम जांच परिणाम करते समय यथोचित रूप से पुनः जांच की है।
- ii. टीसीएल के लिए आंकड़ों के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्क के संबंध में प्राधिकारी ने कारपोरेट कार्य मंत्रालय के समक्ष प्रस्तुत की गई लागत अनुपालन रिपोर्ट में यथा उपलब्ध जानकारी का विश्लेषण किया है। वह जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है और उसका प्रकटन नहीं किया जा सकता है।
- iii. गोपनीयता के बारे में दिए गए तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि गोपनीयता की अनुमति, गोपनीयता का दावा करने वाले पक्षकारों के गोपनीयता के दावों से संतुष्ट होने पर ही दी गई।
- iv. इस तर्क के संबंध में कि ई टी आई सोडा के सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए सभी घरेलू बिक्रियों पर विचार किया जाना चाहिए, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उन्होंने सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए व्यापार के सामान्य अनुक्रम में की गई सभी वास्तविक घरेलू बिक्रियों को शामिल किया है तथापि इसका "कुल बिक्रियों" के स्थान पर त्रुटिबश "लाभप्रदायक बिक्रियों" के रूप में उल्लेख कर दिया गया।

- v. इस तर्क के संबंध में कि भारी भारवाही ट्रकों से संबंधित मूल्य हास का समायोजन घरेलू बिक्रियों से किया जाना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने भाड़े के संबंध में समायोजन करने की अनुमति परिशिष्ट-1 में किए गए दावे के अनुरूप दी है।
- vi. इस तर्क के संबंध में कि व्यक्तिगत पाटन मार्जिन और शुल्क की सिफारिश की जानी चाहिए प्राधिकारी का विचार है कि यह सुनिश्चित करने के लिए, कि कोई शुल्क अपवंचन नहीं किया गया है, उत्पादक/ निर्यातक और व्यापारी/ निर्यातक का भारत और अंतर्राष्ट्रीय एक उचित व्यवस्था है।
- vii. लाभप्रदायकता में गिरावट को दर्शाने वाली प्रवृत्ति इस तथ्य के कारण आई कि आधार वर्ष 2008-09 आपवादिक रूप से एक अच्छा वर्ष था, प्राधिकारी को इसमें कोई महत्व प्रदर्शित नहीं हुआ क्योंकि उन्हीं आवेदकों के साथ सम्बद्ध वस्तु के अंतिम जांच परिणाम जैसा कि पहले अधिसूचित किया गया, यह दर्शाता है कि वर्ष 2006-07 की तुलना में वर्ष 2008-09 में लाभप्रदायकता में गिरावट आई है।
- viii. सम्बद्ध बिक्रियों का अपवर्जन किए जाने संबंधी तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि सोडा सनायी ने सम्बद्ध ग्राहकों को बिक्री की है और इन बिक्रियों की कीमत गैर-असम्बद्ध ग्राहकों को की गई बिक्री कीमत से बहुत कम (. . %) है। इसके अतिरिक्त, निर्यातक इस तथ्य को पर्याप्त साक्ष्य देने में असमर्थ रहा कि यह बिक्रियां व्यापार के सामान्य अनुक्रम में की गई हैं।
- ix. इस तर्क के संबंध में कि टीपीएम कन्सल्टेंट प्रस्तुतिकरण दायर करने के लिए एक प्राधिकृत निकाय नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि टीपीएम सालिसिटर्स एंड कन्सल्टेन्ट्स का प्रतिनिधित्व भी उसी व्यक्ति द्वारा किया जाता है।
- x. इस तर्क के संबंध में कि मालसूची में उल्लिखित लागत का समायोजन पर विचार किया जाना चाहिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने डीजीएडी में पिछली सुस्थापित प्रक्रियाओं का अनुसरण किया है और यथापेक्षित समायोजन किया है।
- xi. इस तर्क के संबंध में कि निर्यात कीमतें सीआईएफ कीमतों को संपुष्ट नहीं करती हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने यथा-सत्यापित निर्यात कीमतों को लिया है।
- xii. इस तर्क के संबंध में कि विभिन्न खातों में कीमत समायोजन नहीं किया गया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने डीजीएडी में प्रचलित पिछली सुस्थापित प्रक्रियाओं का अनुसरण किया है और यथापेक्षित समायोजन किए हैं।
- xiii. इस तर्क के संबंध में कि निर्धारित की गई एनआईपी बहुत न्यून है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुसार किया गया है।

निष्कर्ष

102. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने तथा रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का भारत को निर्यात इसे जुड़े सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया, जिसके परिणाम-स्वरूप उत्पाद का

पाटन हुआ। संबद्ध वस्तु के बारे में घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति उठानी पड़ी। यह आर्थिक क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है।

सिफारिश

103. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच प्रारंभ की गई और सभी हितबद्ध पक्षकारों को इसकी सूचना दी गई तथा निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंधों के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना देने के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान किया गया। पाटन, क्षति और उनके कारणात्मक संबंध के बारे में पाटनरोधी नियमावली में दी गई शर्तों के अनुरूप जांच शुरू करके एवं आयोजित करके और इन पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को पहुंचाई जाने वाली आर्थिक क्षति तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन स्थापित करके, प्राधिकारी का विचार है कि पाटन तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाली क्षति को दूर करने के लिए निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना अपेक्षित है। अतः, प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निम्नलिखित स्वरूप और ढंग से निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना जरूरी समझते हैं और उसका अधिरोपण करने की सिफारिश करते हैं।

104. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए जाने वाले न्यूनतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन के न्यूनतर के बराबर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं जिससे कि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति दूर की जा सके। तदनुसार, तुर्की और रूस के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर अधोलिखित तालिका में विनिर्धारित राशि के अनुरूप निर्णायक पाटनरोधी शुल्क, केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी अधिसूचना की तारीख से अधिरोपित करने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	उप शीर्षक	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मापन की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	रूस	रूस	कोई	कोई	35.99	मी.टन	अमरीकी डालर
2	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	रूस	पाटन रोधी शुल्क के अधिधीन देशों के अलावा कोई अन्य देश	कोई	कोई	35.99	मी.टन	अमरीकी डालर
3	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	पाटन रोधी शुल्क के अधिधीन देशों के अलावा कोई अन्य देश	रूस	कोई	कोई	35.99	मी.टन	अमरीकी डालर

4	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	तुर्की	तुर्की	सोडा सनायी ए.एस	सोडा सनायी ए.एस	18.39	मी.टन	अमरीकी डालर
5	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	तुर्की	तुर्की	सोडा सनायी ए.एस	विनकाम कम्पोजिटिज लिमिटेड	18.39	मी.टन	अमरीकी डालर
6	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	तुर्की	तुर्की	ई टी आई सोडा	ई टी आई सोडा	21.00	मी.टन	अमरीकी डालर
7	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	तुर्की	तुर्की	ई टी आई सोडा	विनकाम कम्पोजिटिज लिमिटेड	21.00	मी.टन	अमरीकी डालर
8	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	तुर्की	तुर्की	ऊपर क्रम सं. 4 से 7 में उल्लिखित संयोजन के अलावा कोई अन्य संयोजन		75.16	मी.टन	अमरीकी डालर
9	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	तुर्की	पाटन रोधी शुल्क के अध्यधीन देशों के अलावा कोई अन्य देश	कोई	कोई	75.16	मी.टन	अमरीकी डालर
10	283620	डाइ- सोडियम कारबोनेट (सोडा ऐश)	पाटन रोधी शुल्क के अध्यधीन देशों के अलावा कोई अन्य देश	तुर्की	कोई	कोई	75.16	मी.टन	अमरीकी डालर

105. इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए आयातों का उतराई मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमा शुल्क द्वारा यथानिर्धारित करनिर्धारणीय मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों के अतिरिक्त अन्य सभी सीमा शुल्क शामिल होंगे।

106. केन्द्रीय सरकार के आदेश के विरुद्ध सीमा शुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद कर तथा सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष अपील की जा सकेगी।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 9th February, 2013

FINAL FINDINGS

Subject : Final Findings in the anti-dumping duty investigation concerning imports of Di-sodium Carbonate (Soda Ash) originating in or exported from Turkey and Russia-reg.

No. 14/3/2011-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time, and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof :

A. Background of the case:

1. Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the Act), and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the Rules) thereof, the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), received a written application from Alkali Manufacturers' Association of India (AMAI), Delhi, on behalf of the domestic industry, namely, M/s Nirma Ltd, Bhavnagar, Gujarat, M/s Saurashtra Chemicals Ltd, Porbandar, Gujarat, M/s Gujarat Heavy Chemicals Ltd, Noida and M/s DCW Ltd, Mumbai alleging dumping of Soda-Ash (hereinafter referred to as subject goods), originating in or exported from Turkey and Russia (hereinafter referred to as the subject countries).
2. Whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 10th February, 2012 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the Sub-Rule 6(1) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to consider recommendation of the anti-dumping duty.

B. PROCEDURE

3. The procedure described below has been followed in this investigation:

- i. The Authority notified the Embassies of the subject countries in India about the receipt of application before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule 5(5) of the Anti-dumping Rules.
- ii. The Authority issued a public notice dated 10th February, 2012, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.
- iii. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the Applicant) and industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with Rule 6(2) of the Anti-dumping Rules.
- iv. The Authority also forwarded a copy of the said public notice to all the known importers/users of the subject goods in India (whose details were made available by the Applicant) and advised them to submit their views in writing within forty days from the date of the communication.
- v. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and the Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) of the Anti-dumping Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- vi. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:
 - a. AS KIMYA SANAYI VE TICARET LTD STI
 - b. BEKA YAPI MUHENDISLIK
 - c. BROC DIS TICARET LTD STI,
 - d. HRT CO
 - e. ZEYIN CHEM
 - f. KORUMA,
 - g. KAZAKH ITHALAT IHRACAT SAN. TIC. LTD STI
 - h. AS KIMYA SANAYI VE TICARET LTD STI
 - i. RHWL KIMYA SAN TIC LTD STI
 - j. MAYA PETROL,
 - k. KANAS CHEMICALS INDUSTRY & TRADE INC.
 - l. LONZERCHEM
 - m. MYRA INTERNATIONAL TRADE
 - n. BENTONITE TRADE CO.
 - o. SISECAM,
 - p. ETI MINE WORKS GENERAL MANAGEMENT.
- vii. In response to the Initiation Notification, the following exporters/producers/associations from the subject countries responded:

- a. Istanbul Kimyevi Maddeler ve Mamülleri Ihracatçileri Birliği, Turkey
- b. Soda Sanayii A.S, Turkey
- c. ETI Soda, Turkey
- d. M/s Vincom Commodities Limited, UK

viii. Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:

- a. Gujarat Guardian Ltd
- b. Advance Surfactants India Ltd
- c. Float Glass India Ltd
- d. A.R. Stanchem Pvt. Ltd
- e. Alembic Glass Industries Ltd
- f. Hind Silicates Pvt. Ltd.
- g. Deepak Nitrite Ltd
- h. Taurus Chemicals (P) Ltd
- i. Hindusthan National Glass & Ind. Ltd
- j. Kishoresons Detergents Pvt. Ltd
- k. Hindusthan Uniliver Ltd
- l. J.J. Patel Industries
- m. Procter & Gamble Hygiene & Health Care
- n. Shriram Bharath Chemicals & Detergents (P) Ltd
- o. Albright Morarji & Pandit Ltd
- p. Modern Glass Industries,
- q. Advatech Industries Pvt. Ltd
- r. Adarsh Kanch Udyog (P) Ltd
- s. Saint Gobain Glass Ltd.
- t. Advance Lamp Component & Table Wares Pvt Ltd
- u. U.P. Glass Manufacturer Syndicate
- v. Pragati Glass Pvt. Ltd
- w. Asahi India Glass Ltd
- x. Gora Mal Hari Ram Ltd
- y. Fena (P) Ltd
- z. Rohit Surfactants(P) Ltd/
- aa. Shree Unicon Organics Pvt Ltd
- bb. Astral Glass Pvt. Ltd
- cc. Pollachi Chamber Of Commerce & Industry
- dd. BDJ Glass Industries Pvt Ltd
- ee. Vasundhara Rasayan Ltd
- ff. Power Soap Ltd
- gg. Shri Hari Industries
- hh. Shanti Nath Detergents(P) Ltd
- ii. Hindusthan National Glass & Industries Ltd
- jj. Advance Home & Personal Care Ltd
- kk. Jagatjit Industries Limited
- ll. S. Kumar Detergent P. Ltd
- mm. Advance Surfactants India Ltd

- ix. In response to the Initiation Notification, the following importers/users have responded:
- a. The All India Glass Manufacturers' Federation
 - b. Hindustan National Glass & Industries Ltd
 - c. HNG Float Glass Ltd
 - d. Piramal Glass Ltd
 - e. AGI Glaspac
 - f. Hindustan Unilever Ltd
 - g. Detergent Manufacturers Association of India
 - h. Gujarat Guardian Ltd
- x. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xi. Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- xii. Investigation was carried out for the period of investigation (POI) starting from 1st July, 2010 to 30th September, 2011. The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period April 2008-March 2009, April 2009-March 2010, April 2010-March 2011 April and the POI.
- xiii. The Authority held an Oral Hearing on 03.01.2013 to hear the interested parties orally. The interested parties present at the time of hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally and were also given an opportunity to file rejoinder to the views expressed by other interested parties. The written submissions and rejoinders received from interested parties have been considered to the extent considered relevant.
- xiv. A Disclosure Statement containing the essential facts which would form the basis for the Final Findings was issued on 06.02.2013.
- xv. The submissions made by the interested parties post public hearing and post Disclosure Statements considered relevant by the Authority have been addressed in this Final Findings Notification.
- xvi. *** in this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xvii. The exchange rate adopted for the POI is 1 US \$ =Rs 45.87.

C. Product Under Consideration and Like Article

Submissions made by the domestic industry

4. Following are the submissions made by the domestic industry with regard to the product under consideration (PUC) and like article during the course of the investigation:

- i. The product under consideration in the present application is Disodium Carbonate commonly known as Soda Ash. Soda Ash can be produced through synthetic route and natural route. The present petition includes all types and forms of Soda Ash. Further, it is produced in two forms, viz. Light Soda Ash and Dense Soda Ash.
- ii. These two forms of soda ash are like articles. The issue has been examined by the Authority in an earlier concluded investigation against China. The Authority has considered the two grades as a single product. Light and Dense Soda Ash clearly constitute one product. The Authority has held the same view in the previous investigation conducted on the subject goods.

Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties

5. Following submissions are made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to product under consideration and like article during the course of the investigation:

- i. Dense soda ash and light soda ash are not like articles as the bulk density is different.
- ii. Their production process, storage, uses and functions differ. These products cannot be used interchangeably.
- iii. Their technical specifications and tariff classification also differ.
- iv. Import statistics also contain transactions relating to Sodium Bicarbonate or Baking Soda. If Baking Soda is to be considered as part of PUC, then the initiation of present investigation is bad in law as the petition filed by the domestic industry is incomplete and incorrect. On the other hand, if Baking Soda is not to be considered as part of PUC, then also the import statistics and resultant injury analysis provided by domestic industry loses its value.

Examination by the Authority

6. The product under consideration in the present investigation is Disodium Carbonate, also known as Soda Ash, having chemical formula Na_2CO_3 . Soda Ash is produced in two forms - Light Soda Ash and Dense Soda Ash. The difference in the two types is of bulk density. Further, it can be produced through

synthetic route and natural route, known as dissolution process. The present investigation includes all types and forms of Soda Ash.

7. Soda Ash is an essential ingredient in the manufacture of detergents, soaps, cleaning compounds, sodium based chemicals, float glass, container and specialty glasses, silicates and other industrial chemicals. It is also widely used in textiles, paper, metallurgical industries and desalination plants. Soda Ash is classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act under subheading No.2836.20. The customs classification is, however, indicative only and is not binding on the scope of the present investigation.
8. The interested parties have submitted that Light and Dense Soda Ash are different products due to different bulk density and not used interchangeably by the customers. They also submitted that the cost and price of the two grades are different. The Authority had earlier found in the anti dumping investigations relating to imports of the subject goods from Kenya, USA, etc. that the difference of cost and price between light and dense soda ash is negligible and the information available in the public domain shows that light soda ash can be used in manufacture of sodium salts, glass, sodium silicates, bi-chromate, bi-carbonates, etc. apart from the most common usage in the detergent sector. Similarly, while dense soda ash is used mainly for manufacturing glass, it can also find usage in manufacture of detergents, silicates, ultramarine, bi-chromate, etc. The Authority notes that both the grades of soda ash, having many common usages, are technically and commercially substitutable and, therefore, form part of the product under consideration. The Authority further notes that the difference in light and dense soda ash is in bulk density only but the product characteristics, production process, manufacturing technology, raw materials, manpower, functions & uses, customs classification and pricing of the light and dense soda ash are, however, the same, although for manufacturing dense soda ash, installation of additional equipment is required. The Authority notes that although some end applications may specifically require light or dense soda ash, the bulk density or inability of some of the consumers to interchangeably use light and dense soda ash cannot render the two as dislike articles. These are merely two different forms of the same product.

9. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules provides as under:

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

10. The domestic industry claimed that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing

process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods.

11. The Authority notes that there is no significant difference in the subject goods produced by the Indian industry and those exported from subject countries. Even though the product is produced through a different route in Turkey, the subject goods produced by the Indian industry and that imported from the subject countries are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. Therefore, the Authority holds that the subject goods produced by the petitioner companies are treated as like article to the subject goods imported from the subject countries in accordance with the anti-dumping Rules.
12. As regards natural and synthetic soda ash, the Authority notes that there is no known difference in natural and synthetic soda ash in terms of product characteristics, functions and uses, customs classification and pricing of the product. The only difference is in terms of the routes of manufacturing. However, the Authority notes that difference in production process cannot render the two grades of soda ash as dislike articles, particularly when the resultant products are interchangeably used.
13. With regard to the argument that sodium bi-carbonate (baking soda) has been wrongly included in the PUC, the Authority notes that the analysis has been undertaken by considering the data as procured from the DGCI&S excluding sodium bi-carbonate.

D. Domestic Industry and Standing

14. Following submissions are made by the domestic industry with regard to domestic industry and standing during the course of the investigation:
 - i. Alleged dumped article in the instant case can only be product under consideration imported from present subject countries. The placement of word "alleged" clearly implies "subject countries". Imports from countries attracting anti-dumping duty constitute "dumped article" and not "alleged dumped article".
 - ii. Eligibility of domestic producers who are related to exporters of soda ash from third countries now attracting anti dumping duty need not be considered for the exclusion issue of Rule 2(b).
 - iii. Section 9(B) does not provide for "entire" established industry and merely provides for "any" established industry. "Any" established industry is a subset of "entire" established industry. Rules provide for consideration of "domestic industry" and not "entire domestic producers".
 - iv. Petitioner is not privy to Tata Chemicals information and therefore question of withholding information does not arise. The interested parties have assumed that Tata Chemicals is subject to direction and control of AMAI. Tata Chemicals is a member of AMAI, but is not under the control of AMAI.

15. Following submissions are made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to domestic industry and standing during the course of the investigation:
- i. Rule 2(b) requires examination of imports by domestic industry & relationship with exporters with regard to "alleged dumped article" and not subject countries. Thus in the present case, Authority is required to examine imports by domestic industry and relationship of domestic industry with exporters from all nine countries from which alleged article is being dumped.
 - ii. For the purpose of injury analysis Tata Chemicals has been excluded. In the previous investigation it was excluded as it imported the goods from subject country which is not the case at present. It constitutes 30% of the total production. Including Tata Chemicals would give a more accurate injury analysis.
 - iii. Section 9(B) and Para (i) of Annexure II mandate that domestic market and domestic producers as a whole must be examined and not just the domestic industry.

Examination by the Authority

16. Petition has been filed by the Association of the producers of the subject goods, i.e., Alkali Manufacturers' Association of India. Production by the petitioner companies constitutes a major proportion in the Indian production.
17. With regard to the submission that Rule 2(b) requires examination of imports of Domestic Industry and relationship with exporters with regard to "alleged dumped article" and not subject countries, the Authority notes that the term 'alleged' itself implies that the test of relationship with exporters under Rule 2(b) is with respect to the alleged, i.e., the subject imports originating from the subject countries under the investigation. Further, the Authority notes the information provided by the petitioners shows that there is no import of the product under consideration from other countries now subject to anti dumping duty by the parties related to the petitioning domestic producers. In particular, it is found that:
- a. DCW does not have any related producer outside India. The company has not imported the product during the POI. Also, there is no dispute with regard to the eligibility of DCW as a domestic industry.
 - b. Nirma has related producers outside India. However, there is no export by any of its related producers outside India during the present POI. Since there are no imports from related producer during the POI, the company is an eligible domestic industry under Rule 2(b). Even otherwise, the volume of exports during the period prior to POI was low and the Authority held Nirma as an eligible domestic industry in the previous investigation concerning Soda Ash.
 - c. Saukem is related to Nirma. However, Saukem constitutes eligible domestic industry for the same reasons as have been considered for Nirma.
 - d. GHCL has a related producer outside India. However, that company has not exported soda ash during the present POI. Since there are no

imports from related producer during the POI, GHCL is eligible domestic industry under Rule 2(b). Even otherwise, the volume of exports during the period prior to POI was low and the Authority held GHCL as an eligible domestic industry in the previous investigation concerning Soda Ash.

- e. Tata Chemicals Ltd. (TCL) is not a part of the petitioning companies. TCL has a related producer outside India (in Kenya) and there are continued significant imports from Kenya. However, since the company has not been included in injury analysis, the Authority considers it unnecessary to decide eligibility of TCL as a domestic industry.

18. With regard to the submission that Section 9(B) and Para (i) of Annexure II mandate that domestic market and domestic producers as a whole must be examined and not merely the domestic industry, the Authority notes that Section 9 (B) of the Customs Tariff Act specifically uses the phrase "any established industry", which does not imply entirety of the domestic producers.
19. The interested parties have argued that the information/data of Tata Chemicals (TCL) should be included in the present case for the purpose of injury determination. In view of the submissions made by the interested parties, TCL was directed to provide relevant information in the form and manner prescribed. However, the company has not provided the information. However, the Authority has procured such information from Ministry of Corporate Affairs which shows decline in Return on capital employed from 100 (Indexed figure) during 2008-09 to 66(Indexed figure) in 2009-10 and further deteriorated in 2010-11 to 36(Indexed figure). Further, the Authority notes that the domestic producers expressly supporting the application account for significantly more than 50 percent of production of the like product produced by the domestic industry. The Authority therefore holds that the domestic producers expressly supporting the application account for more than twenty five percent of the total production of the like article by the domestic industry and the petition is supported by those domestic producers whose collective output constitutes more than fifty percent of the total production of the like article produced by that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition, as the case may be, to the application. Further, petitioner companies command a major proportion of the production of the subject goods in India and for the purpose of this investigation the petitioner companies constitute domestic industry in terms of Rule 2(b).

E. Confidentiality

20. Following submissions are made by the domestic industry with regard to confidentiality during the course of the investigation:
- i. Merely because data is consolidated for three companies it does not mean that the same is not confidential. The absolute amounts of profits, ROI, cash flow are highly business sensitive information, disclosure of which will seriously prejudice the business interest of the domestic industry.

- ii. Range of indexation provided by Soda Sanayii in its exporter questionnaire response fails to provide any meaningful information. Indexed figures of several information have not been provided.
 - iii. Information for previous years has been blocked by ETI Soda which has prevented the domestic industry from defending their interests.
 - iv. Despite using indexation, the exporter has given range. Range of indexed figures should not be given when indexed information itself protects the confidentiality.
21. Following submissions are made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to confidentiality during the course of the investigation:
- i. For Section VI of the petition, only a single line statement stating that the information is business proprietary information which is not amenable to summarization, has been provided. No reason has been provided as to why the descriptive answers as well as the numerical data given in various costing formats are not amenable to summarization.
 - ii. DI cannot claim confidentiality as data is an aggregate of three companies and hence there would be no business sensitive information which would be revealed.

Examination by the Authority

22. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. The Authority made available the non confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of public file.
23. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

(1) Notwithstanding anything contained in sub-rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information. (2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible. (3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or

the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.

24. The Authority notes that the information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, the parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis
25. On the specific submission that consolidated information of domestic industry should not be allowed to be kept confidential, the Authority notes that consolidated data, if disclosed, can have adverse impact on the business interests of the domestic industry, therefore the same cannot be disclosed on actual basis.

F. Miscellaneous Submissions

26. Miscellaneous submissions made by the domestic industry are as follows:

- i. There is no legal requirement that such petition should be for the POI for which the Authority intends to initiate the investigations. As submitted before, POI in petition and POI for investigations need not be the same.
- ii. Rules provide that the petition should contain sufficient evidence of dumping, injury and casual link. This cannot certainly be considered to imply that the petition should prescribe an investigation period and contain information for the investigation period and therefore the Authority should examine that investigation period.
- iii. Committee on Anti-dumping practices nowhere prescribed that the investigating authorities should require the petitioners to provide petition for an investigation period and then the Authority should consider the same.
- iv. The interested parties received updated information on 15.04.2012 and a period of almost eight months has since expired. Admittedly, interested parties have had sufficient time to defend their interests. It is not a situation where the Authority has curtailed any interested party from making submissions after the time limits.
- v. The trend for POI figures and for annualized figures for POI cannot be different.
- vi. The data required for AD investigation should be with regard to product under consideration, for the period of investigation and injury period considered, and in respect of domestic operations only.
- vii. Information compiled from the annual report of Tata Chemicals shows that this information is not at all sufficient/useful for the present investigation.
- viii. The Authority should allow submissions only from those interested parties who have made themselves known within the time limits imposed by the Authority and who have filed submissions and information within the time limits prescribed by the Authority in the notice of initiation.

- ix. Domestic industry has provided more than adequate information and the same cannot become a ground for termination of investigation. Nor the domestic industry has truncated any information.
 - x. The volume of imports into India has actually crossed historically high levels and the dumped imports are now commanding historically highest market share. Anti-dumping duties have been actually absorbed by the exporters as would be seen from the current trend of prices.
 - xi. The domestic industry has merely given information for the POI chosen by the Authority. Gujarat Guardian & Saint Gobain are non cooperative importers/consumers. They have filed their submissions for the first time after initiation and got about nine months time to respond to the information provided by the domestic industry. Therefore no prejudice can be claimed under these circumstances.
27. Miscellaneous submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties are as follows:
- i. The Authority has failed to follow rule 5(3)(b) and has not ensured adequacy and accuracy of information provided as the Authority did not have information for the extended 3 month period.
 - ii. The Authority extended the POI by one quarter to include June11-Sept 11 to the POI, whereas the petition contained data only till June 2011. The initiation has therefore been done for a period of investigation for which adequate and accurate information had not even been provided.
 - iii. The initiation and the continuation of the investigation is illegal and without the authority of law as the information which forms a part of the initiation remained inaccessible to the interested parties. The data for the extended period which forms part of the POI cannot be kept confidential and, therefore, the analysis of both dumping and injury remained deficient. The Authority cannot request the interested parties to file the data for the POI when the Authority itself has not provided this data which has been considered in the new POI as accurate and adequate.
 - iv. Complainants have misused the ADD provision by aggressively targeting imports of soda ash and increasing their prices. Almost 97% of the import from world to India of soda ash is subject to either anti dumping measures or an ongoing investigation.
 - v. If the Authority had determined that the data were insufficient for initiation purposes, it should have had the Applicants provide additional information before initiating the investigation, and the Authority was then required to provide all interested parties with a suitably modified written application providing all the relevant evidence.
 - vi. Information in terms of initiation notification has not been received till date compelling to make limited rejoinder submissions.
 - vii. At various instances of submitting injury data, domestic industry has conveniently chosen to provide certain parameters and then withhold the same parameters at other instances, such as net fixed assets, working capital, capital employed, and productivity per employee and per day and PBIT per unit.

- viii. The trend figures provided for the annualized period as well as the 15 month period are exactly the same. It is undisputed that annualised figures and 15 month periods cannot be the same.
- ix. Tata Chemicals should be included in the injury analysis. Even though Tata Chemicals has not provided any data to DGAD, yet it is obligated to use the publically available information like annual reports and quarterly reports in determining the overall position of the Indian domestic industry.
- x. Since the POI was extended by 3 months by the Authority without information for the extended 3 months, the Authority was not in a position to verify imports or relationship with exporters of domestic industry, which is a violation of Rule 5(3)(a).
- xi. In the initiation notification, the Authority in the injury paragraph only notes of injury caused to domestic industry. However, the paragraph on POI states that threat of material injury would be examined for period beyond POI which is against the spirit of the Act and Rules.
- xii. In any case, Section 9B and Rule 11 (1) use the word "or" between injury and threat of material injury and not the word "and" which clearly shows the intention of legislature and thus it cannot be interpreted against the intent of Section 9B and Rule 11.
- xiii. Domestic industry has been given unreasonable time of 69 days for filing revised petition, without sufficient reason.
- xiv. Contrary to Trade notice 2/2004, DI has provided data from 2007-08 despite injury period being from 2008-09. Also data provided at the time of oral hearing is truncated and not in terms of initiation notification, and hence proceedings must be terminated.
- xv. There is a gap of 3 months in revised data provided by DI which has been done to suppress information.

Examination by the Authority

28. The miscellaneous submissions made by the interested parties are examined as follows:
- i. As regards the submission of the interested parties that accuracy and adequacy under Rule 5(3) (b) has not been complied with as information for the extended three month period was not available while initiating the investigation, the Authority notes that there is no legal mandate that the period of investigation considered by the Authority for undertaking detailed investigations should be the same as the period for which petition was filed. Further, the period of investigation has been chosen considering the facts and circumstances of the present case and has been appropriately chosen to cover the latest available data on the subject. The POI has been changed in view of consistent policy of the Directorate to consider the recent period for the purpose of investigation. In large number of investigations, a POI different from one proposed by the petitioners have been considered by the Authority while initiating the investigation.
 - ii. As regards the submission of the interested parties that the initiation is illegal, the Authority notes that the application contained sufficient evidence to justify initiation of the present investigation. It is also noted that the Authority called

for the information for the changed period of investigation from the domestic industry, after the initiation of investigation, which, after receipt, was placed in the public file for the interested parties to submit their comments. Interested parties have been provided ample opportunity to respond to the information provided by the domestic industry.

- iii. As regards the submission of the interested parties that complainants have misused the ADD provision by aggressively targeting imports of soda ash, the Authority notes that anti dumping investigation is not to put bar on imports of subject goods. It is only to eradicate the unfair trade practice of dumping and provide a level playing field to the domestic industry. The Authority further notes that it is only when dumped imports cause injury to the domestic industry that the anti dumping duties are imposed. The Authority also notes from the information on record that there is in fact increased volume of imports in the recent period.
- iv. As regards the submission of the interested parties that domestic Industry has provided data from 2007-08 despite injury period being from 2008-09, the Authority notes that the injury analysis in the current investigation considers data from 2008-09 onwards. The domestic industry merely provided data for longer period than required.
- v. As regards the submission of the interested parties that Tata Chemicals (TCL) information as, publically available, should be included, the Authority notes that data of TCL as obtained from Ministry of Corporate Affairs shows decline in Return on capital employed from 100 (Indexed figure) during 2008-09 to 66(Indexed figure) in 2009-10 and further deteriorated in 2010-11 to 36(Indexed figure).

Assessment of Dumping – Methodology and Parameters

G. Methodology for determination of Dumping Margin

Normal Value, Export Price and Dumping Margin

Submissions made by the domestic industry

29. The submissions made by the domestic industry with regard to the normal value; export price and dumping margin are as follows:
- i. The normal value is required to be determined in respect of like article. Like article is defined under Rule 2(d) and implies an identical article or in the absence of the same, another article closely resembling the imported article. Therefore it is appropriate to determine normal value on the basis of synthetic soda ash prices prevailing in European Union.
 - ii. Evidence of prices prevailing in Russia could be obtained by the petitioner from the journal Chlor Alkali published by Harimann Chemsult which regularly publishes prices of Soda Ash.

- iii. With regard to Turkey, Chlor Alkali does not publish prices prevailing in Turkey. It, however, publishes Soda Ash prices prevailing in Europe which is a good indicator of prices prevailing in domestic market of Turkey.
- iv. Since the journal mentions high and low prices, petitioner has adopted weighted average price and determined the normal value.

Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties

30. The submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to the normal value, export price and dumping margin are as follows:

- i. EU is an inappropriate benchmark for Turkey's soda ash domestic market. The international Journal Chlor Alkali has other more appropriate option such as Bulgaria. One of the two producers in Turkey manufactures subject goods from natural resource and, therefore, the petitioner should have chosen a market in which soda ash is produced from natural resource such as Bulgaria and the USA. That would be more representative of the Turkish market.
- ii. Prices that have been used, currency conversion factors and other details of as to how ultimately the prices have been reached is unclear.
- iii. Normal value considered on the basis of prices published in the Journal Chlor alkali which is not one of the allowed methods prescribed by the Rules.
- iv. Data filed by the cooperating exporters, i.e., ETI Soda and Soda Sanayii should be relied upon in order to come to a reliable and accurate conclusion with regard to dumping and margins allocated thereof.
- v. Soda Ash produced through synthetic process is more expensive than Natural Soda Ash, as produced in Turkey. Therefore, the normal value for Turkey cannot be determined by considering the domestic prices in EU, where a different production process is used. This is evident from the previous investigation on Soda Ash as well, wherein DGAD has determined normal values for countries employing natural process (USA) and countries employing synthetic process (EU).
- vi. The partial use of DGCI&S and IBIS data for determining export price will lead to inconsistencies and hence, the data from one source only should be used.

Examination by the Authority

NORMAL VALUE

Normal value in case of Russia

31. The Authority notes that none of the producer/exporter from Russia has submitted exporter's questionnaire response. Therefore, the Authority has relied

upon the best available information in terms of Rule 6(8) of the Rules for the determination of normal value in respect of Russia. Accordingly, the Authority determines the normal value in respect of Russia at ex-factory level on the basis of prices periodically published in Chlor Alkali, which periodically publishes the prices of Soda Ash prevailing in Russia, as US\$ ***per MT.

Normal value in case of Turkey

32. The Authority notes that two exporters from Turkey, namely, Soda Sanayii A.S and ETI Soda have submitted exporter's questionnaire response furnishing details of domestic sales of subject goods during the POI.

Soda Sanayii A.S, Turkey

33. Soda Sanayii A. S has responded and provided information. Exporter verification has been carried out by the Authority in Turkey. The cost of production of the respondent has been compared with the transaction wise domestic sales (excluding trading sales) and it was found that more than 80 % sales are profitable. The Authority also notes that exporter has made sales to its affiliated customer and these sales are at prices much lower (***%) than the prices to non-affiliated customer. Therefore, the Authority determines normal value on the basis of non-affiliated domestic sales excluding traded sales. The adjustments on account of Inland freight, insurance, interest are being allowed. Inventory carrying cost has not been allowed as per the practice followed in DGAD. Thus, the normal value is worked out as USD *** per MT.

ETI Soda, Turkey

34. ETI Soda, Turkey has responded and provided information. Exporter verification has been carried out by the Authority in Turkey. The cost of production of the respondent has been compared with the transaction wise domestic sales and it's found that more than 80 % sales are profitable. Thus, the Authority determines the normal value on the basis of total domestic sales. The adjustments on account of Inland freight, insurance, interest are being allowed. Thus, the Normal value is worked out as USD *** per MT.

EXPORT PRICE

Export price in case of Russia

35. The Authority notes that none of the exporters/producers of subject goods from Russia have responded to the Authority in the form and manner prescribed. In the absence of response from the producers/exporters from Russia, the Authority has determined the export price in respect of these countries on the basis of best available information on record in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The Authority has relied upon DGCI&S import data for the purpose of arriving at the weighted average CIF value of imports from the said countries during the POI. Adjustments on account of ocean freight, insurance, commission, port expenses,

inland freight and bank charges, as claimed by the petitioner, have been considered to arrive at the net export price of Russia. Accordingly, export price at ex-factory level for all exporters from Russia is determined as US\$ *** per MT.

Export price in case of Turkey

Soda Sanayii A.S, Turkey

36. Soda Sanayii A.S. has exported the subject goods to India directly as well as through un-related exporter M/s Vincom Commodities Limited, UK.. Export price (CIF) to India (direct exports) is determined as US\$ *** per MT as per data provided by the exporter in Appendix 2 and 3A of the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been claimed on insurance, handling, , port charges, interest and overseas freight. These adjustments have been accepted after exporter verification by the Authority in Turkey. Accordingly the export price at ex-factory level is determined as US\$ ***per MT.

37. With regard to exports by Soda Sanayii A.S through M/s Vincom Commodities Limited, UK, the Net Export Price has been determined on the basis of considering export sales to India through the following channel:-

Soda Sanayii A.S, Turkey (Producer)>>>>M/s Vincom Commodities Limited, UK (Trader)>>>>Indian customers.

38. Weighted average export price to India is determined as US\$ *** per MT as per data provided by the exporter. Price adjustments have been claimed on insurance, handling, port charges, interest and overseas freight. The Authority has admitted the adjustments claimed by the exporter, after exporter verification by the Authority in Turkey. Accordingly the export price at ex-factory level is determined as US\$ *** per MT.

ETI Soda, Turkey

39. ETI Soda has exported the subject goods to India directly as well as through Vincom Commodities Limited, UK. Weighted average export price (CIF) to India (direct exports) is determined as US\$ *** per MT as per data provided by the exporter in the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been claimed on inland freight, handling, and overseas freight. The Authority has admitted the adjustments claimed by the exporter, after exporter verification by the Authority in Turkey. Accordingly the export price at ex-factory level is determined as US\$ *** per MT.

40. With regard to exports by ETI Soda through M/s Vincom Commodities Limited, UK, the Net Export Price is has been determined on the basis of considering export sales to India through the following channel:-

ETI Soda, Turkey (Producer)>>>>M/s Vincom Commodities Limited, UK (Trader)>>>>Indian customers.

41. Weighted average export price to India is determined as US\$ *** per MT as per data provided by the exporter in the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been claimed on inland freight, handling, and overseas freight. The Authority has admitted the adjustments claimed by the exporter, after exporter verification by the Authority in Turkey. Accordingly the export price at ex-factory level is determined as US\$ *** per MT.

Non Cooperative exporters

42. No other exporter and producer from Turkey has responded to the Questionnaire. The Authority determines their Normal value & Export price based on the facts available on record.

DUMPING MARGIN

43. Comparing the aforesaid normal values and export prices, the dumping margin is determined as follows:

Sn.	Channel of Export	Producer	Exporter	Normal value	Net export price	Dumping margin		Range
				(US\$/MT)	(US\$/MT)	(US\$/MT)	%	
1A	Turkey-India	Soda Sanayii A.S	Soda Sanayii A.S	***	***	***	***	05-15
1B	Turkey-UK-India	Soda Sanayii A.S	Vincom Commodities Limited, UK	***	***	***	***	10-20
1C	Weighted average Soda Sanayii A.S				***	***	***	05-15
2A	Turkey-India	ETI Soda	ETI Soda	***	***	***	***	05-15
2B	Turkey-UK-India	ETI Soda	Vincom Commodities Limited, UK	***	***	***	***	30-40
2C	Weighted average ETI Soda				***	***	***	10-20
2D	Turkey-India	All other exporters/ and producers except the three companies mentioned above		***	***	***	***	55-65
3	Russia-India	All exporters and producers		***	***	***	***	65-75

Assessment of Injury and Examination of Causal Link

H. Injury Determination

Submissions made by the Domestic Industry

44. The submissions made by domestic industry with regard to injury and casual link are as follows:

- i. Imports have increased in absolute terms and the market share of the domestic industry has declined. Consequently, production and capacity utilization of the domestic industry has also declined.
- ii. Imports are cheaper when compared with the selling price of the domestic industry. Resultantly, the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market.
- iii. As a result of imports from the subject countries, the domestic industry is not able to increase its prices in proportion with the increase in cost. The imports were earlier depressing and now suppressing the prices of the domestic industry in the market.
- iv. There is significant decline in profitability of the domestic industry. ROI (PBIT) of the domestic industry has significantly deteriorated over the injury period. Similar is the situation of cash profit as well.
- v. Inventories with the domestic industry have increased significantly.
- vi. The growth in terms of volume parameters is far below what was expected with the increase in demand for the subject goods in India. The Indian producers added capacities, having regard to the increase in current and potential demand of the consumers in the country.
- vii. Imports from the subject countries are threatening further material injury to the domestic industry as subject exporters are holding significant freely disposable capacity indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets; import prices are significantly lower than selling price in India and significant price difference and consequent potential increase in imports is having significant depressing effect on the domestic prices.

Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties

45. The submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to injury and casual link are as follows:
 - i. Increase in subject imports is negligible when compared to the increase in domestic production.
 - ii. Impact of financial crisis has not been analyzed. Its effect will not just be on the demand, at least tightened credit conditions must have affected the domestic industry.
 - iii. For the purpose of injury analysis Tata Chemicals has been excluded. In the previous investigation, it was excluded as it imported the goods from subject country which is not the case at present. It constitutes 30% of the total production. Including Tata Chemicals would give a more accurate injury analysis. In PVC Suspension Grade case, Reliance was included so that 100% of domestic producers could be included.

- iv. Petitioners have erred by including transportation cost in the price undercutting analysis ignoring that importers will also have to bear transportation costs from port to the final destination of the customers as the ultimate end users are not located at the ports.
- v. To establish price effect of the imports, it must be shown that the domestic prices are directly proportional to import prices. Taking 2008-09 as the base year does not show any alarming difference between cost and prices of domestic industry.
- vi. The domestic industry's price changes in complete independence of the price of the subject imports. Prices of domestic industry are more comparable to the cost of sales.
- vii. No price depression caused from Turkey imports as whenever prices from Turkey decreased, prices of the domestic industry has gone up and vice versa.
- viii. Russian prices had shot up considerably and are now back to a point slightly higher than 2007-08. Domestic industry's prices have not moved nearly as radically as Russian prices.
- ix. Domestic industry's sales have increased by 18% in line with 20% increase in production. Largest increase is in export sales. Domestic industry's capacity is less than demand, whereby, if the domestic industry needed could make all sales in the domestic market.
- x. Profit dipped but there is an increase in the POI. Interests have gone up by 60%, PBIT shows only a minor dip compared to the base year; however improvement is seen in the POI as compared to the preceding year.
- xi. Approach of domestic industry to include freight as part of the selling price and the non injurious price while doing the comparisons of price undercutting, underselling is incorrect. Law does not provide for such inclusions.
- xii. The Designated Authority should investigate how complainants were able to hire more employees in 2009 and 2010 and how could they increase the wages while suffering from alleged injury.
- xiii. High transportation costs of the domestic industry are the main reason for injury. The domestic industry is concentrated on the western coast and incurs high costs in transporting to other parts of India.
- xiv. Fluctuation in raw material costs has not been examined by the complainants. Due to weak Indian rupee, import of coke has had negative impact on the Indian producers. 78% of imports coming into India are subject to ADD. Subject countries constitute only 3.5% of the demand. Further, share of domestic producers has increased by 6% during the POI. Therefore the only intention is to capture the entire market of Soda Ash.
- xv. Data in the petition does not match with the final finding issued by the Authority in the previous investigation concerning different countries.
- xvi. Fall in production and sale is for a brief period and was a temporary phenomenon on account of closure of plant by a domestic producer.
- xvii. The injury data filed by the Applicant is for the period 2007-08, 2008-09, 2009-10 and the POI in a blatant attempt to inflate perceived injury by including 2007-08 into Proforma IVA.
- xviii. Analyzing data sourced from the injury data circulated on January 2nd,

- 2013, from 2008-09 shows that demand has grown and then dipped over the injury period. However, the domestic industry's sales have grown at a higher rate than the total demand.
- xix. Capacity of the applicants has remained constant over the injury period. However, capacity utilisation has risen by about 15%.
 - xx. Production to sales ratio has remained extremely high in the entire period of investigation, and has even shown a marginal increase towards the period of investigation. Any perceived decline in sales could be due to the decrease in captive consumption.
 - xxi. With capacity remaining constant over the injury period the net fixed assets have grown by about 20%. Such a large increase in net fixed asset does not seem feasible without even the slightest increase in production capacity.
 - xxii. All forecasts point to a significant growth in the Indian soda ash market. Testimony of the exporters clarifies how exports from Turkey are not likely to increase.
 - xxiii. When the subject imports share in imports from 3 to 21%, the domestic sales value increased from 93 to 115 (index). Sales prices increased from 89 to 95 (index). Profit has increased from 84 to 88 (index). Wages increased from 100 to 116.
 - xxiv. Market share of countries attracting duties have dropped from 96% to 77% in the same period. It is absurd to argue that the alleged injury was caused by imports from Turkey and Russia.
 - xxv. In 2009-10 when the domestic industry lost 5% market share, the other dumping countries gained approximately the same market share lost by the domestic industry. Further, in 2010-11 when the domestic industry gained 6% market share, it can be seen that this market share has been lost by countries already attracting duties.
 - xxvi. Total demand in the POI exceeds the total capacity of the domestic industry by about 21%. At the same time, the total imports are barely 16% of total demand. Therefore, imports are inevitable.
 - xxvii. There have been unusual cost pressures on the domestic industry throughout the POI such as access to raw materials, limestone availability due to increased demand in other sectors, particularly cement production, salt prices.
 - xxviii. Saurashtra Chemicals is undergoing a financial restructuring under the BIFR. This injury should not and cannot be attributed to dumping.
 - xxix. Imports which cater to merely 3% market share cannot cause such material injury to the domestic industry as has been claimed.
 - xxx. Domestic industry has failed to segregate injury caused by other factors from the alleged dumped articles. Such 'other factors' include imports from China PR, Iran, EU, Kenya, Pakistan, Ukraine and USA, on which anti-dumping duty has already been imposed.
 - xxxi. The production capacity of domestic industry was 1,961,000 MT, compared to total domestic demand of 2,944,503 MT; in the POI. Thus, even assuming optimal capacity utilization by domestic industry, there will still be a deficit of 983,503 MT. Therefore, the end-users, who have no option but to import the subject goods.

- xxxii. Production of domestic industry increased consistently during the injury period, barring a small dip during the period of investigation, between July 2011 and Sep 2011, which is attributable to the planned shutdown undertaken by the domestic industry.
- xxxiii. Sales of domestic industry have seen significant growth during the injury period.
- xxxiv. Major reason for the claimed fall in profitability is the fact that the base years – 2007-08 and 2008-09 were the best years for the domestic industry when it earned robust profits. GHCL has claimed improved performance during the year in its annual report for 2010-11.
- xxxv. Even with increase in imports from subject countries, the profitability of domestic industry kept on increasing.
- xxxvi. Annual report of Tata Chemicals for 2010-11 further reports that despite price pressure, Tata Chemicals recorded higher domestic sales realization and higher production in 2010-11 compared to 2009-10.
- xxxvii. As per Annual report of GHCL, the main concern for domestic soda ash producers in India is two fold – increasing raw material and energy cost and geographical location disadvantage.
- xxxviii. As per Nirma's Annual Report the problems faced by domestic industry are intrinsic in nature. The domestic industry needs to focus on improving its integration, implementing cost conscious business practices to overcome problems of logistics costs and energy problems.
- xxxix. There exists no causal link between imports from subject countries and alleged injury to domestic industry as total market share of subject countries is only 3% and there already exists dumping from 7 other countries. Further increase in depreciation and interests costs could be reason of injury to domestic industry.
- xl. There is no explanation from Nirma as to why imports are being used for captive purposes.
- xli. While petition says that petitioners have used data of both IBIS & DGCI&S, in calculation export price only DGCI&S data has been used and no explanation has been provided for the same.
- xlii. Other factors are responsible for injury to domestic industry and the other factors are, imports from countries already attracting duty, Saurashtra Chemicals is a BIFR company and high inland transport costs for petitioner companies.
- xliii. While examining the facts of the instant case. Simultaneously another investigation for the same subject goods was also under process for finalization, therefore as per Annexure II (iii) Authority should have cumulatively assessed injury.
- xliv. The investigation was not initiated to examine the threat of injury. Decision to examine threat was required to be made separately by recording reasons in support thereof as also mandated under Rule 6(iv).
- xlv. Despite price undercutting, one constituent of domestic producer can increase its price, shows lack of causal nexus between import prices and domestic producer constituting major proportion of domestic sales and production.
- xlvi. Domestic industry has now taken DGCI&S data, while it has taken

combined information data from DGCI&S and IBIS in its application and updated information. Strategic sources have been used to reach pre determined consequences.

- xlvi. Domestic industry has admitted in the hearing that capacity is more than demand. In past Designated Authority has terminated cases on this ground as it results in underutilization of plants resulting in losses or increasing the cost of production.
- xlvii. NSR of the Domestic industry should also be compared with its NIP.
- xlviii. Domestic industry has at one place admitted that there exists geographical disadvantage and that transportation cost forms a substantial portion of cost of production, and at some instance has denied it and claimed that it is beneficial to domestic industry.
- i. Claim of threat of material injury is not backed by evidences. Further claim of excess capacities are insufficient to suggest a threat of material injury.
- ii. Injury suffered by dumped imports has to necessarily be quantified and segregated from injury caused by other factors.

Examination by the Authority

46. The injury analysis made by the Authority hereunder addresses the various submissions made by the interested parties:

- i. With regard to the argument that the claim of difficulty to plan fresh investments is false as the Annual Reports are full with new installments, the Authority notes that the investment plans drawn and reported in the annual report are based on past performance of the product and are contingent upon good performance of the product and the company and, therefore, cannot be held as contrary statements.
- ii. With regard to the argument that the Annual Reports of some of the complainant companies talks of profits for the company while the petition claims decline in profitability, the Authority notes that the detailed analysis of the injury parameters shows that the domestic industry has suffered in the current injury period in terms of decline in profit, return of investment, cash flow etc.
- iii. With regard to the argument that petitioner has not provided any analysis to help the Authority to distinguish the impact of subject imports from the impact of imports from the countries attracting anti dumping duty, the Authority notes that the rules do not require segregation of injury suffered by the domestic industry on account of dumped imports from other sources. It is only the injury caused by the undumped imports from other countries that need to be segregated under the law.
- iv. With regard to the argument that Tata Chemicals should be included for the injury analysis, the Authority notes that Tata Chemicals has not responded to the initiation notification and, therefore, the Authority is proceeding with the best available information on record.
- v. With regard to the argument that petitioners have erred by including transportation cost in the price undercutting analysis, the Authority

- notes that transportation cost on the domestic price has not been added by the Authority while analyzing price undercutting.
- vi. With regard to the argument by the interested parties that the injury caused is on account of transportation cost, the Authority notes that profits of the domestic industry declined over the period. This decline in the profits is not because of transportation cost in the finished product, as transportation cost in the finished product is not included either in the cost or in the price. Thus, deterioration in performance of the domestic industry in respect of profits, return on investment and cash flow is not on account of transportation cost.
 - vii. With regard to the argument that the approach of domestic industry to include freight as part of the selling price and the NIP while doing the comparisons of price undercutting and underselling is incorrect, the Authority notes that it has followed the provisions laid down under Annexure III to the Anti-dumping Rules governing determination of NIP and consistent practice of the DGAD. Accordingly, the freight incurred by the domestic industry has not been included in their NIP.
 - viii. With regard to the argument that both injury and threat of injury cannot be determined in the same investigation, the Authority notes that the argument holds no merit. The Rules permit examination of all three forms of injury, i.e., material injury, threat of material injury and material retardation to the establishment of industry.
 - ix. With regard to the argument of the interested parties that different data has been used by the domestic industry at different stages and the injury data was updated one day before the hearing through the fact sheet, the Authority notes that petitioners provided additional information by including information for 2007-08 (a year prior to base year) and for the period upto Sept.2012 (for the period after the POI) during the hearing merely to supplement their claims on injury. It is quite usual for the parties to provide additional information as felt relevant by them. However, the Authority has considered the information for the relevant period alone for the present investigation.
 - x. As regards the claim of Istanbul Chemical association which exports to 63 countries any ADD/CVD investigation have been initiated, the Authority notes that as per the information available, no case has been initiated so far for Soda Ash.
47. The Authority notes that Annexure II Para (iii) of the Anti-dumping Rules provides that in case imports of the product under consideration from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -
- i. The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the import of like article or where the export of individual countries is less than three per cent, the imports collectively account for more than seven per cent of the import of like article, and

- ii. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

48. In this regard, the Authority observes that:

- i. The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed above;
- ii. The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed;
- iii. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market. This is evident from the following:
 - a. The subject goods manufactured by the producers from the subject countries inter-se and in comparison to the product manufactured by the domestic industry. In other words, the subject goods supplied from various subject countries and by the domestic industry are inter-se like articles.
 - b. There are common parties who are resorting to use of imported material from various sources and domestic material. Imported and domestic materials are, therefore, being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product and the imported product.
 - c. The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the same product in the same periods to the same set of customers. The sales channels are comparable.
 - d. Volume of imports from each of the subject countries is significant.
 - e. Consumers make purchase decision on the basis of prices offered by various suppliers.

49. In view of the above, the Authority considers it appropriate to cumulatively assess the effects of dumped imports of the subject goods from Turkey and Russia on the domestic industry in the light of conditions of competition between imported product and the like domestic product.

50. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a

significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

51. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."

52. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.

Demand and market share

53. For the purpose of assessment of the domestic consumption/demand of the subject goods, the sales volume of domestic industry and other Indian producer have been added to the total imports into India and the same has been summarized below:

\$N	Particulars	Units	2008-09	2009-10	2010-11	POI July 2010- September 2011	POI- Annualized
1	Russia	MT	1,456	1,008	7,307	36,027	28,822
2	Turkey	MT	3,504	16,580	48,627	70,262	56,209
3	Other countries attracting AD duty	MT	351,475	531,119	368,335	525,452	420,362
4	Other countries	MT	2,120	7,249	9,416	27,559	22,047
5	Sales of Domestic Industry including captive	MT	1,184,655	1,203,057	1,414,416	1,736,174	1,388,939
6	Other Indian Producers	MT	615,044	675,481	691,884	864,855	691,884

7	Assessed Demand including captive	MT	2,158,254	2,434,494	2,539,985	3,260,330	2,608,264
---	-----------------------------------	----	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------

54. The Authority notes that the demand has shown a positive trend throughout the injury period.

I. Volume Effects of Dumped Imports

Import Volume and Market Share

55. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the import data procured from DGCIS. The volume of imports of the subject goods from the subject countries has been analyzed as under:

S N	Particulars	Units	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI-Annualized
1	Imports Total	MT	358,555	555,956	433,685	659,300	527,440
2	From Russia	MT	1,456	1,008	7,307	36,027	28,822
3	From Turkey	MT	3,504	16,580	48,627	70,262	56,209
3	Total- Subject Countries	MT	4,960	17,588	55,934	106,289	85,031
4	Trends in subject imports						
5	Russia	Indexed	100	69	502	1,980	1,980
6	Turkey		100	493	1,388	1,604	1,604
7	Subject countries		100	355	1,128	1,714	1,714
8	Other countries attracting AD duty	MT	351,475	531,119	368,335	525,452	420,362
9	Other Countries	MT	2,120	7,249	9,416	27,559	22,047
	Market Share in Demand						
10	Assessed Demand	MT	2,158,254	2,434,494	2,539,985	3,260,330	2,608,264
11	Assessed Demand	%	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
12	Russia	%	0.07	0.04	0.29	1.11	1.11

13	Turkey	%	0.16	0.68	1.91	2.16	2.16
14	Subject countries	%	0.23	0.72	2.20	3.26	3.26
15	Other countries attracting AD duty	%	16.29	21.82	14.50	16.12	16.12
16	Other Countries	%	0.10	0.30	0.37	0.85	0.85
17	Domestic Industry	%	54.89	49.42	55.69	53.25	53.25
18	Other Indian Producers	%	28.50	27.75	27.24	26.53	26.53

56. The Authority notes that the imports from subject countries show an adverse volume effect, which is evident from the analysis below.

- i. Imports have increased in absolute terms from 4960 MT in the base year to 85,031 MT in POI (on annualized basis). The increase is significant and material.
- ii. While the demand for soda ash increased by about 26% in POI as compared to the base year, the volume of dumped imports from subject countries increased by about 1714 times during the corresponding period.
- iii. Imports of the subject goods from the subject countries have increased in relation to the demand of the subject goods in India.
- iv. The market share of the subject countries in the demand of the product in India has increased.

J. Price effect of imports

57. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price suppression and price depression, if any.

Price undercutting

58. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. The Authority has determined net sales realization considering selling price excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions. Entire sales volumes of the domestic industry have been included in the calculations. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import

price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The comparison was done between net sales realization and landed price of imports. The Authority has determined weighted average price undercutting by the dumped imports.

59. The Authority notes that the landed price of the subject goods are significantly below the selling price of the domestic industry which suggests significant price undercutting being caused by the dumped imports from the subject countries as is apparent from the following table.

SN	Country/exporter	Landed Price	Net selling price	Price undercutting		range
				Rs./MT	%	
1	Turkey	10,550	***	***	***	15-25
2	Russia	12,276	***	***	***	05-15

60. The Authority notes from the above table that the landed price of imports of the subject goods are significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.

Price-underselling

61. From the table given below, the Authority notes that there is a positive price underselling effect:

SN	Country/exporter	Landed Price	Non Injurious Price	Price underselling		range
				Rs./MT	%	
1	Turkey	10,550	***	***	***	20-30
2	Russia	12,276	***	***	***	10-20

Price suppression/depression

62. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices, the Authority determined whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
1	Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
2	Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***

	Trend					
3	Cost of Sales	Index	100	92	100	105
4	Selling Price	Index	100	89	91	95

63. From the above, the Authority notes that whereas the cost of sales increased in the POI as compared to the base year, there was decrease in selling price during the POI compared to the base year. This indicates price suppression whereby the domestic industry has not been able to increase the selling price with increase in the cost of sales.
64. It is seen that the cost of sales have increased over the period. Information provided by the domestic industry shows that in fact the cost of sales during this period increased globally. The information contained in the trade journals shows that product prices increased globally in this period in view of the increase in cost.

K. Economic parameters of the domestic industry

65. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.
66. Various injury parameters relating to the domestic industry are examined hereunder:

i. Production, capacity and capacity utilization of the Domestic Industry

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI-Annualized
1	Gross Capacity	MT	1,961,000	1,961,000	1,961,000	2,451,250	1,961,00
2	Adjusted Capacity	MT	1,954,973	1,866,000	1,961,000	2,451,250	1,961,00
3	Production	MT	1,286,473	1,349,724	1,562,627	1,940,884	1,552,70
4	Loss of Production	MT	6,027	53,544	-	-	-
5	Gross Production	MT	1,292,500	1,403,268	1,562,627	1,940,884	1,552,70
6	Capacity Utilization-actual	%	65.60%	68.83%	79.69%	79.18%	79.18%
7	Adjusted Capacity Utilization	%	65.91%	71.56%	79.69%	79.18%	79.18%

67. The Authority notes that the Domestic Industry has maintained the same capacity throughout the injury period. Further, the market for the product was briefly affected by the recession during 2008-09 and the demand stagnated during this period. Since this loss of production to the domestic industry is on account of other factors and the Authority is required to segregate injury suffered by the domestic industry due to other factors, the Authority has examined the production as well as the capacity utilization after adjusting the same for the loss of production due to other factors. Loss of production has been determined considering the number of days production was lost by the domestic industry and capacity utilization for the period when the domestic industry was operating during that year.
68. The Authority notes that the actual capacity utilization of the domestic industry has shown improvement in the POI as compared to the base year. The Authority notes that production of the domestic industry has increased in the POI.
69. It is noted that there is no addition of capacity by the domestic industry over the present period. It is also noted that the domestic industry itself has admitted increase in capacity utilisation and has not claimed injury on this account nor increase in capacity utilisation implies that the domestic industry has not suffered injury.

ii. Sales of Domestic Industry

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI-Annualized
Domestic Sales	MT	1,038,138	1,092,500	1,270,710	1,559,278	1,247,423

70. The Authority notes that sales of the domestic industry increased throughout the injury period and the POI. The domestic industry contended that despite significant and positive growth in demand for the subject goods in India and sufficient capacities available with the domestic industry, dumped imports continue to hold high market share. The Authority has considered the sales of the domestic industry after excluding captive consumption.

iii. Market share:

71. The effects of the dumped imports on the domestic sales and the market shares of the domestic industry have been examined as below and it is noted that the market share of the domestic industry declined in 2009-10 and improved thereafter. The domestic industry contended that its market share was still lower than the levels earlier achieved by the domestic industry, as evidenced by the final findings of the previous investigation.

SN	Particulars	Units	2008-09	2009-10	2010-11	POI
1	Assessed Demand	MT	2,158,254	2,434,494	2,539,985	3,260,330

2	Subject countries	%	0.23	0.72	2.20	3.26
3	Other countries attracting anti dumping duty	%	16.29	21.82	14.50	16.12
4	Other countries	%	0.10	0.30	0.37	0.85
5	Domestic Industry	%	54.89	49.42	55.69	53.25
6	Other Indian Producers	%	28.50	27.75	27.24	26.53

iv. Profits, return on investment and cash flow

72. The cost of sales, selling price and profit/loss of the domestic industry in respect of the domestic sales of the subject goods for the period from 2008-09 to POI were examined. Factual position is given in the following table.

(Figures are Indexed)

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI-Annualized
1	Selling price	Rs./MT	100	89	91	95	95
2	Cost of sales	Rs./MT	100	92	100	105	105
3	Profit/Loss	Rs/MT	100	75	49	53	53
4	Profits on domestic sales	Rs. Lacs	100	79	61	63	63
5	Profit before interest	Rs. Lacs	100	83	78	83	83
6	Profit before interest per unit	Rs./MT	100	79	64	69	69
7	Cash Profit	Rs. Lacs	100	84	86	88	88
8	Cash Profit per unit	Rs./MT	100	80	70	73	73
9	Return on investment	%	100	91	71	75	75

73. The Authority notes that:

- Per unit profits of the domestic industry in respect of production and sale in the domestic market has declined significantly over the injury period.
- Domestic sales realization of the domestic industry has not increased in line with the increase in costs.
- The profits of the domestic industry have declined over the injury investigation period, which has resulted in decline in profits earned by the domestic industry on the domestic sales in the POI.
- Whereas the sales volumes increased by about 20% over the injury

- period, profit on domestic sales declined by above 36%.
- v. As a result of decline in profits, return on capital employed in domestic sales of the domestic industry declined over the period.
 - vi. Cash profit earned by the domestic industry declined over the period. The decline in cash profits was both in cash profit per unit and cash profits on domestic sales.
 - vii. It has been argued by interested parties that the interest costs of the domestic industry has increased. It is, however, noted that the profit before interest has also shown a significant decline over the injury period. It is thus seen that the decline in profits is not due to increase in interest cost.
 - viii. It is noted that the domestic industry has made fresh investment over the injury period. However, despite this fresh investment, the profit before tax declined by 36% over the period.
 - ix. As noted herein below, the productivity has shown improvement over the period and therefore decline in return on investment is not due to possible decline in productivity. With improvement in productivity, normally, return on investment should have improved; whereas the same has declined

v. **Factors affecting domestic prices**

74. Consideration of the import prices from the subject countries and other countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the landed value of imported material from subject countries is below the selling price of the domestic industry, causing price undercutting in the Indian market. Imports from other countries are at much higher prices. There is no viable substitute to this product. Demand for the product was showing significant increase and could not have been a factor responsible for price suppression faced by the domestic industry. One of the major factors responsible for the domestic industry prices is the import prices of the subject goods from subject countries and the cost of production of the domestic industry. As the information shows, the domestic industry has been prevented from charging a price that would permit recovery of reasonable profits.

vi. **Inventories:-**

75. The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
1	Opening stock	MT	34,385	56,394	28,423	26,647
2	Closing Stock	MT	56,394	28,423	58,454	60,394
3	Average Stock	MT	45,390	42,409	43,438	43,520
4	Stock per day	Days	16	8	14	14

	sales					
5	Inventory value	Rs.Lacs.	***	***	***	***

76. The Authority notes that the inventories with the domestic industry were high in 2008-09 and declined in 2009-10. Inventories, however, increased, thereafter, with the dumping of the product from other countries which are now attracting anti dumping duty. It is noted that the domestic industry continues to hold high level of inventories.

vii. Employment and wages

77. The position with regard to employment and wages is as follows:

(Figures are Indexed)

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI- Annualized
1	Number of employees	No.	100	102	95	96	96
2	Wages	Rs. Lacs	100	101	148	146	146

78. Number of employees deployed by the domestic industry declined in the POI as compared to base year. It is thus seen that the employment per unit of capacity has declined over the period, despite which the profitability of the domestic industry has deteriorated. Wages paid by the domestic industry have increased.

viii. Productivity

79. Data relating to productivity shows as follows:

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI- Annualized
1	Production per day	MT	3,525	3,698	4,281	4,254	4,254
2	Production per employee (indexed)	MT	100	103	128	126	126

80. It is noted that productivity in terms of production per day and production per employee has increased in the POI as compared to base year.

ix. Magnitude of Dumping

81. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margin determined against the subject countries are above de minimis and significant.

x. Growth

82. It is noted that there has been significant growth in the import volumes of the subject goods from the subject countries. The growth of the domestic industry in terms of sales and production was positive. However, selling price and profitability has shown a negative growth.

xi. Ability to raise funds

83. The domestic industry invested huge amounts in the product under consideration. The domestic industry contended that the investment decisions are reflective of long term business decisions of the industry and not reflective of the adverse effect of dumped imports.

L. Conclusion on material injury

84. In view of the above, the Authority concludes that the dumped imports of the subject goods from the subject countries have increased significantly in absolute terms as also in relation to production and consumption of the subject goods in India. Imports of the subject goods from subject countries are significantly undercutting the prices of domestic industry. Imports are causing significant price suppression. The performance of the domestic industry has deteriorated in terms of profit, cash flow as reflected in cash profits, return on investment and inventories, which is significant and material. Even though performance improved in terms of production, capacity utilization and domestic sales, the deterioration in performance on account of profit, cash profits and return on investment far outweigh the positive developments in production, capacity utilization and domestic sales. Thus, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury.

M. Other Known Factors & Causal Link

85. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of the dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price underselling and price suppression and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-Dumping, the Authority has examined as under to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry:

(a) Volume and prices of imports from third countries

86. The Authority notes that during the POI, imports of the subject goods from countries other than the subject countries and the countries already attracting anti dumping duty have been insignificant in volume. Therefore, the imports from other countries cannot be considered to have caused injury to the domestic industry. It is further noted that interested parties have argued that injury suffered by domestic industry from other dumped imports should be segregated. The Authority notes that the Rules require the Authority to segregate injurious effects of known factors other than dumped imports.

542 GI/13-12

Imports from countries already attracting duties are also dumped imports and hence no segregation is required.

(b) Contraction of demand and changes in the pattern of consumption

87. The Authority notes that the demand for the subject goods has shown a growth of about 26% during the POI as compared to base period. There is also no indication of any change in the consumption pattern. The Authority notes that the injury to the domestic industry is due to excessive capacity. The Authority, however, notes that the domestic industry is unable to utilize its capacity to the extent of available demand due to dumped imports.

(c) Developments in technology:

88. The Authority notes that none of the interested parties has furnished any evidence to demonstrate significant changes in the technology that could have caused injury to the domestic industry.

(d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

89. The Authority notes that the subject goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for significant domestic production and sales. Further, there is no perceptible competition among the domestic producers, except that is obvious of a market economy.

(e) Export performance of the domestic industry:

90. The table below summarizes the performance of the domestic industry in respect of exports made by them.

SN	Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI	POI- Annualized
1	Export sales	MT	79,776	174,424	117,830	191,991	153,593

91. The Authority notes that export sales have increased from the base year and, therefore, possible decline in exports cannot be a plausible factor of injury to the domestic industry. As regards export profitability, profitability of the domestic industry has been considered only for domestic operations for the present purposes. The domestic industry contended that it is forced to undertake exports in view of significant imports of the product in the country at dumping prices.

(f) Productivity of the Domestic Industry

92. It is noted that the productivity of the domestic industry in terms of production per day and production per employee has improved in POI as compared to base

year. Possible decline in productivity cannot, therefore, be a factor causing injury to the domestic industry.

93. It is, thus, noted that listed known other factors do not show injury to the domestic industry. The Authority examined whether the dumping of the product has caused injury to the domestic industry. The following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a) The volume of dumped imports from the subject countries increased significantly resulting in increase in the share of dumped imports in demand of the product in India. Consequently, the domestic industry was prevented from recovering its market share position to the earlier levels.
- b) The imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry. Resultantly, the imports were resulting in price suppression being faced by the domestic industry.
- c) Performance of the domestic industry with regard to profits, cash flow and return on investments deteriorated as a result of price suppression. Thus, dumping of the product has led to deterioration in performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow and return on investments.
- d) The domestic industry is faced with significant increase in inventories.

94. The Authority, therefore, concludes that the domestic industry suffered material injury due to dumped imports.

Threat of material injury

95. In addition to the material injury, the domestic industry contended that the dumped imports are threatening injury to the domestic industry. The claim of the domestic industry with regard to threat of injury was, therefore, examined in the light of the legal provisions. The followings are relevant in this regard: -

- i. The rate of increase in dumped imports from subject countries is quite significant.
- ii. Domestic industry contended that capacity with the producers in Turkey and Russia are significant. Questionnaire responses filed by the responding exporters were examined in detail. It is noted that one of the exporters has high capacity utilization and very low unutilized capacities.
- iii. The import prices are significantly lower than selling price in India. The price difference is therefore likely to increase demand for imports.
- iv. The domestic industry contended that subject exporters are holding significant freely disposable production capacities indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports.

96. It is, thus, seen that the dumped imports are threatening injury to the domestic industry.

N. Indian industry's interest & other issues:

97. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti dumping duties, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

O. Magnitude of Injury and Injury Margin**Injury Margin**

98. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin during the POI. The injury margin determined are as under:-

Particulars	Unit	Turkey							Russia
		ETI Soda	ETI to Vincom to India	Weighted average	Soda Sanayii	Soda Sanayii to Vincom to India	Weighted average	Non Cooperative	
Landed price of imports	USD/MT	***	***	***	***	***	***	***	***
NIP	USD/MT	***	***	***	***	***	***	***	***
Injury Margin	USD/MT	***	***	***	***	***	***	***	***
Injury Margin	%	***	***	***	***	***	***	***	***
Injury Margin % Range		20-30	30-40	20-30	15-25	5-15	10-15	40-50	5-15

P. Post Disclosure Statement submissions**Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry**

99. Following are the submissions made by the domestic industry post issuance of the disclosure statement:

- i. Questionnaire responses filed by the responding exporters remained grossly inadequate to entitle them for individual dumping margin.
- ii. Information filed by the exporters after initial questionnaire responses have been clearly filed only on confidential basis in violation of Rule 7 and trade notice.
- iii. Normal value in respect of responding exporters are grossly low.
- iv. Trading sales made by producers/exporters cannot be considered for determination of normal value.
- v. Sales made to affiliated parties were at prices materially different from selling price to unaffiliated parties. Thus, these sales are clearly not in the ordinary course of trade and therefore are required to be excluded from the determination of normal value.
- vi. For each of the responding producers, there are two channels of sales. The Designated Authority should recommend weighted average dumping margin and weighted average anti dumping duty for the two producers.
- vii. ETI's claim of price adjustment in inventory carrying cost in domestic sales is inadmissible. On the contrary, this price adjustment should be made from export price given that the exporters are largely export oriented.
- viii. It is not clear whether the claim of export price corroborates well with the import price reported in the Indian Customs data. Considering these prices reported in Indian customs data, it is evident that the margin of dumping is much higher than the dumping margin determined
- ix. The petitioners have come to know about the nature of price adjustment claimed for the first time through the disclosure statement. It seems that that no price adjustment seems to have been carried out on account of a number of expenses normally associated with exports to India.
- x. The non injurious price determined is too low. Raw materials and utilities costs should not be considered at the best achieved levels in the past. Captive input should be considered at their market values Actual raw material and utilities consumption needs to be considered. Actual cost of production needs to be determined. Capital employed should be determined considering present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets.
- xi. Freight should be added to the NIP before comparing with landed price of imports.
- xii. Anti dumping duty should be in fixed quantum, expressed in US\$.

Post Disclosure Statement submissions by other Interested Parties

100. Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties post issuance of the disclosure statement are as under:

- i. Two days are not adequate for Turkish side to thoroughly investigate and comment on the decisions of DGAD.

- ii. Leaving just one working day for the DA to review the comments and issue the final findings would tantamount to a mockery of the quasi-judicial adjudication process.
- iii. Information relating to Tata Chemicals Ltd relied upon not provided. If public domain figures are available for Tata Chemicals, it is the Authority's obligation to take such information on record as "best information available".
- iv. Authority should thoroughly investigate the profit, production, sales and capacity data for TCL before arriving at a final decision and demonstrate what figures it has obtained regarding TCL.
- v. The Authority could have compelled the association to get the full data particularly in view of the fact that the applicants are not the individual members of the Association but the Association itself.
- vi. Authority has completely ignored all the relevant issues raised with regard to confidentiality without responding to them.
- vii. The initiation was improper and without substantiation and based on data for an incomplete period of investigation.
- viii. If more than 80% sales are profitable then all domestic sales should be considered for normal value calculation. The normal value ought to be calculated using all domestic sales of ETI Soda, Turkey.
- ix. Depreciation on bulk carrier trucks are designated specifically to the service to domestic customers which need to be allocated to the domestic sales.
- x. Sales below cost test should be calculated either by considering the direct selling expenses adjustment in Appendix-8 of the Exporter or just simply by using the gross prices instead of ex-factory prices while performing cost test.
- xi. Recommendation of weighted average duties to unrelated cooperative producers and exporters is unprecedented, arbitrary and without the authority of law.
- xii. Dense and Light soda ash cannot be treated as like articles with one another.
- xiii. Principle of non-attribution does not permit the Authority to equate imports from sources that are being investigated for alleged dumping and imports from sources that are already facing anti-dumping duty.
- xiv. There is no dumping from Turkey, however, data on record indicates substantial dumping from Russia. Therefore, the conditions of competition are different for Russia and Turkey whereby cumulatively assessing imports from these countries is incorrect.
- xv. Fall in profits might be due to the rise in costs because of the fresh investments. Injurious effects of investment-related cost/expense should be segregated from the injury caused by alleged dumped imports.
- xvi. How the domestic producers could increase their prices when in fact their costs were decreasing significantly although there was any price undercutting or prices suppression effect from Turkey.
- xvii. Normal value and export price determination for Russia not disclosed. Dumping margin for Turkish non-cooperative exporters has not been disclosed.

- xviii. Reasons for allowing 22% return on capital employed not disclosed.
- xix. Both injury and threat of injury cannot be determined in the same investigation by the DGAD.
- xx. Market share, sales and capacity utilization has improved. The trend showing decline in profitability is due to the fact that base year – 2008-09 was an exceptionally good year for domestic industry, when it earned record profits.
- xxi. Interpretation that the term 'alleged' itself implies that the test of relationship with exporters under Rule 2(b) is with respect to the alleged, i.e., the subject imports originating from the subject countries under the investigation, is incorrect.
- xxii. The delay of 69 days in providing revised updated information by the applicants must be treated fatal to investigation
- xxiii. Saint Gobain Glass India Ltd argued that authorization was filed on behalf of TPM, Solicitors & Consultants, whereas, updated petition was filed by TPM Consultants.
- xxiv. The Authority has failed to offer a proper analysis to determine whether sales to the affiliated customers are made during the ordinary course of trade or not. Authority should take due account of differences in price comparability while including affiliated party sales. Exclusion of sales to affiliated parties mean largest soda ash consumer in turkey has been omitted from this investigation. Authority should consider the quantity sold to the affiliated companies and other relevant factors along with the price.
- xxv. Inventory carrying cost adjustment should be considered while calculating the normal value. Net financial income should be adjusted from unit cost.

Examination by the Authority

101. Submissions made by the interested parties have been examined by the Authority. The Authority finds that submissions are repetitive and have been adequately dealt with under relevant heads in this Notification. Still, the Authority has examined submissions to the extent found relevant to the present investigation hereunder:

- i. With regard to the argument that time given for responding to the disclosure statement is inadequate, the Authority notes that the disclosure statement contained the essential facts based on the submissions made by the other interested parties upto the issuance of the disclosure statement. No new facts had been put forward. In any case majority of the post public hearing submissions were repetitions of their submissions made earlier which had already been dealt with in the disclosure statement. Thus, the time given was adequate. However, the Authority has again examined all these submissions in the final findings adequately.
- ii. With regard to the argument of the interested parties on data for TCL, the Authority has analysed the information as available in the Cost Compliance

Report submitted to the Ministry of Corporate Affairs. Such information is not available in public domain and therefore the same cannot be disclosed.

- iii. With regard to the argument on confidentiality, the Authority notes that confidentiality was allowed only on being satisfied of the confidentiality claims made by the parties claiming the same.
- iv. With regard to the argument that all domestic sales should be considered for normal value calculation of ETI Soda, the Authority notes that though it had taken all domestic sales for the calculation of normal value; it was erroneously stated in the disclosure statement as "profitable sales" instead of "total sales".
- v. With regard to the argument that depreciation on bulk carrier trucks should be adjusted to the domestic sales, the Authority notes that it has allowed adjustments pertaining to freight as claimed in Appendix 1.
- vi. With regard to the argument that individual dumping margin and duty should be recommended, the Authority is of the opinion that imposition of weighted average duty for both the producer/exporter and the trader/exporter is a fair system to prevent evasion of duty.
- vii. With regard to the submission that the trend showing decline in profitability is due to the fact that base year – 2008-09 was an exceptionally good year, the Authority finds no merit in the same as the final finding on the subject goods with the same set of Applicants, as notified earlier, shows that the profitability declined in 2008-09 as compared to 2006-07.
- viii. With regard to the argument on the exclusion of affiliated sales, the Authority notes that Soda Sanayii has made sales to its affiliated customer at prices 21% less than the prices to non-affiliated customers. Further, the exporter has not been able to establish with sufficient evidence that the sales made were in the ordinary course of trade.
- ix. With regard to the argument that TPM Consultants is not an authorized entity to file submissions, the Authority notes that TPM Solicitors & Consultants are represented by the same person. (Not clear)
- x. With regard to the argument that inventory carrying cost adjustment should be considered, the Authority notes that it has followed the past established practices of the DGAD and has allowed only such adjustments that are allowed.
- xi. With regard to the argument that the export prices do not corroborate with the CIF prices, the Authority notes that it has taken the export prices as verified.
- xii. With regard to the argument that the price adjustments have not been done on various accounts, the Authority notes that it has followed the past established practices of the DGAD and has accordingly allowed the adjustments.
- xiii. With regard to the argument that NIP determined is too low, the Authority notes that the Non injurious price has been determined in accordance with the principles laid down in the Anti dumping Rules.

Conclusion

102. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that the product under consideration has been exported to India from the subject countries below its associated normal value, thus, resulting in dumping of the product. The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods. The material injury has been caused by the dumped imports from the subject countries.

Recommendations

103. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti dumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

104. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in the table below is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from Turkey and Russia.

Duty Table

S N	Sub- heading	Description of goods	Country of origin	Country of exports	Producer	Exporter	Amount	Unit of measu re ment	Curr- ency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Russia	Russia	Any	Any	35.99	MT	US\$
2	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Russia	Any country other than those subject to antidumping duties	Any	Any	35.99	MT	US\$
3	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Any country other than those subject to antidumping duties	Russia	Any	Any	35.99	MT	US\$

4	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Turkey	Turkey	Soda Sanayii A.S	Soda Sanayii A.S	18.39	MT	US\$
5	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Turkey	Turkey	Soda Sanayii A.S	Vincom Commodities Limited, UK	18.39	MT	US\$
6	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Turkey	Turkey	ETI Soda	ETI Soda	21.00	MT	US\$
7	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Turkey	Turkey	ETI Soda	Vincom Commodities Limited, UK	21.00	MT	US\$
8	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Turkey	Turkey	Any combination other than mentioned in Sl. No. 4 to 7 above		75.16	MT	US\$
9	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Turkey	Any country other than those subject to antidumping duties	Any	Any	75.16	MT	US\$
10	283620	Disodium Carbonate (Soda ash)	Any country other than those subject to antidumping duties	Turkey	Any	Any	75.16	MT	US\$

105. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

106. An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

J. S. DEEPAK, Designated Authority